

# कथा सरवरी

## भाग २

(हिमाचल प्रदेश के कांगडा, चम्बा, मण्डी तथा बिलासपुर क्षेत्रों की कुछ चुनी हुई लोक-कथाओं का संकलन)

मुख्य सम्पादक

—ताल चन्द प्रार्थी

सम्पादक-मण्डल

—हरिचन्द पराशर

—मौलू राम ठाकुर

—डा० बंशी राम शर्मा

—विद्या शर्मा



**हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी,  
परी महल, शिमला-9**

प्रकाशक : सचिव,  
हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी,  
परीमहल, शिमला-171009

प्रथम संस्करण : 1977  
1,000 प्रतियां

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : दो रुपये पचास पैसे मात्र

प्राप्ति स्थान : हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी,  
परीमहल, शिमला-171009.

मुद्रक : उपनियन्त्रक,  
मुद्रण तथा लेखन सामग्री,  
हिमाचल प्रदेश, शिमला-3





## प्राक्कथन

पहाड़ी लोक कथा भाग-2 हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी की ग्रन्थ माला में आठवां पुष्प है।

वर्ष के किसी बड़े तोड़े (लुठित हिमपुंज) में वर्ष के इलावा कितनी शिलाएँ, पेड़, पीधे, पशु साथ में ढेर हुए पड़े हैं, यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता। परन्तु वह हिमपुंज कुछ अदृश्य रूप से चालित होता है, कुछ क्षरित होता रहता है, कुछ नीचे भूमि में गिरता है, कुछ ऊपर पसीजता है। लोककथा भी हिमपुंज की मानिंद है उसमें देवगाथा, पुराण कथा, इतिहास, वार्ता आदि के कई तत्व समाए रहते हैं और सब से बड़ कर है—उमका गल्प और आख्यायिका तत्व जिनका कथक्कड़ी रस उसे साहित्य क्षेत्र की परिधि में घेर कर ले आता है।

हिमाचल प्रदेश में आदि काल से विभिन्न जाति-समूहों का मेल जोन रहा है, अतः यहाँ का लोक साहित्य विविध और विभिन्न है। लोक साहित्य में ये लोककथा सर्वाधिक व्यापक रूप है क्योंकि इस के मुनाने वाला यत्र-तत्र परिव्रतन कर लेता है तथा उसकी अपनी साहित्यिक कल्पना कथा मुनाने मुनाने कार्यशील रहती है।

‘बडुक्का’ (बहुकथा—सर्गन सागर) भारतीय लोककथाओं का ऐसा भण्डार है जो समय समय पर भारतीय भाषाओं के ग्रन्थ साहित्य को सामग्री प्रदान करता रहा है, साथ ही उसमें तत्कालीन भाषा-रूपों का ज्ञान होता है और उस समय की भाषाओं के ग्रामर लिखने में मदद मिलती है।

पहाड़ी भाषा और साहित्य की इस विकास वेला में लोककथाओं से एक साथ दो वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है, साहित्य के लिए कथानकों का ताना बाना और भाषा के ठेठ रूप। हमारा प्रयत्न है कि पहाड़ी लोककथाओं की सरवरी को ग्रन्थ साहित्य के लेखकों को निरन्तर उपलब्ध कराने रहें। इस का पहला भाग हिमाचल प्रदेश के मध्यवर्ती क्षेत्रों—सिरमौर, शिमला कुल्लू के सम्बन्ध में है और दूसरा भाग चम्बा, कांगड़ा, मण्डी व बिलासपुर क्षेत्रों से सम्बन्धित है।

मुझे आशा है कि यह पुस्तक माला उपयोगी गिद्ध होगी और पाठक इस प्रयास को पसन्द करेंगे।

लाल चन्द प्रार्थी,

भाषा एवं संस्कृति मन्त्री, हि० प्र०

तथा

अध्यक्ष,

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी,

परीमहल, शिमला-9।

## भूमिका

जो प्रदेश जितने विभिन्न प्रकार के जनपदों से बना हो वह लोक कथाओं में उतनी ही विभिन्नता रखता है। लोक कथा मानव इतिहास के उस चरण की उपलब्धि है जब वह अपने से बाहर के संसार को और विराट प्रकृति को भावात्मक दृष्टि से देखता था और उसे अप्रयोज्य इकाई (अनयुटेलाइजेबल होल) समझता था। लोककथाओं में कल्पना का फन्तासी रूप किसी अदृष्ट घटना को मनचाहे ढंग से चित्रित करता है, इस लिए सामान्य जनों में प्रभावी ढंग से भाषा प्रयोग करने वाले कुछ एक ऐसे व्यक्ति अवश्य होते हैं जो गल्प में रस घोल सकते हैं। हमारे प्राचीन साहित्य में उल्लेख है कि लेखकों की परम्परा ने भारत के आदिवासियों में प्रचलित सवा लाख कथाओं का संकलन किया था और कथा सरितसागर में उन में से अधिकांश सुरक्षित है। भारत के कथा-साहित्य को उन कथाओं ने प्रचुर मात्रा में प्रभावित किया है।

हिमाचल प्रदेश में विभिन्न जाति-समूह और सांस्कृतिक समुदायों का आरम्भ से ही मिलन होता रहा है। विभिन्न वसु यहां आपस में मिल जुल कर जनपद बनाते रहे हैं और आपस में मेल जोल के कारण उनकी गल्प में लेन देन होता रहा है। सदियों की इस रेलपेल से जो लोककथाएं आजकल सुनने सुनाने में मिलती हैं उनके अन्तर्गत कथावस्तु में अनेक सांस्कृतिक रुढ़ियां (कल्चरल मोटिफ्स) हैं जिनका अध्ययन सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से किया जा सकता है। हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी ने प्रदेश की लोककथाओं के संकलन की एक विज्ञान योजना बनाई है, इस के अन्तर्गत प्रथम प्रयास के रूप में दो पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं। प्रथम भाग में कुल्लू, महासू और सिरमौर की लोककथाएं संकलित हैं और दूसरे भाग में चम्बा, कांगड़ा, मण्डी, तथा बिलासपुर की कुछ एक लोककथाएं एकत्रित हैं।

इन कथाओं से जहां प्रदेश के मौखिक गल्प-साहित्य का अनुमान लगेगा वहां इन क्षेत्रों की कथा-भाषा के सहज रूप के उदाहरण भी उपलब्ध होंगे।

अकादमी के सभी प्रकाशनों के कार्य की प्रगति में अकादमी के अध्यक्ष श्री लाल चन्द प्रार्थी जी निकटता और निष्ठा से रुचि लेते हैं। वह अकादमी की गतिविधियों के महाप्राण हैं।

हमें आशा है कि इसी श्रृंखला में हम शीघ्र ही किन्नौर और लाहुल स्पिति की कुछ लोककथाओं के हिन्दी रूपान्तर को पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर पायेंगे।

हरिश्चन्द्र पराशर,

सचिव,

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी,

परीमहल, शिमला-9

# कथा सरवरी—२

## विषय सूची

लोक कथा	लेखक	पृष्ठ संख्या
1. घटोहरेरी देवी बैलैकरेरी	—अमर सिंह रणपतिया	1
2. गुम्मा कारीगर	"	3
3. प्रीली वाली देवी	"	5
4. परख	—हरि प्रसाद सुमन	7
5. सत भेणा दी कथा	—आत्मा राम	8
6. सीह-सत्तै	—शेष अवस्थी	11
7. सून केसी	"	14
8. बाश्यां घ्याइयां दे प्योकिये	"	22
9. ग्वाल टीला	—श्रींकार लाल भारद्वाज	27
10. सौतिह डाह	—स्वर्णलता महाजन	29
11. चढ़िया दी कुल्ह	"	31
12. पुट्ट दी कथा	—बी० आर० भारद्वाज	34
13. चार अनमोल गल्लां	"	41
14. अक्लबन्द नूह	"	46
15. सुतेला पुत	—रूप शर्मा निर्दोष	49
16. अपणा अपणा भाग	"	51
17. सच्ची साधना	"	53
18. गोकर्ण होर धुन्दकारा	—देव राज शर्मा	57
19. नटराजा रा खेहू ल	"	59
20. लालची मन्त्री होर नाई	"	63
21. पम्मा नड्डा	—रूप शर्मा	69
22. बन्दरा री चलाकी	—कांशी राम पठानिया	72
23. खो ठग	"	74
24. इक पैसे कने ब्याह	"	78



## घटोहरेरी देवी बैलकरेरी

—अमरसिंह रणपत्तिया

पुराणे समय घटोहरेरे इंद-गिंद एक बड़ा भयंकर अते डिरोणा जंगल थु । अज बी ओ जंगल घट डरीणा न हा । ओस जंगला मंझ रागस रेहु करदे धिए । ओ लोका जो तंज बी करंदे धिए । एक रोजेरी गल हा जे दो मणुह एक रई रे बूटे जो कटी करी उसेरे तगते बणांदे धिए । उइए किछ तगते कडी थी रलूरे अते किछ कठना लौरे धिए । तिऐ तगते मंझ दग पांडने ताई कोई फसाई अते कुरहाडी री कोई जो फटा बगाई । तिआ जो किछ छड़ पुणाई दिनी । तिऐ समझ जे कोई जंगली जीव आ भोला अते ओ खड़े भुची करी चौहो कनारे हेरणा लगे । से कै हेरंदे जे दो रागसणी खड़ी हिन । उआरे बड़े बड़े पराल धिए अते चुच्चु पिटी पिच्छे सटूर थी । ओ खड़ी भुची गई कने तिआ मणुह जो बोलणा लगी “अयु तुमु जो खाणा !” से डरे न अते बोलणा लगे “तु खा बसक अणता एक गल इंधी बी मन”, ओ बोलणा लगी—“कै गल ?”

बड़े आदमी बड़ी रागसणी जो बोले—“इस दग्गा जो पोडाई दे तां मुंजो खाए ।” ओ मनी गई अते उनी तगते रे अन्दर हथ पऊ । जिहू बी उनी हथ पऊ उनी मणसुए दग्गा थंड कोई छिक्की नेई अते रागसणी रा हथ ओम मंझ फनी गो अते ओ कौटा मारना लम्बी । ओ मणुह खड़ाके मारने लगा । दुई रागसणी पिटी पिच्छे त हेरू अते सिद्धी न्ही गई । अबे रागसणी मिणता करने लगनी । “छदे मुंजो छड़ी दे, छदे मुंजो छड़ी दे ।”

तिनी मणहुए बोले—“अबे मुं तुज्जो खाणा न ता तु मुंजो मिते बचन ले ।”

“हां अऊं बचन दिनु तु मेरी जान बगस ।”

“ता तु मु सिते बैह करली ।”

“करली ।” उनी रागसणी बोले पर एक सरत हा”

“कै ?” मणहुए पुच्छ ।

“अऊं तुज्जो सिते सारी उमर गल न करली पर तेरे घरे लाड़ी रे रूपा मंझ जरूर रहली”

“खरी” ! उनी मणहुए बोले ।

अबे उस जो छड़ी दिता अते ओ लाड़ा लाड़ी रे रूपा मंझ रहणा लगे अते काफी समा बित्ती गो । अबे उआरे घरे बाल-बच्चा बी भोई गो । ओ अबे सारा घरेरा कम करंदी । बगड़ी मंझ कम करंदी । अणणे चुच्चु जो अणणी पिटी पिच्छे सट्टी रखदी । बच्चे चुच्चु पीदे रहंदे । उनी अज ताई कसी मणहु सिते गल न करी थी । उस जो पता थु जे उनी कसी मणहु सिते गल करी तां ओ अणणी रागसी तागत जो सोई बैधली अते साधारण मणहुरे रूपा मंझ चली इल्ली अते अणणी सारी जादुभरी तागता थऊं खाली

पूणी गालही ओ हर बारहुएं साले हैणीरे पाले जो गंधी अते हैणी जो पल्ले पुजाई करी अते अपणी जीत मसी करी बड़े गरबा सिते भिरी घरे बापस इंदी ।

अबे भिरी उसेरा हैणीरा पाला थु उनी हैण पुजाणे गराहा थु पर लाड़े सोचु जे अज ओस थहु गल जरूर कराणी । ओस जो सारी गल्लेरा पता न थु के गल करने पर उसेरी सगती गंधी रहणी । उनी लाड़े एक धिऊएरी धिघड़ी भरी करी चुल्ले पुड़ी रखी अते अग लाई दित्ती । रागसणी अपणी तियारी करू करंदी थी । उनी हेरू जे धिउ ता उफणी गो अते अजक्के सिते उनी अपणे लाई जो हक दित्ती "धिउ उफणी गो ।"

बस उनी अज असागते गल करी अते अबे उसेरे लाड़ेरी जीत भोई गई पर ओस जो ए पता न थु कि एस जीता पिच्चे उसेरी लड़ी री एक बड़ी हार हा अते उस हारे रे कारण अबे उसेरा जीवन खतरे मंस पैई गो ।

अबे उनी अपणी सारी सगती खोई दित्ती थी । ओस जो अबे पता लगी गो जे हैणी जो थल्ले ताई पुजाणा अते घरे जीदे ईणा अबे उसेरे बसेरा रोग न थु । ओ अबे पछताई अत रोई बी । अबे ओ हैणीरे रे पाले चली पर सदा बासते जुदा हुणा चांहदी थी । उनी अपणे बाल-बच्चे सिते बी गल-बात करी अते लाड़े जो पदु अते बोली—"ए दुद्धेरी कटोरी रखी अते एदिया जाली करी रखु अते अउं हैणीरे पाले चली जो अबे अऊं मरी गई ता दिया वुझी गाराहा अते दुद्धा खूना करी लाल भुची गणह जो इहा भुहा ता समझी लेणा जे अऊं मरी गई ।"

ओ चली गई । हैण पई । थोड़ी बेरा जो दिआ वुझी गो अते दुध खूना सिते ला भुची गो । अबे ओ मरी गई थी ।

अबे उसेरा संस्कार करना थु अते उसेरा मरीर तोपणा जरूरी थु । सब हैणीरी जगा गै । कै हेरंदे जे उसेरे बड़े-बड़े बाल बिखरूरे थिए । उसेरा मरीर न मुलु ।

अबे उसेरा मंदर बणाउ अते उम जो देवी मन्नु । अज बी घटोहर बाले ओस देवी जो अपणी कुलज मनन्दे । उसेरी संतान सुंदर, गोरी, छैल अते तागतवर हा ।

लोका जो बिसवास हा जो हर बारहवें साले हैण पैणोरी गीरह पुणाई दिदी अते जो कोई उसेरे कुलेरा आदमी ओ मरंदा ता बच्चे-बच्चे करी रुंदी पुणाई दिदी ।

अज ओ बलैकरेरी देवी रे रूपा करी मसहूर हा ।

#### शब्द

कोई  
पुणाई  
पराल  
इंधी  
कौच  
हैणीरे  
धिघड़ी

#### अर्थ

लकड़ी की बनाई गई एक छिणी ।  
मुनाई  
बाल  
हमारी  
चीख  
पहाड़ से बर्फ की बाढ़ फिसलना  
पी काढ़ने का मिट्टी का बर्तन ।

## गुग्गा कारीगर

—अमर सिंह रजपतिया

पुराणे सभेरी गल हा। उतासा एक रणोन थी। राणेरा बड़ा बोन बाना थु। एक रोज राणे जो ब्याल आ जे ओस जो एक महल बणाणा चहीदां जे बड़ा बधिया भोआ अते लोक ओस महला जो हेरी करी टच्च भुज्जी गाहन। ओ भोआ बी आणे अनोखी बनावटे रा। ऐस महला सा ही कमीरा महल न भूणा चहीदा।

भियाग भुई अते राणा अण्णी सेजा थऊं उठू। बाहर गो अते ओ अण्णे पुराणे बेहदेरी दाई हेरना लग्गा। ओ ता अवे पुराणा भुची चुकूरा थु अवे ता ओ एक अनोखा बेहड़ा बणवाणा चाहंदा थु जिमेरे चीह कनारे अगोखे भन। राणे आ पणे बगाक् पदे अते हुकम दित्ता जे ओ इदेहा कारीगिर तोपन जे स मेरा सुंदर बेड़ा बणाए मे. महल अनोखा भोआ। बगरा चहु कनारे दीडे। एक ओ मंज गैतां ओ क हेरंदे जे एक कारीगिर किसेरके घरेरा कम करंदा थु। ओ कारीगिर बी अनोखा थु उमेरी चिणारी साही किसेरी बी चिणारी न थी अते उमेरे लकड़ीरे कसा साही किसेरा कम न थु। सभनीरा कम ओस थऊं उत्तरी करी थु। ओ ओस जो राणे गळ लई गै अते राणेरे साम्हणे पेस करी दित्ता। राणे उसेरे कम्मेरी परख करी अते ओस जो एक अनोखा महल बणाणे रा हुकम दित्ता।

गुग्गे अण्णा कम सुरु करी दित्ता। मुंह मंगा समान ओस जो मुलंदा गो। कई बगरा उसेरी सौगी कम्म करने लाई दिने। ओ महल उमारंदा गो। एक थऊं एक नमूना पेस कर। दिन बिते राता बित्ती अवे बेड़ा लगभग तयार भाई गो। महल गै थु एक नौई चीज थी। इदेहा नमूना कुनी बी न थु हेरूरा। जेहडा बी हेरंदा उमेरी हाखी चट्ट भुची गांधी। सारे रजवाड़े मंज राणेरे महलेरी चरचा भूणा लग्गी। सारे लोक इची इची करी ओस महलेरी तारीफ करने लग्गे। गुग्गेरा बी मतारा चढ़ी गो। ओ अवे सोचंदा जे उस जो कै इनाम मिलंदा पर अवे राणेरा दमाग फिरी गो। ओ सोचंदा जे गुग्गे जो इनाम दी करी भेजी दित्ता ता उनी चली गाहणा अते मुच्ची सकंदा ओ कमी होर राजे या राणेरा महल बणाए ता मेरे महलेरी कै कोमन। अवे ओ चिंदा मंज पैई गो अते उसेरे दमागा मंज फतूर पैदा भुआ जे अवे किल्ल उपा जरूर करता। उनी एक रोज गुग्गे जो पद्दू अते उमेरा एक हथ बढी दित्ता। अवे गुग्गा बचारा नकम्मा भाई गो अते ओ नरास भुची करी चली गो।

एक रोज गुग्गे जो सुपना पैउ जे ओ जे सगती देवी छतराढ़ी रा मंदर बणाए तां सगती उसेरे हत्था जो साबत करी देली। तिनी अवे भाई लई जे ओह अवे जरूर देवी रा देहरा बणांला।

उनी देवरे देहेरा कम एकी हत्ये करी करना सुरु करी दित्ता। धीरे-धीरे उनी देहरा पूरा करी दित्ता। देहरा लकड़ी रा बणाउ जे सदा अण्णे गिदं घुमंदा रहंदा देवी वृद्धी अते उसेरा हथ साबत करी दित्ता।

પર ગુગ્ગા અબે જાદા જીળા ન ચાહંદા થુ । ઁની ંપળી આલરી રૂચ્છા પૂરી કરી લઈ  
 જે ંગવતીરા મંદર તયાર કરી દિતા જેહઠા શિત્પ કલા મંજ ંપળા ંનોલા નમૂના  
 થુ । અબે ઁસેરા હય બી લગી ગો પર અબે ંો ંડ અન્યાયી સંસારા મંજ ન રહના ચાહંદા  
 થુ । અબે ંો ંગવતીરે સવાં કિસેરે કમ્મે ન રૂના ચાહંદા થુ । અતે બોલંદે જે ઁની  
 દેહરેરી છતા થઁ છાલ લેઈ અતે ંગવતીરી સરજ મંજ મરી ગો । ંો મરી કરી બી ંમર  
 ંૂચી ગો । ઁસેરી મૂતં બઁાઈ કરી દેવીરે મંદરા મંજ રલી ગઈ ।

શબ્દ

અર્થ

બધિયા

બઢિયા

કસીરા

કિસીકા

મિયાગ

મ્રમાત

બેહઠા

મહલ

ષદે

બુલાં

ચિળારી

ચનાઈ

રૂદેહા

ંસા

ઁપા

ઁપાં

નૂટી

મ્રસજ હુઈ

## प्रौली वाली देवी

—अमर सिंह रणपतिया

गल बड़ी पुरानी हा। छतराड़ी एक जंगल थु। जंगला मंम किता दूर दूर रागस रहंदे थी या कहें कहें देवता रहंदे थिए। अज्जेरा छतराड़ी आं बड़े पिच्चे बस्मु। पुराणा आं ता मड़ी थु। मेड़ी ना एक ो घर थिए। छतराी देवतेरा बामा थु अते तिड़ी सत देवी बहणा रहंदी थी। से सारी रली मिली करी रहंदी थी। उइयां मंम बड़ा प्रेम भाव थु।

बगत गुजरंदा गो। दिन बित्ते, राता बित्ती। अवे ओ सारी ज्ञान होई गई। उइयां मंम बखीणरी भावना पैदा भुई। एक रोज ओ गिट्टी भई अते सराह करी जे अवे अपनी धन दौलत बंडी लैदी। उइयां गल्ल मुन्ना क्ले रुपा। बड़ा थु अते बंडणा किहां करी। तिण सनाह करी जे आं थाऊं त्रकड़ी मंगइया अते सागी थाउं छोटी बहणा जो हुकम दिता—“तु ना अते मेड़ी गिनी करी त्रकड़ी ले आ अणता झट गच्छे।”

छोटी बहणे तिम्रारी गल पँरे मल्ये मन्नी अते न्हपंदी मेड़ी पुज्जी। ओ घरेरे अन्दर गेइ ता के हेरंदी जे एक बुड्डी छाह थी छलंदी। उनी ओस बुड्डी जो बोलु—“त्रकड़ी चहीदी।”

ओ बुड्डी उमेरी दाई हेरंदी रैही भिरी बोली—“कुलिए अऊ ता छाह हा छलंदी अवे कं करली—”

कुली बोलु—“छाह अऊं छलंदी तु त्रकड़ी तोप —”

से जनानी त्रकड़ी तोपणा लगी। थोड़ी बेर ओ त्रकड़ी तोपंदी रही। भिरी ओ ओस कुली गेल्ल आई जे छाह किदे ही छली भोली ओ सियाणी औरत ता के हेरंदी जे नुणी ता चुपड़ोतीरे मेकरा सिते भरी गई। अवे ओ समझी गई जे ए कुली था कोई देवी हा। अवे ओ लालचा जो परई गई। कुली देहीं छलणा लाई रखी अते अप्पु त्रकड़ी तोपणेरा बहाना करंदी रही। जां ओ कुली छाह छल्ली बैठी तां उनी ओस जो त्रकड़ी दिती।

दुए कनारे से छी बहणा छोटी बहणा जो भालंदी रही। घड़ी घड़ी उटेकी करी हेरंदी जे से निककी बहण किना आई भोली। बड़ी बंरा ताई भालु अते अवे उइए बिना त्रकड़ी रे धन दौलत बंडी लैई। छोटी बहणा जो किछ न रहु।

छोटी बहण बी दोईदी-दोईदी त्रकड़ी लैई करी पूजो पर धन दौलत ता छी बहण अप्पु मंम बंडी थी चुकूरी। निककी बहणा जो अवे रूपेरे सुधाए किछ न थु। से अवे रुणा लगी। रोई रोई रोजना लाई दिती। ओ अवे हड़दी गंधी थी अते

रूंदी गंधी थी। चलंदे-चलंदे जो कई देर लुढ़ी कने कई बेर घोस जो ठोकरा लग्गी। लुढ़ने अते ठोकरा करी उसेरा कई जगा रगत पेउ । जिड़ी जिड़ी रगतेरी बूदा पेई तिड़ी तिड़ी अज बी लाल चिक पुसंदी अते जिड़ी जिड़ी उसेरे रूणुरे टिप्पु पे तिड़ी तिड़ी सारी मिट्टी काली भोई गई। से काली अते लाल चिक अज बी मंदरा रे चौहु किनारे फैलहूरी हा।

जां ओ बड़ी रौ करंदी थी तां घोस जो गणेश मूलु अते तिनी दलासा दित्ता तां से चुप्प भुई तां उसेरी यादगारा ताई एक मंदर बणाउ से अज ताई बी तिड़ी हा अते 'प्रौली वाली भगवती रा मन्दिर' करी मन्ना गंधा ।

से सत बैहणा सत जगा बस्तीं अते मन्दर बणे । से बहणा हिन ।

सगती देवी छतराड़ी, चम्बे चौड, चुराह बैखाली, कांगड़े भवानी, लाहुल मिरकुला, भरमौर लखणा, अते प्रौली वाली भगवती छतराड़ी ।

शब्द	अर्थ
थु	था
किता	या तो
कहें	कहीं
बस्सु	बसा
अते	अतः और
उइयां	उन में
गो	गया
मंझ	में
भुई	हुई
रुप्या	चांदी
अणाता	लेकिन
न्हषदी	भागती हुई
दाई	की ओर
तोप	ढुंढना
चुपड़ातीरे	मक्खन
मैकरा	ढेले
सिते	के साथ
छी	छः
गंधी	जाती
रगत	खून
चिक	मिट्टी
पुसंदी	दीखती
मुस	मिला
हिन	हैं

## परख

—हरि प्रसाद सुखन

इक राजा थिया तिसरे दो जागत थिये । इक ब्राह्मण थिया तिसरे बी दो जागत थिये । तिन्हेरा अप्पु भिचे मेल होई गया । सै सभ गिट्टे खेलन्दे अते ईन्दे जान्दे थिये । राजे रे पुत्रे बोलेया जे मिजो पढ़ाई देया ब्राह्मणे बोलेया जे मै किह्या पढ़ाणा ह्मं बड़ा गरीब है ।

इक रोज तित्ते इक साधु आया । साधु कने ब्राह्मणे रे पुत्र बड़े प्रेमा कने मिले साधु ने गलाया जे ब्राह्मण तू इन्हां रजकौरां जो पढ़ाई दे । ब्राह्मणे गलाया जे हऊं ता बड़ा गरीब है तुसी पढ़ाई देया । तां साधु ने गलाया जे हऊं इन्हा दोहना जो पढ़ाई देला जे खरा पढ़ी जाल्ला से मै लेई लैणा दूघा तुसां जो देई देणा । साधु तिन्हां दोहनां जो लेई गया । पहले साधु ने तिन्हेरी परख करणा लाई दो घड़े तिन्हा जो देई दिते अते गलाया जे अगासे रा पाणी लेई ईणा । निकके जायते ने साफा बछाया अते तिस पर त्रैल बटोली करी घड़ा भरी लेया । बड़ा सारे तोपी रेहया पर तिसजो त्रैल नी मिल्ली । थोड़ी कर बून्दा लेई करि लेई चलेया तिति निकके जो पुछेया जे तैं पाणी किह्यां अन्दा? उनी गलाया जे साफा पीड़ि करि घड़ा भरेया । बड़े ने गलाया जे मै सभ बटे अम्बे घाह अम्बेया कोई बूंद घड़े अन्दर पेई कोई नी पेई ।

फिरी साधु ने तिन्हेरी दूई पुछयाण करणा लाई दो बकरे तिन्हा जो देई करि गलाया जे इन्हां जो दौह दिशा बखी लेई जा अते बिना अस्त्रे सस्त्रे इन्हां बकरे जो ऐसी जगा बढणा जित्ते कोई जीब-जन्तु मण्डु बण्डु न दिक्खो । हल्के ने जाई करि दिखेया जे जीब-जन्तु सभ दिक्खन्दे हिल्ल दिक्खन्दे दिक्खन्दे रात होई गई तारे निकली पे ।

बड़े ने कम्म कीता जे कुकड़ी विच बकरा लाई दिता बकरे ने तित्ते मुत्री दिता तिति पत्थरा कने बकरा मारेया अते उचोड़ी करि घरा जो लेई आया । साधु ने उसजो पुछेया जे तैं क्या कीता उनी सारी गल्ल दसी दित्ती ।

फिरि साधु ने हल्के जो पुछेया जे तैं क्या कीता । हल्के ने गलाया जे धियाड़ी जीब जन्तु, मण्डु बण्डु दिक्खन्दे थिये राती तारे दिक्खन्दे इधेरे ताई हऊं बकरे जो जीन्दा ई लेई आया तां साधु ने बड़े परसिल्ल होई करि हल्का पढ़ाणा लाया ।

शब्द	अर्थ
जागत	लड़के
मेल	मिलन
गिट्टे	इकट्ठे
ईन्दे जान्दे	आते जाते
रजकौरां	राजपुत्र
तोपी रेहया	बूबता रहा
पीड़ि करि	निचोड़ कर
अम्ब	आड़े

## सत्त भैणा दी कथा

—आत्मा राम

इक ब्राह्मण घरा च सत्त भैणां यियां । तिन्हा दी मां तां गुजरी थी रोइयी । मतेई कनें बापू जीदे ये । सैह घरा च नौ जणे ये । तिन्हा में इक गा थी सैह जे रोज नौ लहू करदी थी । सैह नौआं जो इक इक दे साहबे ने पूरे होई जांदे ये । इक दिना मां मतेइयां बोलिया तिता दे बापुए जो 'जे एह कुड़ियां नीं होण तां असां दे लहू सत्त बची सकदे' । इक दिन बरखा लगियो थी, बड़ी भारी । बापुए बोलिया कुड़ियां जो 'चलो बच्चा ! तुसां जो मामेयां दें छड़ी भौदा ।'

सैह छत्रोड़ भोडी ने तिन्हां जो लई गया । बड़ी दूर चली गए । तां इक्की रिड़िया पर तिन्नी तिन्हा जो बठाईता । छत्रोड़ तिन्हागें वेई ता । तिन्हां जो गलाया के जे छत्रोड़ रुकी जांगा, उड़ी जांगा, तां समझनों कि तुसां दा बापू रुकी मेया । सेह तेथी बँठी रेइयां । हवा ने छत्रोड़ उड़ी गया । तां सैह कुड़ियां बोलण 'भोह गया मेरा बापू, रुदा । भोह गया मेरा बापू रुदा' । उतांह माई लहू देणे बन्द करीते । फेरी तिन्हा भैणा जो इक तिल मिल्लेया । तिन्हे सैह सत्ती भैणी मिली ने खादेया । सारेयां ते छोटियां जो थोड़ी मुल रई गई । छीहं भैणी अणणे दंदा ते झूठ कहुी, तिसा जो दित्ती । सैह वी रज्जी गई । फेरि क्या होया, भई, तिन्हां जो इक बेजी मिल्ली । फेरि सैह मुणी थी ।

इक जगह बड़ी दूर भग मुसी बलियो । सारेयां ते बड़्ही भैण गई आग्री लयोणा । तेथी जाई घरा-आलिया जो बोली, "मासी ! मासी ! अमा दे" । सैह बोली "अ तेरा आसइ है वोहूही । उस ते लई ले ।" सैह बोहूडी गोभी । राकसे बढी-टुककी ने मुंडी अल्मारिया रखी ती । बड़ी देर होई तां दुई गई । कई में दिसां जई ने कि बोबो कैहं नहीं बापस आई । तिसा दा वी एह ई हाल होया इयां छे भैणां राकसे बड़ी बितियां ।

गई सतमी । सैह पुछणा लयी "मासी ! मासी ! एयु मेरियां छे भणां आईयां यियां?" मासियां बोलेया 'एथी नीं आइयां' । राकसणियां तिसा जो आटे बटणे जो गलाया । जाहलु सैह आटा छाबना लगी, तेथु इक चुप्पा आया । सह कुड़ी तिहजो नठाणा लगी । तां तिन्ई बोलेया "जे तू मिजो आटा खाणा दिगी तां मैं तिज्जो इक गल्ल बसगा ।" तिसे आटा खाणा ता । फिरी चुए बोलेया "तेरिवां छे भैणां जे आईयां भियां सैह इसा अल्मारिया च हन ।" फिरी तिसे अल्मारी बोली । भैणां यियां मुडियां तिसा च भियां । कई हासन । कई रोहन । तिन्हे मुडियां अणणिया भैणा जो बोलना "जे बचणा ए तां तोभा, प्रातका सब किछ समान लई ने नठी जा" ।



समान, लटरम-पटरम चुक्की ने सरसूट लगाई, नटी पई ।  
वास्ते राकसणी दोड़ी पई । अगौ कुड़ी कने पिच्छे राकसणी  
राकसणी तिसा जो चुक्की, घरे रखी ने फिरि जा, कुड़िया,  
दियां सारियां चीजां भुकी गइयां इक इक करी । फिरि अगौ  
इक रुख आया । इस च डोढ था । जान बचाणे जो सह कुड़ी तिसा च लुक्की गई ।  
डोढा ते इक ऊंगली—चीची—बाहर रई गई । राकसणि सैह चवाई लई । कने बोली,  
“सुआद तां तू बड़ी थी, पर चली ई गई ।” सह रुख राजे दा था । तिसजो बढणे वास्ते  
तरखाण आए । सैह कुड़ी डोढा ते बोली, भाखा लगाई:—

“भाइयो ! तरखाणो !  
ढक्का ते घडणों  
चूड़िया ते घडणों ।  
गब्बे ते कोरी कोरी कडणो ।”

तरखाण डरे भई कोई भूत-चूडेल है इस रुखा च बड़ेया । सह राजेग गए । सारी  
बारदात मुणाई । फिरि राजा सीगी आया । राजे की कुड़िया दी एह गलादी मुणैया ।  
तिसा ई रुखा जो बड़ेया । तरखाणे एह ई किता । ढक्का चूड़िया ते ता रुक बहोता ।  
गब्बे ते कोम्सा ने कोरी कोरी कड़ेया । तां रुखा ते इक बड़ी मोहणी छैन कुड़ी निकली ।  
सह राजे व्याई लई ।

दिन बीतदे गए । कई दिना बाद तिसा दै मृत्त होया । मुड़ए दा पंजाप करना था ।  
तिसे बोलया भई मै अणणा बापू बुलाणा । सदादा कुण जांगा? चिड़या ते पुच्छेया “मेरे  
प्योकियां दे जाई आंगी ?” तिसे गलाया “जाई आंगी ?” क्या बोलगी “बी ! बी ! बी !”  
फिरि कौआ जो पुच्छेया “जाहंगा ?” “हां ?” क्या बोलगा “कां ! कां ! कां !” इयां  
तिसे मतेयां पकमियां जो पुच्छेया । कोई ठीक मन्देम न दे । फिरि खीरे च कूकूण ते  
पुच्छेया । “तू क्या बोलगा ?” सह बोलया:—

“कूकू भाटा ! कूकू !  
सत्त भेणां पिदां, कूकू !  
छे राक्षसे खावियां, कूकू !  
सतमी राजे बचाई कूकू !  
उहबे लइका जाया, कूकू !  
उन्हे अणणा बाप सदाया, कूकू !  
अगू-टोपू मंगाया, कूकू !

मां-मतेइयां एह मुणैया “सह सब किछ समझी गई । सारा समान तिसे तयार कराया ।  
गठइए च बत्ती ने बापुए जो भीआगा भेजीता । बापू राजदरबार च पहुंची गया । तिहदा  
कुड़ियां खूब आदर सत्कार किता । माऊ वास्ते एक पटारी भराई ती जिस बिच सरप,  
धरमोड़ियां, रंगड़ बगैरा भरी ते । कनै बापुए ने स्नेया भेजेया के “नौहाई छोई ने मतेई  
किहनी ई इसा जो खोलै ।” बापू पटारिया जो घरे लई आया । जालू मां-मतेइया सारी  
गल्ल, सुणी, सोचया “इसा पटारिया च पता नहीं क्या क्या भरेया होगा ।” सैह बड़ी

खुसी थी । तिसै नोहई-धोई करि, ओबरिया, दुराजा बन्द करि के सह पटारी लोली ।  
फिर क्या ? मार सप्प धरमोड़ा, रंगड़े बगैरा तिसा जो सचणा लगे । सैह रड़ाई,  
“साहदी ! बाहमणा ! साहदी !” असम बाहर बैठेआ था । सोचै पटरिया च बबलू  
मुहालु होणे; कने सैह खा दी होणी । ताई इयांगला दी । सैह की जोरा नै गलाणा लग्या:—

**हऊं खाई आया, रडे । तू साह !**

सैह मतेई रोन्दी रई । सरपे, रंगड़े खाई छड़ी खीरे च आहमण दुराजा तोड़ेया, अन्दर  
ओबरिया गया । क्या दिविया, सै तां मरी पैदयो थी ।

#### शब्द

#### अर्थ

मतेई	बिमाता, मोतेली मां
छत्रोडू	छाता
रुडी गया	बह गया
बलियो	जली हुई
बढी दितियां	काट दीं
ढोढ	खोल
गढवे	बीच
कोरी	साबुत
छैल	मुन्दर
कुड़ी	लड़की
रड़ाई	चीखी

## सीह सतें

—शेव प्रबन्धी

कुसी जमाने दी गल्ल ऐ। भादरू म्हीने दे चानणे पकवे दिया भत्ती तित्थी घ्याड़ी इक्कि ग्राणं दे मते सारे गुआल रिद्धियां पर डगरां चाग करदे थे। तिन्हा सारेयां देयां मथ्यां मर कुगुए ता टिकका लमिहा था। अपण इक्कि गुआल दे मथ्यै टिकका नी था। होर सब गुआलू अपू चै खेनणः लगि पै। जिझा गुआलूए टिकका नी लाया था, सैह बी तिन्हां सोगी खेहलणा लग्गा ता होरनां बोल्या, “तू नी खल्हाणा अमां। तै मथ्ये टिकका नी लह्या” तिस बचारे जो चिम आई गई कनै सैह अपणे घरे जो हटि गिआ घरें तिस गुआलूए दी मां ई थी। तिन्नी माऊ ते पुच्छ्या, “अम्मां, होरनां मभनां गुआलूभा मथ्यै टिकका लह्या कनै तें मिजो टिकका कैहें नी लाइ दिहत्या था। मै मिजो नी खल्हा करदे।” तिसदिये माऊ बड़े प्यारे नै तिस दे मिरे पर हथ फेरया कनै बोलणा लग्गी, “बच्चा, तिन्हा मभना दिया बह्णीं तिन्हां जो टिकके लाहयां हुंगे। अजकै रोजे भैणी भाउआं जो टिकका लान्दियां।” तिन्नी माऊ ते पुच्छ्या, “मेरी वैह्ण नी ऐ कोई बी?” माऊ बोल्या, “बच्चा तेरी वैह्ण ता ऐ अपण सैह बड़ी दूर बिहाइयो।” सैह बोलणा लग्गा, “अम्मां, मै अपणिया वैह्णी वाल जाइ करि निया ते टिकका जरूर लुआणा। तू मिजो दस जे सैह कुथु ऐ?” मां देही तिस्यो समझाणा लग्गी, “मुअ, तिसा वाल जाणे ताएं बरा इक वण लंघणा पोन्दा। कनै तिज्जो ते किल्हे ते तित्थई नी जाइ होणा।” अपण सैह नी मन्या तिन्नी माऊ ते अपणिया बेल्णी दे घरें दी बस पुच्छी कनै ताहलू ई तित्थु जो, चलि पिआ।

सैह चलदा-चलदा बणे विच पुजि गिआ ता तिस्यो तित्थु मिरग-मोर कनै होर कइयां भांतीं दे जीव-जन्तु मिलणा लगि पै कनै सैह वचारा डरि गिआ। अपण फिरि बी तिन्नी हिम्मत नी हारी कनै अगै चलि ई रिहा। गांठ जन्दे जन्दे जो तिस्यो इक सैर मिलि पिआ। सहू गरड़ा करदा था। तिस मेरे दिया गरजा मुणि करि कनै तिस दिया नुहारि दिक्खि कर तिस बचारे दे घातु सइ गै। तिस्यो बमुग्राम होई गिआ जे मै हुण नी बचया। अपण ता बी सहू अगै बघदा ई रिहा। जां जे सेरें सैह दिया ता सहू तिस वाल आइ रिहा। गुआलूए दी पैहनै देहिया ता होस ई नेई नी रही अपण फिरि तिन्नी हिम्मत करि की सेरे जो बोल्या, “भाऊ, मिजो मत खान्दा, मै अपणिया वैह्णी वाल चलिहा ऐ।” सेरें गरजि करि बोल्या, “तू क्या बोल्हा करदा जे खान्दा मत? मिजो तां कइयां घ्याइया परत सकार मिल्ला। मै भुक्खै पेटु अपणें घरें आहयो सकारे जो छडि दिआ? मै ता तू जरूर खाइ जाणा कनै अपणी भुख बकाणी। तू वैह्णी छडि करि कुथी जो बी चलिहा होऐ।”....

तिन्नी मुण्डुगै दिहा जे हुण बचणा ता है ई नी। तिन्नी सेरे जो हत्थां जोड़ि कर गलाया, “अच्छा भाऊ, तू मिजो खाई जयां, अपण पैहनै मै अपणिया वैह्णी ते टिकका

लुआइ आन्दा । मिजो पर बसुआस कर । मैं जरूर हटि करि तिज्जो बाल आई जाहंगा ।” सेर बोलणा लग्गा, “तेरा क्या बसुआस तैं काहलु ओणा कि ओणा ई नी कनै मिजो ता लगि भूख ।” तिन्नी मुण्डुएँ सेरे जो वचन दिता हटि ओणे दा अपण सेरे जो बसुआस नी होया । तिन्नी बोल्या, “चल, मैं बी तिजो सोग्गी चलदा । अपण दिखयां तित्यू बड़ी हाण मत लान्दा ।” कनै सेरे तिस सोग्गी ई चलि पिआ । मुण्डुएँ बोल्या, “मैं मन्दलुए मुकणे ते पँहलें पँहलें हटि ओहंगा ।

जान्दे जान्दे सै बहणी दे घरे बाल पुजि गे ता तिन्नी मुण्डुएँ सेर घरे ते रुआह् देहिया ई इक्कि द्रिड़ि दे बूटे कनै बन्हि पाया कनै अप्पू बँहणी दे घरे जो चला गिआ । बँहणी देहिया जो पना लग्गा जे मेरा भाऊ अहया ता सैह फरलहोइ पई कनै झाबड़ी पाइ करि तिम नैं मिलणा लग्गी । तिन्नै भाउए ने माऊं दा मुखमान्त पुच्छया फिरि बोलणा लग्गी, “मिआ भाऊ, तू एड्डे घणे बणे चियै किलहा ई किहयां चला आया तिज्जो मिरगांमेरां दा डेर नी लग्गा? तिज्जो अज मेरी याद किहयां आइ गई।” तिसादे भाउएँ बोल्या, “बँहणी, तू झट कर कनै मिजो तमोल लाइ देह् । मैं सेरे जो वचन देई करि अहया जे मन्दलुए मुकणेते पँहलें पँहलें मैं तिज्जो बाल आई जाहंगा । नहीं ता सैह् ता मिजो ताहलू ई खाणा लगि पिहा था । अपण मैं टिक्का जरूर लुआणा था । इह्ने ताएँ सैह् बड़िया मुस्कला ने मनहया ।”

बहणी पुच्छया तिमने, “सैह् सेर कुल्यु ?” तिन्नी बोल्या, “मैह मिजो सोग्गी ई चला अहया कनै मैं तुयां दे घरे पचाहं इक्कि द्रिड़ि दे बूटे नैं तिस्यो बन्हि अहया । अपण तू झट करइ मिजो तमोल लाइ दे । तिन्नै बोल्या, “तैं तिस नैं मन्दलुए मुकणे ते पँहलें पुजणे जो गलहया न? मैं दिहा मन्दलू पाणा जेहड़ा मुक्के ई नी ।” कनै फिरि तिन्नै धोउए दा एक मन्दलू तित्यु पाइ दिता कनै निधि पर खड़ेरि करि तिस्यो तमोल लगाइ दिता।” फिरि तिन्नै मते सारे पकुआन पकाए कनै इक्कि उल्लाव पाइ करि भाउए देहे जो बोल्या, “चल, दस्स सैह् सेर कुल्यु ऐ । सै दोहयो कनै घरे दे होर माह्ण कनै तिस आएँ दे सब लोक पकुआनां दिया डल्ला चुक्कि करि सेरे बाल चलि पैं । गांह् सेर द्रिड़ि दे बूटे नैं बज्सेया कचालुए दे पतरे पर बँह्ठया था ।

तिस मुण्डुए बी बँहण गई । तिन्नै सेरे दी पूजा किली । तिमदे मत्थे पर टिक्का लगाया कनै सारे पकुआन तिसदे मुह् बाल खाणे जो थई दिस्ते । मेर तिन्हा पकुआनां खाणा लगि पिया । आएँ दे लोक तिस सेरे दे ताएँ बकरयां लइ आए । सेर सैं बी लाइ छड्डे फिरि सैह् मुण्डू सेरे बाल गिआ कनै लगया, “लँह भाऊ, मैं आइ गिआ । तू मिजो लाइ लँह् । मैं वचने दा बड़या तिज्जो बाल पुजि गिआ । तू बल्लि करि दिबल्ल लँह् जे हाल्ली मन्दलू नी सुहवया ।” सेरै बोल्या, “भाऊ, मेरा पेट पकुआनां कनै बकरयां न ई भरोइ गिआ । हुण मैं तू कजो खाणा । दुएँ पास्मैं तेरी यै बँहणी मिजो तमोल लाइ दिता । एह् मेरी बँहण बणि गई कनै तू मेरा भाऊ अपण इक्क कम करयां भई इस बणे चियै किलह दुकिन्ला मत ओन्दा-जान्दा । अज ता मैं तिज्जो अप्पू घरै छड्डी ओन्दा अपण गांह जो इसा गल्ला गट्टी बन्हि लँह् ।” तिस मुण्डुए बी बँहण बी खुसी होइ गई कनै तिस आएँ दे होर लोक बी । फिरि सैह् मुण्डू कनै सेर तित्यु ते चलि पैं । सेर

तिस्यो तिसदे घरे तिकर छड्डि गिम्मा । जां जे तिल्लीं अपणीया माऊ कनै एह् सारी गल्ल  
सणाई ता सैह् भचक्क रहि गई कनै तिल्लै सैह् अपणीया हिकका नै लाइ लिम्मा । तथेड़ी  
ते लइ करि तिस घ्याड़े दा नां सीह् सत्तै पइ गिम्मा कनै सब जणायां बिट्टियां अपण्यां  
भाउआं जो तमोल लागे ते पैह् जै कचालुए दे पतरे पर सीह् (मेर) पेड़ि करि कनै  
तिदै बक्खै द्रिड़ि दा बूटा रक्खी करि पूजणा लागि पइयां ।

शब्द	अर्थ
सोम्मी	साथ
माऊ	मां
मत्थै	माथे पर
बिहोइयो	शादी हुई
बत्त	रास्ता
गांह	आगे
नुहारि	शकल
सकार	शिकार
बसुआम	विश्राम
मुख-सान्त	कुशल क्षेम
तमोल	विशेष टीका
मुस्कला ने	कठिनाई से
पचाह	पीछे
थई दिन्ते	रग्य दिए
किल्हा दुकिल्हा	बिलकुल अकेला
भच	अनस्थान

## सून केसी

—शेष प्रबन्धी ।

इक था महुकार । तिसदे थे चार पुतर । तिन्हां चौही च बड्डे-बड्डे त्रै हो ता किछ न किछ कम कमान्दे रेहन्दे थे अपण लोहका दिहा किछ बी नी कमान्दा था । इहे ताएं सहुकार तिसते नरात्र रेहणा लगा । अपण माऊ दे मने दिया कुण बुझे । तिसा जो ता सै-मार ई इक्को देहे प्यारे थे । सैह् तिस्यो बी सैहा दिहा चाहन्दी थी जदिहा बडेयां ओहं पुतरां जो । तिन्ने इक रोज मी रूपये अपण लोहके देहे पुतरे जो दिते कनै बोल्या, "बच्चा, इन्हां ठउआ नै किछ बपार करि उरया ।"

सहुकार दा लोहका पुतर तिस सोए रूपये नै इक चूहा मुल्लै लइ आया । तिसदी मां तिस चूहे दिक्खि करि अपण मल्ले ठोरता लगि पई । तिन्नै बोल्या, "मिआ बच्चा, तू कंस लइ आया ? अच्छा जे लइ ई आया ता इस्यो नाजे दे भंडारे च छडि देह् । तित्थू एह ताजे खान्दा रहंगा ।" तिन्नी सैह् चूहा नाजे दे भंडारे च नी करि छड्या ता चूहा बोलणा लग्या, "भरा भाऊ, तैं ता बड़ा खरा किता अपण जाह्लू तिज्जो कोई ओखी पोहंगी ता मिजो पकारि लिआ ।" कनै फिरि चूहा नाजे दियां बोरियां च बाँडि गिआ ।

सहुकारतियै इक घ्याड़ा भिरि अपणे लोहके पुतरे जो सौ रूपया दिता । सैह् तिन्नी नै इक बिल्ली मुल्लै लइ आया । माऊ जो ता बी बड़ा दुख होया कनै सैह् बी तिन्ने तिसते अन्दर छडेरि दिती । बिलियै बी जान्दियै जान्दियै बोल्या, "भाऊ, कोई ओखी पोहंगी ता मिजो मदि लिआ ।" ओबरी माऊ तें रूपयां लइ करि सैह् इक तोता खरीदि करि लइ आया । माऊ दुखी होड करि सैह् बी छडुआइ दिता । अपण सैह् बी चूहे कनै बिल्लिया साही गलाई करि ई उड़या ।

चौथी बरी तिन्नी माऊ तें सौ रूपये नै कनै चलि पिआ । गाह्, इक मदारी मिल्ला तिस्यो । तिस बाल इक जबरा दिहा सपं था । महुकारे दे पुतर तिस सोए रूपये नै तिसते सैह् खरीदि लिआ कनै घरे जो हठि आया ।

घरै आइ करि माऊ सैह् सपं दिख्या ता तिसा दे कोहूटडे होइ गै जनि करि । तिन्ने सैह् ताहलू ई टहाइ दिता घरे तें । बोल्या, "इस सपे हुण ई बाहर दूर देहिया छडिड उरया ।" सैह् तिस सपे जो लइ गिआ कनै इक्कि ठाहरी घाए पर छडिड दिता । सपे बोल्या, "भरा भाऊ, इह्यां मत छड्डे मिजो । मेरे सरीरे च हुण जोर नी रिहा । मिजो तें तोलैं तोलैं हाण्डि नी हुन्दा । कुहत्की कां घटारियां ई मिजो

ठुगदिमां रैहणा । तू दिहा कर जे मिजो लड चल कर्ने जित्यू में गनाहगा तित्यू छड़ी दिमां ।

सहुकारे दा लोहका पुतर सपे जो चुक्कि करि लइ चल्या । इक्कि ठाहरी इक् बड़ी भारी बामी बता दे बक्खे ई थी । तिसा बामिया दे इक्कि बक्खे इक् बूड़ी देही झोर बी थी । सपे तित्यू तिस्यो बोल्या, "तू मिजो इत्यू छडि देह्, अपण मरिया पूछां जो पकड़ि ई रख्यां, छुडदा मत सहुकारे दे पुतरै सैह् सपे पूछा तें पकड़ि करि धरती छडि दिता कर्ने सपे बामिया दिया झोरि जो बड़ी गिमा कर्ने सैह् बी सपे सोम्मी ई झोरि च बड़ि करि बुन्हें जो लोहि गिमा ।

सै दोहयो लोहन्दे लोहन्दे बड़ी हेठ लोहि गै ता गाहं इक् सैहर आइ गिमा । सहुकारे दा पुतर तित्यू बड़ेयां बड़ेयां बाक्या सैहलां दिक्कि करि भचक्क रहि गिमा । तिन्नी दिख्या जे तिन्नी सपे बी अपणा कनुआ लुआहि दिता कर्ने अप्णू माहणू बाणि गिमा । तिन्नी सहुकारे दे पुतरै जो बोल्या, "चल मैं तिज्जो अपणे राजे वाल लइ चलदा ।" कर्ने सै दोहयो जणे सैहलां अन्दर बड़ि गै । अन्दर बड़ियां-बड़ियां मुच्छां वाला सर्पा दा राजा संघासणे पर बैहूठ्या था । माहणुए दे रूपे वालें सपे गाहं जाइ करि तिस राजे जो मत्याटेक्या । राजें बोल्या, "तू आइ गिमा भई ? मते रोज लाइ दिते तैं । क्या हाल रिहा तित्यू तेरा ?" सपे बोल्या, "महाराज, पुच्छा ई मत । मदारिये दे बने, पइ करि ता मेरी वाम ई नी रही । राजे पुच्छेया, "आ तिज्जो सोम्मी एह्, कुण ऐ ?" सपे बोल्या, "महाराज, एह्, इक्कि सहुकारे दा पुतर ऐ । कर्ने इसी ई मिजो तिस मदारिये ते मुल्लें लइ करि तिसते मेरी खल बचाई ।" राजे सहुकारे दा पुतर अप्णू बाल सदि करि बक्खे बिहानि लिमा कर्ने तिसदा बड़ा आदर-सत्कार किता । फिर सहुकारे दा पुतर तित्यू ई रैहणा लगी पिमा ।

तिस्यो तित्यू रैहन्दे जो मने घ्याड़े होइ गै ता सर्पा दे राजे जो तिस दा सभाव गमि गिमा । तिन्नी सोच्या, 'मेरी इको-इक थी ऐ जे इसा जो धरती दे मनुक्खे जो बिहोइ दिमां ता खरा रैहणा कर्ने मण्डू बी माडा नी ऐ । तिन्नी अपणे बजीर पुच्छे कर्ने अपणिया घिया दा न्याह्, सहुकारे दे पुतरै नै करि दिता । फिर बी सहुकारे दा पुतर तित्यू ई रैहन्दा रिहा । तिसदा ठाठ बाठ राज्यां वालां होइ गिमा । सर्पा दे राजे दी देह् बड़ी ई छल थी कर्ने तिसादे सिरे दे बाल बी सूने दे थे । सै दोहयो जणे खूब खुसी होई करि रैहन्दे थे ।

इक् घ्याड़ा तिन्नी अपणिया लाड़िया जो बोल्या, "अडिये, हुण भसां अपणे घरे जो बलि पोन्दे ।" तिन्नी बोल्या, "बापुए जो पुच्छि लैन्दे । जे सैह् भनि जाहगा ता बलि पोहगे । अपण इक् गल सुणी लैह् जे बापू तिज्जो ते पुच्छगा जे तुध कया लैगा, ता तू पँहलें तिस दे वचन लइ लिमां । जे बापू वचन देइ दिहगां ता तिस दे हत्थे दियया मुदरिया भगि लिमां ।"

तपेड़ी संघा सहुकारे दे पुतरें सोहरे वाल जाइ करि गायो, "महाराज, भिजो इस लोकने च आहूयो मते रोज होइ गै । हुण असां दोहयो अपने घरे जो बलि पोन्दे ।" सोहरें बोल्या, "तुम्हारी मर्जी जे बलिआ ई जाणा ता । अच्छा, तिज्जो जे किछ चाहिदा सैह मंगि लैह " सहुकारे दे पुतरें बोल्या, "महाराज, जे तुसां वचन देन ता मै किछ मंगा ।" सोहरें वचन देइ दिता ता तिली बोल्या, "महाराज, भिजो तुसां दे हत्ये दी मुंदरी चाहीदी, होर किछ नी ।" सर्पा दा राजा नट्टु होइ करि तिस बखी दिखणा लगि पिआ । कनै फिरि तिली अपने हत्ये मुंदरी खोहलि करि जुआइये जो देइ दिती कनै बोलणा लगा, "मै तिज्जो अपनी धी ई नी, अपना सर्वस देइ छडयागे । हुण तुसां दोहयो जणे धरती पर जाइ करि जिह्यां भरजी तिह्यां रिहा ।" दूणें रोजें भ्यागा ई तिली भरोइयां हाथी सै दाहूयो जणे विदा करि दिने । कनै सै धरती जो लोहि आए ।

धरती पर आइ करि सहुकारे दा पुतर अपने घरे जो चल्या ता तिस दिवै लाड़ियें बोल्या, "मै ता तिस घरे नी रहणा ।" सह वचारा चिन्दा च फसि गिआ जे तिस घरें नी रहणा ता असां कुथु रहणे कनै क्या खाहूंगे? तिस्रें बोल्या, तू चिन्दै मत ।" कनै तिसा मुंदरिया कडिड करि तिनै तिसा जो धूप दिता कनै बोल्या, जै परमसरिये मुंदरिये, इत्थू इक दिहा महल बणि जाए, जिस विच धरिस्ती दी भारी चीज बन्त होए ।" पलां-छिनां च ई तिल्यू इक बड़ा बांका महल बाणी गिआ कनै अन्दर रोजके बर्तणे दियां सारियां चीजां रखोइ गइयां । हुण सहुकारे दे पुतरें जो तिसा मुंदरिया दे चमत्कारे दा पता लगा कनै अपने सोहरे दी गल्ल बी समझोइ गई । फिरि मै दोहूयो मजे नै तिस मैहले च रहणा लगि प । तिन्हा जो जिसा बी चीजा दी जरूरत हुन्दी मैह तिसा मुंदरिया ते मंगि लन्दे थें ।

इक रोज सहुकारे दे पुतरें दी लाड़ी अपने महलने दे चबारे पर बहि करि सिरें पाहरना लगिहो थी ता तिसा दे मरे दे दो त्रै केस झड़ि करि उड़ि गै कनै मैहले दे बक्खें बगदिया नदिया च जाइ प । सै केस इक्की मछियें निगलि छड्डे । मैह मच्छी नदिया दे पाणिये च पता नी केड्डी की दूर लोहि गई कनै इक रोज इहकसी क्षीरे दे जाल्ले च फसि गई । तिली क्षीरें सह मच्छी होरना मछियां सोणी राजे जो देइ छल्ली । राजे दिआं नोकरां सैह मच्छी क्षीरी ता तिसा दे डिड डे च सूत्रे दे केस दिक्खि करि मै बस्म होइ गै । तिन्हां सै केस राजे वाल नी करि दुस्से । राजा सूत्रे दिआं केसां दिक्खि करि बकलोइ गिआ । सैह सोचणा लगा, 'जिसा जणासा दे केस ई सूत्रे दे हन सैह अपू केदेही छैन हुंगी । मैह ता मै जरूर दिखणी कनै अपने बेह डे पाणी ।' चिन्दि-चिन्दि करि तिली अप-पिया रियास्ती दिया सारियां दूतियां सदाइ लईयें कनै तिन्हां ते पुच्छ्या जे तुसां क्या-क्या कम करि सकदियां । तिन्हां सारियां दूतियां अपने-अपने करने जोगे काम दस्सि दिते । पिछए देहिया ते दो दूतियां रहियां । तिन्हां च इहकनी बोल्या, "महाराज, मै स्वर्ग छीडा पाइ सकदी ।" दूइय बोल्या, "महाराज, मै अम्बर च टल्ली पाइ सकदी ।"



राजें स्वर्गें छींटा पाणे वाली दूती किल्ली देही सदी कर्न तिसा जो बोल्या जे तू तिसा सूत्रे दिमां केसां बालियां जणासा जो तोपि करि लइ उरया । तिनैं बोल्या, महाराज, सूत्रे दिमां केसां वाली जणास ता अमा इक्को ई सुणिहो । कर्न सैह, पताले च सर्पा दे राजे दी दे ऐ । सैह, इत्थू किहां आइ गई हुंगी ? अपण मैं तिसाजो तोपणे दा जतन करदी ऐ । तुमां किछ नौकर कर्न डउए-पैसे मिजो बाल देइ दिमा । राजें तिहां ई कित्ता कर्न स्वर्गें छींटा पाणे वाली दूती सूत केसिया दिया तोप्या जो निकलि गई ।

तिनैं दूतियें पैहूले ता सै नौकर पुच्छे जिन्हें मच्छी चीहरियो थी जे निन्हां बान कुण झीर तिसा मछिया दे गिमा था । फिरि सैह, तिम झीरे बान जाइ रही । तिनैं झीरे ते पुच्छ्या, "तंजे राजे जो मछियां दितियां थियां स कुसा नदिया च पकड़ियां थियां ?" झीरें सैह, नदी दम्सि दिनी ता दूतियें फिरि पुच्छ्या, "मच्छी लुआहे दी थी कि कुआहे दी ?" झीरें बोल्या में जे मछियां पकड़ियां थियां सै लुआहे दियां थियां ।"

दूती तित्थू ते चलि गई कर्न जाइ करि तिनैं इक बेड़ी तयार करुआइ कर्न तिसा नदिया च उपरले पासे जो चलदी गई । बेड़ी रात-ध्याड़ी चलदी रही । जां जे इक्कि ठाहरी दूतियें नदिया दे बक्सैं ई एक मैहल दिख्या ता तिनैं बेड़ी तित्थू रुकवाइ दितो । तिनैं दोइयां जो बोल्या, "जाहनू तइयें मैं हटि करि नी ओहूंगी, तुमां इत्थू ई रह्यो ।" कर्न अप्पू सैह, बेड़िया ते उतरि करि निस मैहले दे पासे जो चलि पई । तिनैं रूआह-पराहं पुछ-मंग करि लई जे एहू मैहल कुसदा ऐ कर्न कदी बाणिहा । इस बिच कुण-कुण रहन्दा । इस दी मान जी कदेही ऐ ? जां जे तिनैं एहू सुण्या जे इत्थू रहणे वाली जणासा बड़ी ई छैल ऐ कर्न तिसा दे बाल सूत्रेदे बसोन्दे ता तिसा जो बसुआस होइ गिमा जे सैह, पताले दे राजे दी दे सूत केसी ई ऐ ।

सैह, तिसा म्हेलिया अन्दर चलि गई । ताहनू सूत केमिया दा घरे वाला तित्थू नी था कर्न सैह, किल्ली ई थी । दूतियें जान्दियें ई तिसा ते पुच्छ्या, "सणाह, बो मिये भाणजिये, तू इत्थू किहां आइ रही ?" सैह, तिसो जो पुछ दी पुछ दी तिसा दे छलपे दिखि करि हरैन बी होआ री थी अपण तिसा जो पैहूले ई बसुआस होइ गिमा था जे एहू सूत केसी ई ऐ । सूत केसियें बोल्या, "तू कद की मेरी मासी चलि आई ? मेरी ता कोई मासी ई नी ऐ ।" दूतियें बोल्या, तिज्जो नी ना पता । जदी मैं पताल लोकके ते कोहि आई थी तदी तू निक्की देही थी कर्ने फिरि मैं बुन्हे जो लोहती ई नी । इसा घरती जोगा ई होइ गई । तू तित्थू दा हाल-चाल सणाहा तिज्जो दिखि करि मैं ता एहें बुज्जा करदी जे मैं अपणिया बैहूणी दे घरें पुजि गहियो । पताल लोक सचमुच पताल लोक ई ऐ अपण इसा घरती जो कोहि करि इत्थू ते बी नी खिस्कि हुन । सूत-केसिये पताल लोकके दी गल्ल सुणी ता तिसा जो बसुआस होइ गिमा जे एहू जबरी पताल लोके ते ई आहियो कदकी कन मैं जे इन्नै पखैणी लई ता एहू मेरी मासी

ही हूंगी । तिनै अपने अपने दो सारी कथा तिसा दुतिया जो सणाइ दित्ती जे सभा जो सहुकारे दा पुत्तर घरे जो आया ता तिनै तिसनै बी गलाइ दित्ता मेरी मासी आहियो । फिरि दूती तित्यू ई टिकि पई ।

सूनकेसिया पर तिसा दूतिया दा जाइ खरा पुड़ि गिम्मा कनै सैह तिनहां दिम्मा सारयां भेदां होलै-होलै कढ़ान्दी रही । तिसा जो ए बी पता लगी गिम्मा जे एहू दोहूयो जणे मुंदरिया तेई ई सब कुछ मगदे कनै सैह जे मंगिये सैह देह दिन्दी । दूतियां जो सहुकारे दे मुण्डए दा पताले जो जाने ते पैहूले दा बी सारा पता लगि गिम्मा कनै चूहे बिल्लिया कनै तोतै जे वचन तिस्यो दित्या सैह बी तिसा जो पता लगि गिम्मा ।

इक ध्याड़ा जालू सहुकारे दा पुत्तर घरै नी था ता दुतियै सून केसिया जो गलाया, “चलमिये मुनिये, असां हंडि-फिरि ता ओन्दियां । अन्दर रहि-रहि करि बी महणू अक्कि जान्दा । सून केसी तयार होई गई कनै सैह दोहूयो चलि पइयां । दूती अगणियां पणोहां जो अन्दर ई छड़िइ आहियो थी । थोहूड़ी देही दूर जाइ करि तिनै बोल्या, “मेरी बी मत मरोइ गहियो । मैं नंग्यां पैरां ई चलि आई कनै पाणिहां घर ई रहि गइयां । मैं झटपट तिनहां पाई ओन्दी । सून केसियै बोल्या, “मैं लई ओन्दी मासी ।” अपण दूती नी मन्नी कनै सैह” झटपट खिट मरि करि चलि गई । सून केसी तित्यू ई खड़ोइ रही । दूतिया जो पता था जे मुंदरिया जो कुत्तु रखदे । तिनै जाइ करि सैह चुकी कनै पणिहां पैरै पाइ करि पला-खिलां च हटि आई । फिरि सै दोहूयो नदिया दे बड़ई पुजि गइयां । तित्यू द्रैई बोड़िया जो प्जो बड़ई लाइ करि बँहइयो थे । दुतियै सून केसी फणसेरी कनै बोल्या, “चल आड़िये, अज असां बेड़िया पर बहि करि बी सैल करि लेन्दिया । तिनै सैह बेड़िया पर बिहानी कनै द्रैइयां जो सनक देह कपरि बेड़ी दइआइ दित्ती । जांजे बेड़ी नदिया च छंडउएँ पर करि बुहलै पासे जो लोहन्दी गई ता सून केसी डरि गई । तिसा जो पता लगि गिम्मा जे इन्नै जबरियै मिजो नै छल किता कनै हुण कुहनकी जो लइ चलि हो । सैह सोंन्जे जे मैं नदिया च छाल ई देई दिम्मां ता नदिया च पाणी बड़ा भारी ऐ । हारि फारिकरी सैहू बेड़िया च बहि रही कनै दूतिया जो बुरा-भला गलान्दी रही । अपण दूतिया दा तातका-बजा ई होर होइ गिहा था । सैह कड़कि करि बोलणा लगी, “डोल बही रह । मैं तू मारना नी चलाहियो ।” सून केसी बचारी चुप होइ गई । तिसा जो इक आस थी जे सहुकारे दे पुत्रे जो जाहलू पता लगणाए ता तिसी मुंदरिया जो गलाइ करि नै मैं अप्पू बाल सहुआइ लेणी ऐ । तिसा जो क्या पता था जे जबरी मुंदरिया बी कड़ि करि लइ आहियो ।

जां जे सैहू बेड़ी तिस राजे दिया रियास्ती च पुजि गई ता दूतियै सून केसी बेड़िया ते लुआही कनै नौकरा-बाकरां बाल पकड़आई करि राजे दे बेहई पुजाइ बित्ती कनै राजे बाल सम्हालि दित्ती । तिनै राजे ते मता सारा धन लिम्मा कनै राजे बी बड़िया खुसियान सैहू तिसा जो देह करि सैहू बिदा किता । दूतियै मुंदरिया दी गलल कुसी जो नी बस्ती कनै अपने घरे जो चली गई ।

राजें सून केसी अपणें बहई दिक्की ता तिस्यो ता एह बजोया जे मिजो सारे स्वर्गे दा मुख मिलि गिआ । तिन्नी सैह् दिहा रूप न दिह्य्या था न सुणिहा था । सैह् सून केसिया दे छलैये जो ई दिखदा रहे । अपण तिस्यो तिसा नै गलाणे दी हिम्मत न पोए । फिर तिन्नी हिम्मत करि की बोल्या, "सून केसी तू उरा कजो करदी । तू इन्हां मैह्लां दी राणीऐ । मिजो तू जे गलाहगी, मैं सब किछ करने जो त्यार बैहठ्या । मेरे बड़े भाग हन जे तू मेरे मैहले च आई ।" पैहले ता सून केसी चुप-चणत्ती बहि रही फिर तिन्नी बोल्या, "राजा, तू मेरे गलाए मुजब करने जो त्यार ऐ ता सुण सैह् जबरी मिजो नै छल करि की मिजो इत्यु जो लइ आहियो । मेरी इक सर्त तिज्जो मनणा पोहंगी ।" राजें बोल्या "तेरिया इक्कि सर्त छडिड करि मैं सौ सर्ती मनणे जो त्यार ऐ । तू बोल ता मही ।" सूनकेसिये बोल्या, "सर्त एह ऐ जे छे म्हीने तू मिजो नै हथ नी लाहगां कन तिसते परन्त जे तेरी मरजी हुगी सैह् करयां ।" राजे जो तिसादी एह् सर्त मनणा पई कन तिसा जो बसुआस था जे मुंदड़िया ता मैं अट अपणें चरे पजाइ ई देणी ऐ ।

ओयू सहकारे दा पुत्तर घरे जो आया ता गाहं सून केसी नी थी । तिन्नी बुझ्या कुह्तकी गहियो हुंगे, आइ जाणा तिन्नी । अपण निहालि-निहालि करि सैह् संभा तिकर बी नी हटी ता तिस्यो बिन्द लगि पई । तिन्नी सोच्या मुंदड़िया जो गलान्दा सैह् तिसा जो आणि पजाहंगी । अपण मुंदड़ी तोषी ता सारे मैहले च तिस्यो मुन्दड़ी नी मिली । ता सैह् बचाग बड़ा ई तड़फ्या । करे बी ता क्या करे । तिन्नी एह् बी सोच्य्या जे तिसा दी मामी आहियो थी, मैं कुह्तकी पताल लोकके जो ई ता नी लइ हुंगी तिसा जो । जे दिहा-दिहा होया हुंगा ता सैह् फिर नी आई ।" इन्नी दाये सोचदा-सोचदा सैह् जिकिया खट्टा पड गिआ कन चूहे, बिलिया कन तोते जो याद करना लगि पोआ । सै बौहो ताहलू ई तिस दे गांह् आइ खडोत्ते ता सैह् बोलणा लगा, मितरो, "मितरो, मैं ता भरोइ गिआ । मेरिया सून केसिया जो कोहकी लइ गिआ । जे तुसां ते किछ बणदा ऐ तां तिसा दा पता करा अहता तिसा मुंदड़िया ई लइ ओआ ता मैं तिसा ते सदुआइ लहगा । नहीं ता मैं मरि जाणा । मेरे जीणें दा हुण कोई लाभ नी ।" इतणा की तिन्नी गलाया कन मुछल होद करि पड गिआ ।

सै बौहो तिस दिया इसा दसा दिक्कि करि अपू जै गलाणा लग्गे, "जे सून केसी नी आई ता इन्नीं मरि जाणा ।" इडे ताएं तिन्हां एह् सलाह किन्ती जे सून-केसी कुयु ऐ इडा पता तोता चौहि पास्यो उडि-उडि करि करि ओए कन सैह् एह् बी दिक्कि ओए जे सैह् मुंदड़ी कुयु ऐ । फिर बौहो कठोरीई करि तिन्हां जो आणने दा जतन करये ।

तोता ताहलू ई उडि गिआ कन चौहि कनारयां जाइ करि हटया ता तिन्नी तिन्हां दुही जो दसि दिसा जे सून केसी ता फलाणे राजे दे बेहड़े च ऐ अपण मुंदड़ी मैं इक्कि जबरिया दे हत्ये दिहवियो । सैह् सूनकेसिया दे हत्ये नी ऐ । चूहा कन बिल्ली तोते दे दस्यो ठकाणे पर जबरिया तोषणा चलि प । सै तिसा

जबरिया दे घरें बड़ि गै कनै राखी हुन्दिया निहालदे रहूँ । तोता बाहर कुहसकी रुकले दिया डालिया पर बहि गिहा था । जाँ जे रात होई कनै जबरौ अपणे बखणे च सोणा लगि पई ता तिस्रै हत्ये ते मुंदड़ी सोहड़ी कनै मुहँ पाइ लई । चूहा कनै बिल्ली दोहूँयो दिखा करदे थे । तिस्रौ बिल्लिया दे कभे च गलया, "जे जबरिया दे मुहँ ते मुंदड़ी टिहरगी ता तू झट चुक्कि करि न्हि जायाँ ।" फिर सै दोहूँयो जबरिया दे सरहणे वाल जाई रहूँ कनै चूहँ होलै-होलै अपणी लीपणी जबरिया दे नकके च पाइ दिती । जबरिया जो छिक भाई गई कनै मुन्दड़ी तिसा दे मुहँ ते टिरि पई । बिल्ली ता ताक्का बहठियो ई थी । तिस्रै झट मुंदड़ी चुककी कनै न्हि गई । पचाहूँ ते चूहा बी बाहरे जो चला आया कनै जबरौ अच्छीह-अच्छीह करदी ई रही ।

तिन्हां जो बाहर मोन्दयाँ दिक्खि करि तोता बी तिन्हां वाल भाई रिहा । तिन्हां दुहीं तोते जो बोल्या, "भाई तोल्या, म्हारी बत्त धरती बिचै ऐ कनै बिच नदी बी ऐ । तू दिहा कर भई इसा मुन्दड़िया मुहँ पाइ करि लइ चल । अपण दिखया कुहत्क ट्री-ट्री मत करि वंहदा ।" तोतै सैह मुंदड़ी मुहँ पाई कनै ताहलू ई उड़ि चल्या । ताहलू तइयै म्हाग बी होइ गहियो थी । तोता मास उड़दा जादा था । अपण जाहलू सैह नदियाँ उपरें लंघणा लगा । ताहलू ई तोत्याँ दा इक उड़ार ट्री-ट्री करदा तिचियै लंघया । तोते ते बी ट्री-ट्री होइ गई तिन्हां सोगी कनै मुन्दड़ी नदिया च पड़ गई । तोता होला होइ करि बहि गिआ इक्कि डालुए कर कनै तिन्हां दूहीं जो निहानता लगि पिआ ।

जाहलू चूहा कनै बिल्ली भाइ गै ता तोतै दुखी होइ करि सारी गल सणाइ दिती तिन्हां जो । तिन्हां बोल्या, "हुण मुन्दड़ी नी मिल्लो कनै सहुकारे दा पुत्तर बी नी बचया ।" फिर चूहा बड़िया हाणा तिकर सोचदा रिहा कनै फिरि बोलणा लगा, "अच्छा डरा मत, मै जतन करि दिखदा ऐ ।" तिस्रौ मते सारे चूहे कठेरि अन्दे कनै तिन्हां जो बोल्या, "तुसां धरती दूडों पाइ-पाइ करि इसा नदिया दे बाहे जो घेरि दिआ ।" चूहे लगि पै मस्केरां देणा । नदिया दा पाणी दूडुई दे वास्ते जो घिरि गिआ कनै दूएँ पाससै नदी सुकि गई । बिल्ली सुकिया नदिया च मछियां बड़ि-बड़ि करि तिन्हां दिमां पेटा दिखणा लगि पई जे कुनै देहियै मछियै सैह मुंदड़ी निगलिहो हुंगी । मछियां कठरोदयां । तिन्हां बिल्लियो जो बोल्या, "मासी, अमां सारियां जो मत मारें । असां अप्पू ई दसि दिन्दिया जे मुंदड़ी कुनै मछियै निगालिहो ।" कनै तिन्हां सैह मच्छी बिल्लिया जो दसि दिती । बिल्लियै तिसा मछिया दा पेट चीरया कनै मुंदड़ी कड़ि लई । फिर । सै त्रेहो भिरि कण्ठे पर भाइ करि सलाह् करना लगि पै ।

मुंदड़िया ते मछिया दी मुस्क मोआ करदी थी । तिन्हां सैह खरी की घोली कनै पधरे पर सुकणा रखि दिती । तितणे च ई उपरे ते इक इल्लाण पई कनै तिसा जो लैन्दी गई । 'हुण क्या करना? सै भिरि बिन्दा च पई गै । चूहँ बिल्लिया जो बोल्या, "मासी, तू चतनगी परताया, दिहा न होए जे मै मरोइ जाँ ।" इलणी जो

मिजो पर पोन्दिया ई तू तिसा जो बडि दिया ।” कनं चूहा तिस ई पथरे पर पुठठा होइ करि लम्मा पइ गिम्मा । उपरे ते इल्लणी चूहा दिक्का कनं सैहू तिस पथरे पर पई तदेही बिल्लियै सैहू जिक्कि लई । चूहा झट सिद्धा होइ करि बक्कै हटि गिम्मा कनं बिल्लियै इल्लणी जो चो चीरि करि तिसा दे डिडडे ते मुंदड़ी कडिड करि तोत्ते बाल देइ दितो ।

तोता मुंदड़िया लइ करि गास उड़दा रिहा कनं हेठ बिल्ली कनं चूहा चलि रहै, सैहू, त्रैहो किट्टे ई सहुकारे दे पुत्तरे बाल पुजि गै कनं तिन्हां मुंदड़ी तिस बाल सप्पहलि दित्ती । तिन्हीं चौका पाइ करि मुंदड़ी तिथी पर रक्खी कनं तिसा जो धूप देइ करि बोलणा लग्गा, जै परमेसरिये मुंदड़िये, मेरी सून केमी मुखे सहलै हण ई इत्थु जो झाडजाए ।” ताहुलु ई मून केमी तिथू पुजि पई । तिन्हां जो एह पता लगा जे मुंदड़िया बी सैहू दूती लइ गहियो थी कनं तिसा जो प्राणने दे ताए चूहे, बिल्लिया कनं तोत्ते जो क्या-क्या करना पिम्मा ता सैहू दोहयो जणे हरैन रहि गए । तिन्हा चूहे, बिल्लिया कनं तोत्ते दी बड़ी भारी खातर किन्ती फिरि सैहू विदा किन्ते कनं भ्रपू बी सैहू मुखे नै रहण लगि पै । फिरि तिन्हां कदी कुमी नै मुंदड़िया दी गल्ल नी दस्सी न सैहू, इह्छां कुयी रक्खी कनं ना ई कोई पखला माहणू नडोणा दित्ता ।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
त्रीहं	तीनो	मुंदरिया	भ्रगूठी को
मत्थंठोरना	शोक मनाने लगी	रोहि आए	चढ़ आए
लग्गी		सिरे पाहरना	बाल सवारने
लोहके	छोटे	बकलोई गया	उलझ गया
सद्धि लिम्मा	बुला लिया	जणास	घोरत
भ्रोखी	कठिनाई	रुआहं पराहं	इधर उधर
पकारि लिम्मां	बुला लेना	वमुभ्राम	विश्वास
छडेरि दित्ती	छोड़ दी	होलै-होलै	धीरे धीरे
टहाई दित्ता	वापिस किया	खिट मारि करि	दौड़ लगा कर
तोले-तोले	जल्दी जल्दी	हारि फारि करि	अन्ततः
डण्डि	चलना	चौहि कनारयां	चारों ओर
घटारियां	चिड़ियां	हुड्डीं	सुरंग या बिल
दुंगदियां	चौब मारना	कण्ठे	किनारे
लोहि गिया	उतर गया	पाखला	अजनबी
छैल	मुन्दर		

## ढाड़या ध्याड़यां दे प्योकिये

—जेब अकलपी

कुसी आएँ च इक विधवा जाणास थी कनै इक थी तिसा दी कुमारी थी । सै बड़ियां गरीब यियां कनै मिहल्ल-भुड़ी करि की दूहं बक्तां जोगी हक्की सुककी रोटी जोड़ि लैन्दियां यियां ।

इक्क बहिया दी गल्ल ऐ जे कात्ती महीनै पंज-भीलमां दे ब्रत लगे ता कुन्हकी पड़ेसिणीं तिन्हां दूहीं माऊ-धिया जो दो टिककड़ घणाइ करि देणा लाइ पाए । पड़े-सण इक टिककड़ बड्डा पकान्दी थी कनै इक छोट्टा, अण्णू बखुमा माऊ जो बड्डा कनै धिया जो छोट्टा । अण्ण मा अण्णू छोट्टे टिककड़े खाइ लैन्दी थी कनै बड्डे देहे जो धिया जो देइ दिन्दी थी ।

इक ध्याड़ा मां कुहूतकी मिहल्ला भुड़िया जो गहियो थी कनै पड़ेसण धिया वाल ई दुही टिकड़ा देइ गई । धिया जो भुल्ल लगि हो थी । तिसै सोचया मै इहत इक टिककड़ खाइ लैन्दी कनै दुए अण्णमां जो रैहण दिन्दी । अण्ण अण्णमां खिजि करि अण्णा, अज तिसा जो बड्डे देहे टिककड़े रैहण दिन्दी कनै छोट्टे अण्णू खाइ लैन्दी । "एह, बिन्दि करि धियै लौहू का दिहा टिककड़ अण्णू खाइ लिअ कनै बड्डा दिहा अण्णिया माऊ जो यइ छड़या ।

मा घरे जो आई ता धियै सैहू टिककड़ तिसा जो देइ दित्ता । मा बोलणा, लग्गी, " धिये, अज ता तिन्हां बड़े-बड़े टिककड़ पका हयो । " धियै बोल्या, " अण्णमां, टिककड़ ता बड़े-बड़े नी टिककड़ रोज्जे साही ई पकाहयो ये तिन्हां । अण्ण मिजो भुल्ल लगि पहियो थी कन मै छोट्टा दिहा टिककड़ अण्णू खाइ लिअ ताहू स ई कनै बड्डा दिहा तिज्जे रैहणा दिहत्या । " माऊ इतणा की मुनया ता बोलणा लग्गी, " तै मेरा टिककड़ कैहू खाहवा ? मै सैहू ई टिककड़ लेणा मेरे टिककड़े देहू । " थी तिसा जो समझाणा, लग्गी " अड़िये अण्णमां, तू रोज ई बड़े टिककड़े मिजो देइ करि अण्णू छोट्टे देहे खान्दी थी । अज मै सोचवा जे अण्णमां बकि करि अण्णा, मै तिसा जो बड़े देहे टिककड़े रहणा दिन्दी । मेरा गजारा छोट्टे देहे नै ई होइ गिहा । तू इस लाई लैहू । " अण्णमा कुबु मन्ने । सहू, बोल्ले, " मेरे टिककड़े देहू । मै सैहू ई टिककड़ लेणा । " धिये सैहू भतेरी समझाई अण्ण माऊ देहिया जो इको ई भणी होई गई, " धिये, मेरे टिककड़े देहू, धिये; मेरे टिककड़े देहू । " तर्षेई सारी रात मा इहयां ई गलान्दी रही । न सैहू अण्णू मुती न धिया जो निन्दर पोणा दित्ती । भ्याग होई गई ता थी सैहू धिया पचांह पचांह बलि रही कनै ' धिये मेरे टिककड़े देहू ' गलान्दी रही । माऊ दिया इसा डोल्ला दिक्खि करि थी अति दुखी होइ गई

कनै घरे ते न्हटि गई। अपण मा बी 'घिये मेरे टिकड़े देह' गलान्दी-गलान्दी तिसा पचाह होइ गई।

बी न्हठदी-न्हठदी इक्कि बणे जा पुजि गई अपण मांऊ तिसदा पिच्चा नी छह्या कनै पचाह पचाह दोड़दी रही कनै 'घिये मेरे टिकड़े देह' गलान्दी रही। इक्कि ठाहरी चिये दिह्या जे इक्कि रुक्ले च ढोड़ ऐ कनै तिन्नी हटि पचाह नजर फेरी ता तिसा दी मा पचरोइ करि भई रहि गहियो थी। सैह् सटपट तिस ढोड़ु च लुक्कि बैठी। मा तिसा जो तोपदी तोपदी तिस रुक्ले ते गांह निकलि गई तां घिया जो किछु चैन पई अपण सह् तिस ढोड़ु ते इस डरे दी असैं बाहर नी निकनी जे मा भिरि हटि करि तिसा जो दिक्कि न लै।

बी ढोड़ु च बैह्ठियो ई थी ता तिन्नी चिये हड़े खेलदा इक राजा निकलया। तिस सोगगी मते सारे नौकर चाकर चलेहो थे। कुन्हीं नौकरे ढोड़ु च बैह्ठियो सैह् बिट्टी दिक्कि लई ता तिन्नी जाइ करि राजे नै गलाइ दिता। राजा तिस रुक्ले बाल भ्राइ रिहा कनै ढोड़ु च बैह्ठियो बिट्टी दिक्की ता सैह् तिसा दे छनैपे दिक्कि करि मोहत होइ गिया। तिन्नी तिसा ते पुच्छया, "तू कुण ऐ कनै इस ढोड़ु च कजो बैह्ठियो?" बिट्टियां डरदिये-डरदिये बोल्या, "मैं भुलदी-भुलदी इस बणे च भ्राइ रहियो कनै तुसां दे भोणे दे रोले सुणि करि डरे दी इस ढोड़ु च लुक्कि बैह्ठियो।" "तू कुसदी कुड़ी ऐ कनै कुयु जो चलि हो थी?" राजे फिरि पुच्छया तिसा ते ता सैह् बोलणा लग्गी "मिजो नी पता जे मैं कुसदी कुड़ी ऐ। मेरे मा-बब्ब मिजो लोह् किये हुन्दिये ई गरि गये हुयें।" राजे सैह् ढोड़ु ते बाहर सदी कनै अप्पुसोग्गी तिसा जो अपणे मैहले जो लई गिया कनै अपणी राणी बणाई लई। सैह् राणी बणि करि बड़े ठाडे बाठे नै रैह्या लयि पई। तिन्नी सोच्या, जे हुण माऊं ते प्राण बचे हन, नहीं ता तिन्नी मैजीणा नी देणी थी। फिरि राजा-राणी दोह्यो मीजा-मस्तियां च होई गै कनै तिसा जो माउ बी याद बी भुलि गई।

इक घ्याड़ा राजे दे बेहड़े दियां झीरीयां बोड़िया ते पाणी भरि करि लई भ्राइयां ता तिन्नां राणियां नै गलया, "असां भज बोड़िया पर इक भतोरड़ जबरी दिक्की, तिन्नी इक्को ई राणी लाहियो थी जे 'घिये मेरे टिकड़े देह, घिये मेरे टिकड़े देह'।" राणियां दिआं पैरां चल्ले ते घरत खसकोणा लगि पई। तिसा जो डर लगिपिया जे हुण ता इत्थू बी सारयां जे पता लगि जाणा, ता क्या हुंमा? तिन्नी चिन्दी-चिन्दी करि इक ढंग सोच्या। झीरीयां तित्थू ते चलियां गइयां ता तिन्नी आपणी इक नकरेणी मढी कनै तिसा जो बोल्या, "बोड़िया बाल इक भतोरड़ देहो जणास ऐ। तू दिहा कम कर जे तिसा जो ठगि-ठगि करि कुहत की निर्जण देहिया ठाहरी जो लइ जाह कनै तित्थू तिसादे सेंडे बडि करि मिजो बाल लई उरया। मैं तिज्जो मता सारा घन दिहंगी। अपण दिखयां कुनी त्रिये माहणुऐ जो इसा गल्ला दा पता न लग्गे।" लोभ घापे दा मूल हुन्दा सैह् क्या नी करान्दा? नकरणी मनि गई कनै चलि पई ता राणिये ताहलु बी किछु सून्ने-पान्दिये दे गैह्जे तिसा जो कड़ि दिते कनै फिरि गाया जे होरसी कुसी जो पता न लग्गे नहीं ता मुऐ खल भरोइ जाहंगी।

नकरैणी ताहलू ई तित्यू ते चलि गई कनै पंजा-छीह धड़ियां परन्त तिसा भतोरड़ी दे मुण्डे बठि करि लइ झाई। राणियें तिसा जो अपणे गलाए भुजब मता सारा धन देह करि सैह तित्यू ते चलि दित्ती कनै अप्पू अपणिया माऊ दा मुंड इक्कि पटारूए च पाइ बिम्मा फिरि सैह पटारू अपणे सोणे वाले कमरे दे इक्कि ताकके पर चुक्कि रख्या।

भते की ध्याड़े होइ गै। तां इक रोज राजा तिसा दे कमरे च संझा देहिया दा माया ता तिस दी नजर ताकके परबै हो पटारूए पर पई गई। तिन्नी सरा की तिस पाससँ दिख्या ता तित्यू बसोया जे पटारूए च केहकी या कनै उटका करदा। राजें राणिया ते पुच्छ्या, “राणी, एह क्या होमा करदा? पटारूए च केहकी उटका करदा। क्या हुड़ि पह्या तैं इषी च?” राणियें बोल्या, “राजा, क्या हुड़ना चूहें हुंगे पटा च बड़ि गैहो।” राजे दा मन नी मन्या। तिन्नी ताकके ते पटारू उतारया कनै तिहा डकण घुमार्डि दिता। सैह दिक्कि करि हरैन होइ गिम्मा। तिस पटारूए च सून्ने दा इक मोर उटका करदा था। तिन्नी राणिया ते पुच्छ्या, “राणी, ए सून्ने दा मोर कुथु ते भन्दा तैं?” “तिन्ने बोल्या, “ए मेरयां प्योकियां देइ धल्या।” राजा बस्मै होइ करि राणिया बस्मै दिखणा लगा। फिरि तिन्नी बोल्या, “रानी’ तू ता मैं बणे ते भान्दिहो कनै त्याहड़ी तैं बी गलया था जे मेरे मा बाबू नी हन। हुण तेरे प्योकिये कुथु ते झाइ गै?” राणी लोलण लग्गी, “राजा, तर्बड़ी ता मैं डरि हो बी कनै डरेदा पता नीं क्या-क्या गलाइ दिहल्या मैं। भला तुसां सोच्चा जे मैं बाजसी प्योकियां ई हुंगी?” राजें बोल्या, “अच्छा, ता मैं तेरे प्योकिये जरूर दिखणे। जिन्हा तिज्जो दिहा-दिहा सून्ने दा मोर देई धल्या सँ कदेहे की हुंगे?” राणी भनि गई। तिन्ने बोल्या, “अच्छा मैं तुसां जो अपणयां प्योकियां दस्सि दिहंगी।”

तिन्हा ई ध्याड़या पज भीखमा दे व्रत लगि पै कनै राणी होरनां जणासां सोम्मी बँडिये दे झुडे पूजणा चलि गई। तिन्ने बँडिये जो पाणिये दा छिटा दिता, टिक्का, अच्छत, फुल्ल, दुभ, रुं, डोरी कनै लाल कपड़ा चढ़ाया कनै हत्थां जोड़ि करि मनै मन गालाणा लम्मी ता जे होरनां जो न सुमि जाए, “जे परमसरिये बरैडिये मिजो ढाई ध्याड़े प्योकिये देई करि मेरी लाज रक्खि लैह।” तर्बड़ी रास्ती राणिया जो सुपना होया जे बरैडिया ते इक दिवजोत कन्या निकली कनै राणिया जो गलाणा लग्गी, “राणी, तू राजे जो गलाई देह जे ‘उत्तरे दे पाससे जो सुतए बणे च मेरे प्योकिये हन, अपणे सारे लोए लस्करे जो लई करि तित्यू जो चलि पोह’। तित्यू सारा परबन्ध होणा ऐ। तुसां तित्यू ढाड़यां ध्याड़यां ते बस इक पल भर बी मत रहन्दे। कनै तू इसा गल्ला बी कुसी जो मत दसदी। नही ता तू ताहलू ई मरि जाहंगी।” एह गलाई करि सैह दिव जोत कन्या तिस बरैडिया दे झुडे च ई लुप्त होई गई कनै रानियां दी बी चपाट करदी हाथ खुलि गई। फिरदियां फिरदियां म्याग होई गई।

भ्याणा राजा न्होइ-भोइ बैठा ता राणियें बोल्या, “राजा, तुसां मेरयां प्योकियां दिखणे जो गलान्दे पे। ता अपणे लोए लस्करे लई करि चला, मैं तुसां जो अपणेयां प्योकियां दस्सि भाणदी।” राजा खुसी होई करि भनि गिम्मा। झटपट प्यारियां होई गइयां कनै सारे लोए लस्करे लइ करि राजा-राणी राणियां दिमां प्योकियां दिखणा बसि पै।



बलदयां-बलदयां तिन्हां छै बणा हण्डि छडे ता राजें पुच्छया "राणी तेरे प्योकिये केरी की दूर रहै हुण ? असां ता यकि गैहो । हुण नी चलिह हुन्दा ।" राणि बोल्या "बस, हुण ता सारी बत हाण्डि छडी । अगले बणे च मेरे प्योकिये हन । हुण चलिह करि तिल्लू ई बसोहणे ।"

जां जे राजा-राणी कनै होर लोभ्रा लस्कर सतुऐ बणे च पुजि गिम्मा ता राजा दिक्खि करि बस्मै रहि गिम्मा । तिल्लू बड़े-बड़े मैहल बणोहे थे कनै ज्हारां नौकर कामे कम कमा करदे थे । तिन्हां सभनां दी बड़ी भारी खातर लगि पई । राजे दा सारा खेज्जा उतरि गिम्मा तिल्लू पुजदे ई कनै सैह, अपणियां खातरा दिक्खि करि मस्त होई गिम्मा ।

तिन्हां जो तिल्लू अहायां दुआ ध्याइ होइ गिम्मा ता राणीयै हटि चलणे दी काहली लाइ पाई । राजा बोलणा लगा, "अइये, तिज्जो देही काहनी कजो लगिहो ? पैहनी बस्ता मै अपणायां सोहरियां नै अह्या कनै तू बी कइयां बहियां परन्त इत्थू आहियो । किछ ध्याइ इत्थ रहि करि हटि चल्हणे । अपणियां ई रियास्ती जो ता जाणा ऐ, नित इत्थू योहड़ी रैहणा ऐ ?" राणियें बोल्या, "राजा, मने ध्याइ कुयो बी नी रैहणा चाहीवा । बोलदें 'अज प्रोहणा, कल पच्छा कनै परसू घरे जो गच्छा ।' असां हुणि हटि ई चलणा । तुसां जो पचांह दा बी किछ ध्यान ऐ कि नी ?" राजा तिसा दे गलाए मन्नि गिम्मा ।

त्रियें रोज्जें म्यागां ई राजा लोए लक्सरे समैत तिल्लू ते चलि पिम्मा । राजे दा नाई बड़ा चंदरा था । तिन्हीं राजे दी पग कनै कपड़यां दी छड़ तिल्लू ई रैहणा दिती कनै अप्पु अपणियां गुछिया लटकाई करि चलि पिम्मा । जां जे सै चलदे-चलदे बड़ी दूर निकलि गै कनै दपहर बी होई गैहो थे ता नाइयें बोल्या, "महाराज, तुसां दी पग कनै कपड़यां दी छड़ ता तिल्लू ई रहि गई । मै हटि करि तिन्हां जो लई ओन्दा ऐ ।" राणीयें बोल्या "कपड़यां दिया छड़ा जो कनै पग्मा जो आणने दे ताएं एड़ी दूरे जो हटि जाणा ? दिम्मा रैहणा ।" अपण नाई नी मन्या कनै राजे बी तिल्लो इक घोड़ा देई दिता कनै बोल्या "असां मजै-मजै चलदे तू जाइ उरया ।"

नाई घोड़े पर चढ़या कनै पचांह जो हटि गिम्मा । कनै राणियां जो ध्रक फुकी लगि पई जे हुण क्या हुंगा ? जां जे नाई राणियां दिम्मा प्योकियां नै पुजि गिम्मा ता तिस क्या दिखणा ? सैह उलभुभुमां साही दिखणा लगा । तिल्लू न ता सै मैहल थे ना नौकर-चाकर न होर कोई माहलू न माहणुए वा बच्चा । चौही पास्यां जूठे पतलू पैहो थे कनै का कुत्ते तिन्हां पतलुमां दिया जूठी खा करदे थे । होर तिल्लू झुठे ई झुठे थे । अपणा राजे दी पग कनै कपड़यां दी छड़ तिल्लू ई रलोइयो थी । नाइयें सै दोहयां दा चुक्के कनै बौड़े पर बड़ि करि सैह राजे बल चलि पिया । तिन्हीं घोड़ा दडकाया कनै संसा हुन्दियां जो अपणियां रियास्ती च पुजि गिम्मा । ताहलू तइयें राजा-राणी कनै होर लोभ्रा लस्कर बी महलां च पुजि गिहा था । नाइयें राजे दी पग कनै कपड़यां दी छड़ राजे बाल सम्हालि दिती कनै बोलणा लगा, "महाराज, तुसां दिम्मां सोहरियां दे महल ता तिल्लू रैहो ई नी । जे तिल्लू ए दोहयो चीजां नी पहियां हुन्दियां ता ता एह पता बी नी लगणा था जे

सैह् सैहो ठाहर ऐ कि कोई होर ।" राजा बी बस्में होइ गिम्ना सुणि करि । सैह् राणियां ते पुच्छणा लगा, "राणी, सै क्या होया हुंगा ?" राणिये बोल्या, "राजा, मिजो क्या पता मै कनै तुसां ता सोम्मी ई तित्थू ते ले आह्यो ।" राजा गलाणा लग्गा, "नहीं राणी, तू मिजो सारे भेदे दस ।" राणी नांह करे अपण राजा अपणे हठे जो छडणे जो त्यार नी होया । हारि-फारि करि राणिये बोल्या, "राजा जे तुसां नी ई मनणां ता मै सुणाई दिन्दी, अपण" फिरि जीन्दी नी रहंगी ।" राजे बोल्यां, "तू चाही फिरि मरि जायां अपण मै इसा गल्ला दा भेद जरूर लेणा ।"

राणिये ठक्के ते लइ करि चूडियां तइयें अपणी सारी कथा राजे जो सणाई दित्ती । जदेही सैह् कथा सणाई बैठी तदेहे तिसा दे प्राण बी निकलि मै कनै सैह् घडम्म करि कि धरती लटोई पई । राजा कथा सुणि करि कनै राणियां दियां त्हासा दिक्खि करि नट्टा होइ गिम्ना । फिरि तिल्ली तिसा दा दाह कर्म करि दित्ता ।

### शब्द

क्रुहूतकी  
मिहत्ता  
यई छडया  
पचांह पचांह  
हेडे  
खसकोणा  
सुमि जाए  
बसोहयें  
काहली

### अर्थ

कहीं  
मेहनत  
रख छोड़ा  
पीछे पीछे  
शिकार  
खिसकने  
सुनाई दें  
बैठेंगे  
जल्दी

## ग्वाल टीला

—श्रीकार लाल भारद्वाज

ग्वाल टिलें ते हेठ बणिंयां स्माधि परालें भज भी ओणें जाणें आला मुसाफिर अपणी भट्टा दे फुल्लां दी भेंट चढाई ने फिरी अपणी लप्यां गांहां पुट्टी ने बता जो हंडणे लगी पौन्दा है। कई बरमां बीति जाणें पर भी इन्हियां बसुन्दा जाणे ऐ प्रेम स्माध हुणें ही बंगाई ने समाही होये।

बत्तरी रोज ग्वालू बणीं-ठणीं ने कमरा च बसरी जो लटकाई ने इन्हां खोलेयां च अपणीं भेडां होर बकरियां जो चारने लई अणदा था। माल खोलेयां च चरीने छाऊआं जुगाली करने बहन्दा कनें तांहां ग्वालू ऊंचे टिल्ले पर नैठी ने बसुरिया परालें शोभली-शोभली पहाडी धुनां, कडी ने बखेरना लगी पौन्दा था। तिसदी बसरी दी धुना जो सुणी के माहणू तां महाणू पर पंछीं भी रूकी जान्दे थे। सैह इन्हां खोलुआं दी दुनिया च मस्त रहन्दा था। न तां उम जो एक गुमान जे सैह इक दशणीक माहणू है।” पंचेवां दी छणछण तिसदी जिन्दगी च आई ने तिसदे दिला दे आखेयां च बहीं ने दिलां दी धड़कणां दे तरापेयां जो गिणनां चाहन्दी थी निम—कने भेडां होर बकरियां जो चुगाणा चाहन्दी थी। पर सैह तां अपने ही गोये दा मानस था कने अपने नजीबे धणां ने ही मस्त रहन्दा था।

तिस घ्याड़े भी ग्वालू, इस ऊंचे टिल्ले पर बही ने बसुरिया च छैन-छैन स्वर था कढादा। चाण चक ही तिस दे कनां च पीपणियां, होर डोलां दी धुनां टकराईयां। थोड़ी देरा परल तिस दियां हाखीं, पारलिया बता पर इक माहणुआं दा डुआर दिया उत्तरदा भालेया। माहणुआं ते गांहां करनाल, डोल, नगर, नरसिंगा, डफले होर पीपणीयां जो बजान्दे किछ बजन्तरी डोली कनें सुखपाल भी उत्तराईयां पेहो ये। इसा छेड़ा-छणका ने तिस दी बांसुरी दी आवाजा जो लुकाई लिया ग्वालू इक टक लाई ने वियाही श्रीन्दियां जनेती जो भालने लग्गेआ। पता नी कजा भज तिदियां हाखीं डोलिया च पड़ाया डाई नै बैठिया मूटियारा ने किछ गलाणा चाहा दिया थी, पर रेशमी झमणे ते तिस दियां हाखीं छुटकी जांदी थी। सैह मना चइन्हियां चिन्दणे लग्गेया, “ऐ कुण हुंमी भला? ऐ कदेयी हुंमी? इस जो मेरे आली श्रीणा पौणा।” इन्हां सोचां ते तिस जो ऐ भजोया जे “सैह तिसदी ग्वालुयें जोरा नें हूयां गलाया, “ऊआर बराडी पार बराडी लाले झमणे च मेरी लाडी।”

लाड़े ऐह सुणायां तां तिसजो पैरां च लग्गी कनें सिरे च लूेना निकलेया। तिन्हीं ग्वालू जो गुस्से ने गलाया, “जे एह तेरी लाडी है, तां भार छाल। लाड़े हो हाले गलाई समाह्या कनें ग्वालुयें छाल मारी दिती।

ग्वालू दी देह टिले बुट्टन हिचल होई फलाहा बणी शान्त होई गई। जनेतड़ कने लवहड़ रुकी गैय। तां डोली तेइ इक सुन्दरी उत्तरी कने तिन्हे बाहां च पहनेयां लाल झूड़ा भस्मी दित्ता, मल्ये दा सिन्दुर मेसी ता। मुटयार बाहां पाई ने रोजे-पिटणे लगी पई। ग्वालू दे देही त्याग दी गल्लां दी रूल चुफिदे पई गई। थोड़ो देरा च ग्वालू दे सक्के सम्बन्ध भाई गैय। तिन्हां चित्ता बणाई कने ग्वालू बी लोथा जो लाम्बू लाई दित्ता कने सैह मुटयार भी छाल मारी ने सती होई गई। दीयो भापू च मिली गैय कने प्यारा दी पवित्र अग्नि कुंड च तपी ने कुन्दण बणी इन्हां खोलेयां दी दुनिया च अमर होई गैय।

मैं भी ऐ लोक कथा सुणी कने हृत्थ जोड़ी ने सिद्धा खडोई गिया। मैं भापणी अड्डांजलि तिन्हां दुन्ना जो समर्पित करी दित्ती। मेरे हाथी ते भासुभां दी निर्जल झड़ी लगी पई। ऐ भासु गम्भियां दें नी, बल्कि खुशियां दे थे। कैह मैं सोचा दा बा करदा उस प्यारा दे बारे जेड़ा उन्हां दुब्री रुहां निभाया कने जेड़ी अज कला दी रुहां निभान्दियां।

ऐ स्थान म्हारे प्रदेशा च कांगड़ा घाटी दे पालमपुर क्षेत्र च, पालमपुर-भालमपुर सड़का दे बरुल्ले, झुलं कसबे ते ऐ ही कोई चार की किलोमीटर हूठलें पास हन। इस घटना जो विविध जनश्रुतियां दे अनुसार मता पुराणां मन्नीयां जान्दा है।

#### शब्द

लप्पा  
पुटी ने  
छाऊंभां  
गुमान  
चाणचक  
भाल्लया  
मुटियारां  
छाल  
लवहड़  
चुफिदे  
बरुल्ले

#### अर्थ

पग  
बड़ा कर  
छाया में  
अभियान  
अचानक  
देखा  
युवतियां  
छलांग  
दुल्हन की तरफ के व्यक्ति  
चारों ओर  
किनारें

## सौतिह डाह

—स्वर्ण लता महाजन

साढ़े बजुर्गों का गलाणा है कि जियां इकी भ्याने बिच दो तलबारी नी रही सकदियां तियां ही इकी घरे बिच दो सौकर्णी नी रही सकदियां चाहें सै सकियां भेणी ही कै नी होन। सै भपु पिछे लड़दियां ही रहदियां। एह लोक कथा भी इसी सौतिया डाह का एक भंश है :-

इक राजा था तिस दियां तिन राणियां थीयां। दुं राणियां ने तां सै बड़ा प्यार करदा था पर बड़ीया रानियां ने सै कदी कदायें ही बोलदा था। भगवान्ने दी लीला, तिसां जो दो जोड़ मुंडू जमें। तिन्हा दुं रानियां जो बड़ा दुख होया भई राजा कुतकी इसा रानियां जो हुण पटराणी ही नी बणाई दै कनें भसां जो बाहर निकलना पीए। तिन्हा अपणे अपणे भने बिच बुरे-बुरे विचार किते। ताहि ता बोल्दे—'भई सौकर्णी जाया कुन्हीं भाया।' अपणे सुखे बिच ही सुख है कनें अपणे खादयो ही भुख चुकदी। सै दोनों रानियां तिन्हा दुई बच्चयां जो मरवाने दे उपाये सोचणा लगियां।

तिन्हां दुई राणियां मिली ने इक बड़ा भजगर मंगाया कनें तिन्हां बच्चेयां दे बिस्तरे पर सुटभाई दिता। भगवाने दी लीला तिनो सपे तिन्हा मुंडुभां जो कुछ नि गलाया कनें जिस रस्ते ते आया था डोल मुडी ने चला गया। जाल तिन्हां रानियां मुंडुभां जो जिन्दा दिलया तां बड़ी दुःखी होइयां भई म्हारी स्कीम तां फेल होई गई।

पर तिन्हां अपणां जतन जारी ही रख्या। हुण से तिन्हां मुंडुभां जो मरवाने ताई होर उपाय सोचणां लगियां। तिन्हां दुई बच्चेयां जो दूर जंगले बिच छटबाई दिता। सैह बड़ीया खुश होइयां भई चलो साढ़े रस्ते वा कण्डां तां दूर होया।

होनियां जो कोई नी टाली सकदा। जालु प्रादमिये दे बुरे दिन प्रादे तां सै भगवाने ते बी नि डरदा। सै यह नी सोचदा भई जिस ओ भगवान स्तना चाहे तिस जो कोई नि भारी सकदा।

जंगले बिच तिन्हां मुंडुभां जो कि साधु चुकी ने अपनिया कुटियां बिच लई गया। सै बच्चे तिस साधुए दिया कुटिया बिच पलना लगे। इसा गल्ला दी चर्चा सारे शहरे बिच होणा लगी। तां लगा तिन्हा रानियां जो डर भई यह तां सै ही बच्चे हन। तिन्हां आपनियां दासियां बस्सा लहू भेजे जिस बिच जहर था पाया। तिन्हां मुंडुभां सै लहू खादे कनें खादयां ही तिन्हां दे प्राण निकली गे। जालु साधु कुटिया बिच वापस आया तां तिन्हीं दुई मुंडुभां जो मरया दिलया तां सै पछाड़ खाई ने पइया।

तिनीं साधुयें तिन्हां मुंहमां जो चुक्या कर्ने अपनेयां कुटिया बले ही दो गड्डे करी ने तिन्हां जो दबी दिता। थोड़ेया दिनां बाद तिन्हां दुई गड्डेयां ते दो बूटे उगी पे। जिन्हां बड्डे बड्डे दरखतां दा रूप धारण करी लिया। मोसमै ओणें पर सै दरख्त खूब फूले। सै इक दिन इक कौउमा आई ने तिस दरख्ते पर बैठा कर्ने इक फूल तोड़ी ने लैई गया। सै कउमा उड़दा-उड़दा राजे दे महले ऊपर पुजा ता तिनी दिसया भई राजा अपणे महले दे बगीचे विच घुमा दा है। तिन्हीं सै फूल राजे दे बलै सूटी दिता। राजे दी नजर तिस फूले पर पई तां तिनीं सै फूल चुक्या कर्ने सींगणा लगया। तां राज्यो तिस फूले दी बास बड़ी ही खरी कर्ने अनोखी लगी। तिनीं सै फूल सारे शहरे विच तपवाणा शुरू करी दिता।

राजे दे सपाई तिस फूले जो तोपदे तोपदे-तिसा कुटिया बले जाई पुजे तां तिसु तिन्हा फुलां दे दरखतां जो दिखी ने बडे खुल होए। जियां ही सै फुलां जो तोड़ने तांयें अपणा हय ऊपर करदे फूल खूब ऊंचे होई जाई। तिन्हां कितनी ही देर जतन किता पर हर बारी ही इहां होए। सै जतन करदे-करदे थकी गे तां राजे जो दसणा चली पै। तिन्हां जाई ने राजे जो सारी गल दसी दिती। राजा भी इसा गला जो सुणी ने बड़ा बचकत होया। सै अपु तिन्हां सपाइयां ने तिन्हां फुलां जो दिखणा चली पया।

जालु राजा तिसा कुटिया बला पुजा तां तिन्हां फुलां ने भरयां दरखतां जो दिखि ने बड़ा ही खुशी होईया। जियां ही राजे फुलां जो तोड़ने तांयें हय बधाया तियां ही सै फूल ऊंचे होई गे कर्ने राजे जो तिन्हां दरखतां तेइक बड़ी ही मीठी आवाज सुनाई दिती—भई राजा जे तूं माता रानियां जो ऐसु सदी लयोंगां तां ही तेरी साथ पूरी होई सकगी। नी तांकदी नी। राजा इसा गला जो सुणी ने कुछ झिझक्या कर्ने अपनियां त्यागिया (छड़िया) रानियां दी तिस्यों याद आई। तिनीं सपाइयां दे हवे रानियां जो सदी भेजया। रानी राजे दे सदे ते बई घबराई कर्ने सोचना लगी पई पता नीं हुण राजे मिजो क्या गलाणा हुंमा कर्ने क्या सजा दीणी हुंमी। पर राजे दे हुकम्मे जो टाली भी कियां सकदी थी सै तियार होई कर्ने पालकियां विच बई ने राजे बला चली पेई।

चलदे-चलदे रानियां दी पालकी तिन्हां दरखतां बला पुजी गई तां सै दरख्त अपु ही इक दम नीठे होई गे कर्ने तिन्हां दरखतां ते बड़ी मीठी आवाज सुनाई देणा लगी। रानियां दीयां समझा विच कुछ नि था ओमा दा। पर तिसा दी ममता तिसा आवाजा सुणी ने उमड़ी पेई। तिसा जो अपणयां मुंहमां दी बड़ी याद आई। कर्ने सै जोरे-जोरे रोणा लगी पेई।

तालु तिनी राजे अपणेयां सपाइयां जो गलाया भई दिखा तां सैई क्या गल है इन्हां दरखतां विच। सै सपाई राजे दीया गलां सुणी ने दरखतां दिया जड़ा ते मिटी चुकणा लगे। जियां ही तिन्हां जरा कि मिटी हटाई ता क्या दिखवे हुण भई दो बच्चे अपणे मुंहा विच झंगुंयां पाई ने हवा दे कर्ने अपु पिछे इकी दुए जो दिखी ने खुल होमा दे। रानी तिन्हां बच्चेयां जो दिखि ने बड़ी भारी खुश होई कने झट पट तिन्हां बच्चेयां जो चुकी लेया। तिन्हा दुई मुंहमां राजे जो अपणी सारी क्या सुनाई। राजे महलां विच आई ने तिन्हां दुई रानियां जो राज महले ते कडी दिता कर्ने अपणेयां दुई मुंहमां जो कर्ने रानियां जो महलां विच लई जाई ने सुखे ने रहणा लगा।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कुतकी	कहीं	बले	निकट
डोल	धुपचाप	जतन	कोशिश

## चड़िया दी कुल्ह

—स्वर्ण सता महाजन

चड़ी साड़े कांगड़े दा एक छोटा दया घां है जिस विच बड़े पहले राणा परिवारे दा राज था। तियु सदा पाणिये दी बड़ी कमी रहदी थी। कई राजे तिस पर अपना राज करी ने पर कुसी ते पाणिये दी यह कमी पूरी नि होई सकी। कई सालां बाद राजे जो बुढ़ापे विच सुपना होया कणे तिस जो सुपने विच कुल्ह सुझी कणे तिस्यो सुझया भई मैं कुल्ह है कने तेरे राजे विच भौणा चाहंदी। राजा बड़ा खुश होया। भ्याग होई कने तिन पण्डते जो सदी भेजया। पण्डते लग्न कडी ने राज्यो दसया। कने राजे तिस मूहेते विच चड़िया दे ऊपर एक छोटे दे जंगले विच जियु कि ऊबड़-साबड़ जमीन थी कम शुरू करवाई दिता। मिस्त्री (राज) तिसा कुल्हा दी चनाई करदे जाण कणे पिछे ते सै डेंदी जाये। तिन्हां कई बारी तिसा जो चिण्या पर सै हर बारी डेंई पोये कने तियु पाणी नी चढ़ी सकया।

इसा गलां दा जालु राजे जो पता लगा तां सै बड़ा दुःखी होया। तिन्हीं जगह-जगह ते पण्डत सदवाई भेजे। तिन्हां राजे जो दस्या भई राजा यह कुल्ह तां बल्ली मंगा दी। राजे छट हुकम दिता भई कुल्ह जो बकरे दी बली देई दया। पर कुल्हा जो तां बुहार बोंकरी गा, बिल्ली, घोड़ा, राज कुंवर (टीका) या राज कन्या इन्हां विच इकी बंद बल्ली चाहिंदी थी। राजा हुण बड़ा परेशान होया। सै बुहार (बोंकरी) दी बल्ली तां राजा देई नी था सकदा सै तां घरे दी लकमी हुंदी। बिल्लीया जो मारना तो बड़ा ही बुरा मनदे जिसने तां ब्रह्म हत्या लगदी। कने घोड़े तां भला राजेयां दी शान हुंदे तिस दी राजा कियां बल्ली देई सकदा था। कने राजकुमार (टीका) तां भला कुले जो चलाणे वाला होया। तिस दी भी कियां बल्ली दिता कने राजकुमारी तां भला देबिया दा रूप होई, इस करी ने इन्हां चीजां दी ता बल्ली नी दयोई सकदी। कने इन्हां दे बदले होर जे भी कीज कुल्ह मंगदी तिस दी बल्ली देणे जो मैं तियार है। तां तिन्हां पण्डतां बोल्या भई राजा जे तुसां अपनियां बड़िया नूषां दी बल्ली देई देण तां ठीक है। फिरी तुसां बल्ला नूषां दी निशानी तिसा दा मुँह कणे कुडी तां रही जाणे। कने टीके दा तां दुसा ब्याह भी होई सकदा। राजे जो भी यह गल ठीक लगी कने तिन अपणे सजाविये जो हुकम दिता तू जा कणे रानिये जो मोल भई राजा बोला दे भई कुल्हा दी प्रतिष्ठा (मुहूर्त) तेरेयां ह्यां करवाणा है कने तू सताबी-सताबी बली उरया।

सचानची बड़िया मुस्कता कने तिसा बल्ला पुजा कने राजे दी गल तिसा जो सुनाई दिती। रानी, बड़ी खुश होई। कने तिन सिर पारने ताई नैणी जो सदी भेज्या, जालु नैणा सिर पारी चुकी तां कुनकी छीकी रखया। रानिया दे दिले विच बुरा विचार

आया तां तिन बोल्या जालु में कुल्हेते हटी श्रींगी ता तिजो महलां ते डोलिया विच भेजगी जियां ही सै संजी बणी ने बाहर निकलीं ता दूरे ते गीदड़ा दे रोणे दी आवाज सुणीं तिन बोल्या जालु में कुल्हा ते हटी श्रींगी ता तुसां जो बकरे कटवांगी । अगे जाले तिसा सदी पालकी परोली ने बजी तां तिन बोल्या भई में तिजों हटी ने पक्की करवाई दिगी । जालु कउए तिसा दिया पालकिये पर फिरना सगे तां तिन बोल्या भई जे में ठीक-ठाक हटी श्रींगी ता तुसा जो घ्योए विच चुरी कुटी ने खुआंगी । पुजदे-पुजदे सै तिसा कुल्हां बखे जाई पुजे जियु राजा कणें होर लोक तिसा जो निहाला दे थे ।

राज परोतें पूजा सुरू करवाई दिती तां राजें मिस्त्रीयां जो बोल्या भई हुण तुसां अपना कम शुरू करी दिया । तां तिन्हां मिस्त्रीयां रानियां दे पैर बदे कणें तिसा दया पैरा बखे बड्डा पत्थर रखी दिता । राणी झट समझी गई भई ऐधु मिजों पुजा तायें नी बल्कि बल्लियां तायें आदिया । तां सै गलाणा लगी भई मेरेयां पैरां जो मत दबदे, मेरयां भाऊयां भाई ने मेरेयां पैरां जो बन्दणा है । जालु गोडे जो चिनणा लये तां सै बोली 'मैं सूरज देवता जो अरुण देणा है, जालु पेटे दी बारी भाई तां सै बोलणा लगी—भई अगे मेरे भाउआं घोणा कणें मिजों पैहनणे तायें घघरा लयोणा है कणें सै मैं पैहनणा है । जालु कन्ध छातिया बखे पुजी तां तिन बोल्या—मेरियां छातियां मत चिन्दे मेरे मुंडुए घुंघरूए कणें कुड़िया कुण्डला दूध पीणा है । पर सै ता कन्धा जो चिन्दे ही गये । जालु कन्ध तिसा दे मुण्डयां-मुण्डयां तक पुजी तां तिन करी गलाया—मेरियां भाई मत चिन्दे मेरे भाउआं मिजो ने भाई के गले मिलना है । इहां ही जालु तिसा दिया मुंहा कणे आंखी जो चिनणा लगे तां तिन गलाया—मिजो मत चिणा मैं अपने खसमे जो दिखणा है कणें उस कणें गलां करनियां हण । पर तिसा दिया गलां कुण सुनदा । कन्ध तिसा दे सिरें तक चिणी दिती ।

सारे लोक इस तमासे जो दिक्की ने अपनेयां-अपनेयां घरां जो हटी गे । पर जालु राणी घरे नी हटी तां तिसा देयां बच्चियां तिसा ही तोप पाई । जालु तिन्हा जो पता लगा भई भारी मां तां कन्धा विच चिणी दितियो तां सै दोनों रोदें रोदें अपने नानक्यां दे घरे चले गए । जालु राणियां दे भाउआं बारी गज सुणी तां तिन्हा झट अनियां फौजा ने चढ़िया दे जंगलें पर चढ़ाई करी दिती । तियु पुजदेयां ही पहले तिन्हां अपनी बहण तिसा कन्धा ते कड़ी कणें तिसा दे गल्ले मिनी ने बड़े भारी रोये कणें बोलना लगे—'असां जो जरा कि पहले पता लगी जांदा तां असां तिजो कदी नी मरणा देणा था । फिरी तिन्हा सारे कुलीयां पण्डता, मिस्त्रिया कणें खजानचिया जो सदया । कणें राजे (सोरेह) जो पकड़ी ने तिस दा सिर कदी दिता कने बाकियां जो हुंठे ते पैरां बल्ला ते कदी दिता इहां तिन्हां दे सारे कुंभे जो सल्ल करी दिता । कणें बाकी तमास गिरियां जो कंद करी लिया ।

तां फिरी तिन्हां तियु बनने दिया लकड़ियां दी चिता बनाई कणें अपनीयां बहणीं दा दाह संस्कार करी के अपने राजे जो हटणे ते पहले तिन्हां अपने मानजे घुंघरूये जो राजे पर बढालयां कणें अपनीया आनजियां कुण्डला दा ग्याह किता ।



सुनने बिच घोंदा भई कुल्ह रानियां दिया बल्लीया बाद पणिये में खूब भरी ने चली  
कनें सै ढाई दिन खूने ने चलदी रही थी। अज भी सैह कुल्ह सारिया चढ़िया जो पाणी  
दिदी। अज जितणा कभी राणा परिवार है सैह मारे इसी घुघरूए दी श्रीनाद है।

अज भी यह कथा गाणे दे रूपे बिच सुनणे जो मिलदी। हुमने इमा कथा जो बड़े चाये  
ने गादे। पर राणे इसा कथा जो सुनना बुरा समझदे। सैह इस कथा जो नो सुनदे।

शब्द	अर्थ
सुझी	दिखाई दी
उबड़ खावड़	ऊंची-नीची
सदवाई भेजे	बुला भेजे
सताबी सातबी	जल्दी जल्दी
पुजदे पुजदे	पहुंचते-पहुंचते
तोप पाई	खोजना आरम्भ किया।
चाये नें	शौक में

## पुट्टु दी कथा

—बी० आर० भारद्वाज

इकी गांवा च इक मुट्टु भ्रपणियां बहणीं सोगी रहंदा था। तिस दा तां पुट्टु था तिन्हां रे मां-बूढे मरी गई रे थे, तिन्हां रे चाचा कने चाची बी थे पर से जुदे रहदे थे। से इन्हां दुई बहण भाउए जो खरा नी ममझदे थे। तिन्हां री सदाए ई नीत रहंदी थी जे कदी इन्हां दा बी उकलो तां कदी इन्हां रे चार चुहलु अमां रे हत्ये ओणा से पुट्टुए जो कियां न कियां पटणा चाहदे थे। जगा-जमीनां रे तां पर बी पुट्टुए गें पंज चार ही खेतलु हुंगे, होर तां तिमरे बडे खड्यातर ही पाई री थी। से दोनों बहण भाऊ बड़िया मुमकला ने भ्रपणा गुजारा करां थे पर था, पट्टु, "पुट्टु ई"।

इंगर पम्प्रां रे पास ते भी पुट्टु नकैमां ही था। बरम दो बरमां पहले तिननी कुम की ते इक कट्टु अंदा था। ध्याड़ी से दुध, चेंघदा जोआई थी, पर हुण मन्तो जाणा था खाणे ते हटदा ई नी था। पुट्टुए जो घा पुगाणा बड़ा मुम्कल होई गया। तिनीं इक विध सोची। तकांलां परलत नथप त्हेरा होणे पर तिमं सह कट्टु छडणा कने भ्रपणे चाचे रिया कमांदिया च हक्की ओणा। म्यागा मूह त्हेरे ही तिम सह कट्टु नी ओणा। कट्टुए गड्दिम होई ने ओणा। चाचा कमांदिया दिया जुआड़ा जो देखी ने रहान था जे राती जो रोज ही कुम दा मान आंदा हुंगा, कने गानेयां खाई जांदा हुंगा। हारी फारी ने तिनी बी इक विध सोची कने एक कुहाड़ लेई ने कमांदियां रे खेतरा च लुकी बँठेया। कुछ ही रात बीती हुंगी तां जे पुट्टु भ्रपणे कट्टुए जो ओथी छडी गया। पुट्टुए जो चाचे रा कोई पता नी लगेया। चाचे जो वड़ी जलणी आई कने तिनी ओ देखेया ना ती, कुहाड़ ए ने कट्टु बढी दिता।

तां जे दूए दिन म्यागा ई पुट्टु कट्टुए ल्योणा गया तां तिनी देखेया जे कट्टु तां बढी दिती रा। सैह रोया करलाया बड़ा पर क्या करदा, कुमी जो कुछ नी गलाई सकेया, भ्रप्पु बी तां खोरी ई करदा था, इस करि ने क्या गलांदा सैह चमारा बाल गया कने कट्टुए री खल घड़ाई कने घरा जो ली आंदी।

कुछ दिनां परलत, पता नी, पुट्टुए जो क्या सुआन आया कने तिनी सैह सुक्की री खल सिरा पर चक्की कने म्यागा ही सैहरा रे पास जो बर्ला पेआ। सारा दिन हंडदा रेहा, जंघा रे छल बणी गए। दिन घरोणा लगेया कने सह इक्की पिपला दे ठके तिसरे पठ्याले बेही गया। हुंदे हुंदे दिन घरोई गया, भूमियां पेई गहयां, तां गेखरा त्हेरा होणे लगी पेआ, तां तिसजे डर लगणे लगेया। अपर सह हुण जाआं तां जाओ कुती जो बम्मां कुती नेडे नी, करदा ता क्या करदा। आखर तिनी पिपला पर कौणे दी कोस

कीती कनें खना लेई कनें सह पिपला पर, बांके जेहे ब्रेखे पर खल रखी कनें अप्पू तिसा गास बैठी गया। पर जलो, तीदियां बी राती ठंड होई जान्दी। इक तां नबौगी, दूए भूता-प्रेतां रा डर त्रिए, कोई डाण-बछाण नी, पुट्टुए जो नोन्ड कुती आभो, बैठी रा बचारा कुंगुडु होई ने। अजे थोड़ी जेही रात गई होणी कि ओथी तिक आदमी आए पुट्टुए चन्दा दिया मकड चानणियां च देखेयां जे तिन्हे ओथी धूप बालेया कनें अरदाम कीती जे हे देवी ! असें मता मारा माल लेई ओंगे तां तिज्जो सी रुपय चढ़ांगे एह गलाई ने से चली गए।

दोनका जुन था। चानणी घरोई गईरी थी। पुट्टु बचारा सारे दिना रा खिज्जी रा था दूए सारिया राती रा निन्दरे, निम जो बैठी रे बैठी रे जो दुलणी लगी पई कनें ओद-ओदे निन्ना री सहेल पई गई। इतने च यल्ले से ई चोर आई पूजे कनें देवी जो चढोआं चढ़ाणे लगी एए। तिन्हां रिया गल्लां सुणी ने पुट्टु एका बजा गया जे सैह भेखे परा ते रुडी गया कनें तिमरे रुदने ते खल बी टुआटरी होई ने खड़ाखाड करदी पौण लगी पई। सहेरा था, चोरां जो कोई पता नी लगेया जे एह क्या होणे लगेया। तिन्हां खा त कोई भूत-प्रेत ही लोहणे लगे। चोरां जो समलहोणे नी मिलेया कनें मारा माल ओथी ही छड़ी ने नठी गए। कुछ बेर तां पुट्टु बी अपणे बक्कां जो अमदा ई रेआ, पर काफी बेरा बाद तां जे कुछ झुल मुलाबीं होई पैआ, पुट्टुए जो स्वांत आई कनें तिनी मता मारा मता देखेया तां तिमरे कुलफ सिडी गए। तिनी बुजके खोले कनें रुपए रुपए गठी च वहें मान कनें अपणे घरा जो चली पैया। सैह घरे पूज्जी गया कनें अपणियां वहणी जां बोलेया जे चाचिया ते तकडियां-बटिया सी ओ असां रुपए तोलणे कुडिये। जाई ने चाचिया ते तकड़ी बट्टी मंगी तां चाचिये पुच्छेया जे बच्चा कैत नाणी तू तकड़ी-बट्टी कुडिए बोलेया जे भाउए मने भारी रुपय अंदीरे, रुपयां रा नां मूणी ने चाचीये रे कालजे हौल पई गया। तिसा तै नी रही होया। सैह कुडिया सौगी सौगी चली आई कनें रुपयां रे ठेरा देखी ने बड़े फफड़े करने लगी, सह बोलने लगी, बच्चा पुट्टुआ तें इतणे रुपए कुती ने अंदे मिया बच्चा ! ताहीं तां हऊं ते रे चाले जो बोलदी जे असां एह मुन्तु कने मुन्ती कठे रखणे। पर जलो एह भाग, मेरी मुणदा ई कुण ? बच्चा तू दस तां सई जे ते कियां कियां कमाए एह इतने रुपय ? पुट्टु था तां छोटा पर था बड़ा चलाक तिन्नी बुरा जेहा मुंह बणाई ने बोलेया, "चाची ! क्या करदा हाऊ ? कुलकी मेरा कट्टु ई बढी ता था क्या करना, छोटी जेही खल थी तिम बी 'सह ई बेची जाई ने सहरा। हुण बनदु लैयगां तां करमाणी करगा।

## दूआ भाग

चाची घरे पूजी चुकी री थी तपर तिसा रे दिला च एदी खबराहन पई री थी तियां जे बरसाती खड़ा च धूमण् फिरदा। तिसारे दिला रा इक फुआण बैठी कनें दूजा उठो। संझा खाईपी कनें लगी, पेई खसमा जो ताहनेया 'भारनें, दिख तां 'कल का जम्मी रा छोरु, इक खल बेची सह बी तिन्ना बरसां रे कट्टुए री कनें मुलखां रा धन लो अंदा कट्टा करी ने। पर जलो मेरे भाग, मै मरी जाणा इआं ई इस अंगे रे भुडे च, न कदी सरा खादेया न कदी लाया। तू आ इक, सह बणी रा चुल घुसडू। कजो पाली रा इतना

बोणा ? कल नाणा एह? जे धन मिली जांगा तां होर खरदोई जाणा । बड इन्हां म्हैसी जो कने बेच फेरी खलां जो सहार जाई ने ।”

जोरो रा जराणा जियां जे बोलेो तिम्रां कमाणे । तिस दा दिल तां नी मनदा था पर क्या करदा' म्हैसी बढणे पइयां । दू चीं दिना परन्त तां जे तिन्हां रिया खलां सुकी गइयां तां सिरा पर चक्की ने चली पैया सहारा दे रसते । रात कुतकी बाटा कट्टी ने दूए दिन म्यागा ई बडा तइका लगाई ने दिना सिर दे सिर सहारा च पूजी गेम्ना । ओथी पूजी ने तिनी सोचेया जे पुट्टुए दिया छोटिया जेम्ना खल्ला रे इतने रूपये मिले तां मेरिया खलां रा मुल्ल तां कोई बडा सैठ ई देई सकदा । एह सोची ने सह बड़ियां-बड़ियां कोठियां रे पास जाई ने लगी पैया बड़ियां नकरदने, “खलां लेई लम्पो, बड़ियां म्हैसी दियां खलां लेई लम्पो” । सैठ लोक म्यागा ई धुमणे निकली दे थे । तिन्हें आसे पास दियां नौकरां जो बोलेया जे इसा जो बोलां जे कुसी होर सी पास जो चली जा तिन्हें तेढा ई कीता । पर चाचा तां आपणे आप जो सेठां ते बी बडा समझां था । बस खलां बिकणे दी बेर थी, फेरी सैठ तिस दा क्या मुकाबला करी सकदे थे । इस करी ने सह बी कुछ तमकोया, बड़ी करेड दस्सी कने बोलणे लगेया, ” ओए पिच्छे हटी जा । तुसां नौकरां ने मेरी क्या गल्ल ? जां आपणे सेठां जो बोला जे मे आई ने गल्ल करन् पुठिया-सिदियां गल्लां सुणी ने नौकरां जो बड़ी जलणी आई पर चाचा बी कुती घट था । सह बी सरहेर होई पेम्ना । नौकर मते थे तिन्हें सह छैन करी ने चुक्केया । चाचे जो तिन्हां ते जान बचाणी मुमकल होई गई । खलां ओथी ई छड़ियां कने नठी न आपणे घरा दे पास जो नठी गया ।

चाचा घरे पूजेया कने आपणियां घरा आलियां ने सारी बारदात सुणाई । तिन्हां रे घरा दा हुण घराखडा बणी गया था । तिन्हें दुई सलाह कीती जे इनी असां रिया म्हैसी बडाइयां असां इस दा हुण घर ई फूकी देणा । एह सोची ने तिन्हें राती जो तिसरे घरा अग लगाई कने सह फूकी दिता ।

## त्रिया भाग

पुट्टु कने तिस दी बहण हुण गोडा रहदे थे । रुपये तां पुट्टुए दन्बी दे थे । खाणे-पीणे दी कोई मुमकल नी होई । पर जली दे घर री भुबल अजे बी तत्ती थी । तिसा खा देखी ने दोनों बहण-भाऊ इकी-दूए खा देखदे कने फेरी रोई पौदे । पंज-दस दिन बीते होणे । पता नी, पुट्टुए जो क्या स्वप्न आया । तिनी आपणे बलदां जो इक गूण बुणाई कने तिसा बिच जली रे घरा री स्वाह भरी कने सहारा रे पामे जो चली पेम्ना । बल्द मठ-मठे चला दा था । बाटा रात पई गई बाटा दे कडे तिनी क्या देखेया जे ओथी चुल्हे पर रसों बणा दी कने पंज-सत आदमी गप्पां मारा दें । इकी पास गूणी रा ढेर लगी रा कने खच्चरां बशी रिया । एह राजे रा खजाना लेई ने जा करदे थे । पुट्टुए सलल्हादे होए तिन्हां जो बोलेया, “जी मैह बी एथी रात कटणी थी” । तिन्हें सिद्धे सभावे बोली ता रैह लै भाई, अमां कुती एह जगह सिरा पर नैणी चक्की ने” । पुट्टुएं बी आपणी गूण तुभारी ने तिन्हा दियां गूणी बाल रखी दीती कने इकी पास आपणा बल्द बन्ही दिता ।

पुट्टू दी तिन्हां कने गल बाल होणे लगी। तिन्हें पुच्छेया जे तू कुती ते आया, कुती जाणा कने गूणी च क्या माल पाई रा पुट्टू ऐ बोलेया जे हऊं इक्की सेठा रा नीकर आ। सेठ घोड़े पर अगे चली गया। पिछे ते मेरी खच्चर मरी गई कने होर खच्चर कुती नी मिली। मिजो चुगदा-चुगदा एह बल्द मिली गया, मैं इस पर ई गूण रखी कने आई गया। तिन्हें फेरी पुच्छेया, भोग गूणी च माल क्या भरी रा। तिनी दमेया जे इसा च मोहरा (भ्रांफिया) भरी रियां सह बी अपने सिंगा कठणा बाहंदा था। एह सुणी ने सह लोक इकी दू ए ला देखणे लगी ए। पुट्टू खिजी रा था, छोड़ ई निन्द्र आई गई। भ्यागा तां जे पुट्टू जागेया तां तिनी देखया जे भोथी न सह आदमी न गूणी कने न ई खच्चरा। सह पुट्टू ए रिया गूणी जो लैई गई थे कने अपनी एक गूण भोथी छड़ी गई रे थे। पुट्टू ए तां जे गूण ठोही तां बड़ा खुसी होया। बड़िया मुसकला ने गूण बल्दा पर लदी कने अपने घरा जो चली पेआ।

पुट्टू घरें पूजी गई रा था तिनी आपणी बहण फेरी चाचिया बाल भेजी दित्ती जे तकड़िया बटिया मंगी ने ली थी। तां जे कुड़ियें तकड़ी बट्टी मंगी तां चाचिया जो फेरी रपैयां रा ई छरोला गया। तिमें पुच्छेया जे क्या करना तकड़िया बटिया जो? क्या भंदी रा पुट्टू ए। कुड़िए दम्सी दिता जे भाउण इक गण भरी ने रपैयां री भंदी रे। चाचिया दे दिला पर होल पेई गया। चली आई पुट्टू एगें कने लगी पेई पुच्छेया बच्चा किया कमाए मेया ते इतने रपये। पुट्टू भला महा चलाक। लगी पेआ उभारनियां-गारनियां मांने सह। बोलणे लगेया, "भाई वो चाची क्या करूं। कुनकी मेरा घर ई फूकी दिता था। छोटा जेआ टपक था, कितनी कर घूड़ होणी थी निम्न दी कने कितनी कर मेरे बल्दा ते चकोणीं थी? इक फेरा धुड़ी दा लैई गया था, एह लैई धंदे थोड़े जेहे रपैड़ तिसा जो बेची ने," चाची जरा निधी पिड्डी होई ने फेरी गलाणे लगी, "मेया बच्चा क्या करूं? घ्याड़ी बी मैं तेरे चाचे ते दोनो मईसी बढादियां, खलां बेचणे भेजेया ता मार ई खाई ने आया। बल्दे जे पंज दिते तिन बट्टे, मार खादी उठी नठे। पर इनी ता तिन बी नी बट्टे। एह तां मार खाई ने दूई खलां बी गुआई आया।" पुट्टू निहारों जेहा होई ने बोलणे लगेया, "भाई वो तां हुण हऊं क्या करूं। भाई जे चाचा थोलदा तां हऊं बी मौगी चली पीदा, फेरी देखदा, भला रपैयां जो कुती रखदे तुसे। चाचियें फेरी बोलेया, "मेया बच्चा जे हऊं अपने घरां फूकी देऊं तां तू अपने चाचे सीगी जाई ने धूड़ी बेची आया। पुट्टू ऐ बोलेया, "बाह चाची तू इक बारी अपने घरां तां फूक, दूई बल्दा पर दो गूणी नैणियां, दो गूणी रपैयां दियां आई जाणियां। हऊं चलगा चाचे सीगी, फेरी देखदा जे कियां नी बिकदी सुआह।

चाचियां भौ देखया न ती, घरा जो भग भइकाई दित्ती। मालका ओणे ते पहलें ही घर फूकी छडी रा था। मालकें आई ने गाली-गुली बी कडियां पर जताना बी तां कड़े दम थी, तिसा जो तां गलैजां बेही रा था। तिमें बोलेया, "भज अछ्छा जा जा तू गूणी बुणा जाई ने पहले भेजेया था तां आई गया था नखट्टू बणी ने, हां हुण जाई ने देखेयां भला पुट्टू ए जाणा हुण तू मौगी देखेयां फेरी मुआह बिकदी कि नी।" मालक समझी गया जे पुट्टू ए रा जादू फुरी गई रा था पर का करदा घर ता जली चुकी रा था, सह तां बणने ते रेआ। पर पुट्टू हुण हुंदा मैंह सीगी जाणे आला? सह कोई बड़ा ई सत्यागर आ? हऊं क्या कुछ जाणदा ई नी?

लेर तिनीं गुणी गुणादयां कनें दुई बल्दा पर घूड़ भरी ने सहरा जो बैचणे चली गया। सहरा पूजेया लगी पेया म्यागा ई बोलणे घूड़ लेई लभो, मुझाह लेई लभो। हुण बी तिस जो पहने साई मार ई पई। बचारा पसइयां जो जसदा-जसदा घरे, पूजी गया। हुण तिस जो एही जलणी झाई जे तिनीं पुट्टुए जो मारने दा पक्का हठ करी लेभा तिनी सोचेया भई एह राती ई बढी देणा।

जनाने फेरी समझाया भई जे तें एह बढी दिता तां राजे तेरा कोहलुए धाण पीड़ी देणा। इस ते तू एहा कर जे इस जो कियं न कियं बन्ही ने दरबाए च रुड़ाई श्री। सपं बी मरो जाओ कनें सोठा बी बची जाओ।

पुट्टु राती सुनी रा था। चाबें निमदें मुंहभा च कपड़ा तूहीता कनें सह जुट्टी ने बीरिया विच बन्द करी दिता। तिनी बोरी पर चक्की कनें दरबाए रे पास जो चली पैया। पुट्टु चाहे उमरा रा छोटा ही था पर था ता झादमी। झादीए रा भार बुरा। बिज्जी गया चाचा तौदिया रे दिन थे। बोरी बाटा रे कंठे डंगे पर तुझारी दिती कनें अप्पू थोड़ी जेही दूर इकी डाला रिया छोयां बैठी गया रोटिया रा टुकड़ा खादा। पाणी पीता कनें ससतोणे लगी पेया। पाणे री बेर थी कि तिस जो निन्द्र झाई गई।

परमात्मे रा भाणा, इतने च तिस रस्ते इक गदी अपणे गोठा लई ने झाई गया। तिनी बोलेया जे बन्ही री बोरी खड़ा करदी। तिनी लेई तां बोरी खोली दिती। पुट्टु सावधान करी ने खड़ा करी दिता। गदिण तिस ते बन्हणे री सारी वारदान पुच्छी। पुट्टु बोलेया, “क्या दम्भू भाई! इन्ही चाबें पिछने मान हऊं व्याही दिता था, पर हुण बोलदा जे तेरा दुभा व्याह करना। घरे मेरी जनाना रोभा दी। एह मिजो बीरिया च बन्ही ने नौए मोहरियां रे व्याणे लेई चली रा।” गदी कुमारा था, तिनी बोलेया “ओण मारा मितरा, तू नी कराणा व्याह तां हऊं करांदा। मम्हान मेरियां बकरियां कनें मिजो वन्ही दे बीरियां च”। पुट्टुए मौका सकाया कनें बोलणे लग्या, “मितरा देख! हऊं तिजो बन्ही तां दिता, पर व्याह कराई ने हटी ने इयां भयां जिभा जे माखी फुलां परा जो झादी। मैं अपणे घरा जो जाणा, ओधी रोहा-दी होणी सह मिजो”। गदिण बोलेया, “ओण मितरा तू झट पट कर, क्या मिजो फिकर नी अपणे धणा रा।” पुट्टुए सह बीरिया च बन्ही गिता कनें अप्पू बकरियां लेई ने झट पट उरे परे होई गया। चाचा बचारा फनीई ने जागेया कनें चक्की लेई बोरी। हुण भार बड़ा था। पर तिनी सोचेया जे सै पुट्टु मरी गया होण तां ही इस दा भार बघणा लगी पेया। ओगे दरयो झाई गया। चाचे परा ने खड़ी ने बोरी दरयोभा च सटी दिती कनें अप्पू घरा जो हटी भाया। सह घरे पूजी गया। दोनों खमम जुझाजम निपरचिन्दे होई गई रे ये पुट्टुए खा ते तिस जो रोदी थी तां मिरफ बहण निमदी।

पर चाचे पूजी रे अज्जे चार-पांच ई दिन होई रे थे जे पुट्टु बकरियां-भेडां रा एक बड़ा गोठ लेई ने घरे पूजी गया। चाचे-चाचिया जो छलेडा ही होई गया। वो जनीए कमाइए, एह दरयोभा च अप्पू रुड़ाया, फेरी बी बची गया, बकरियां-भेडां होर लेई भाया। चाचिया ते मन नी मरोया। सह पुट्टुए बाल पूजी गई कनें पुच्छणे लगी, “बच्चा पुट्टुभां!

तू इतने दिन कुती रेखा कने इतनियां बकरियां-भेडा कुती ते आदियां।" पुट्ट सब कुछ जाणवां होया बी बचला बणी ने बोलणे लगेया, "चाची का दस्मू, कल्ला था कितनिया कर ल्योवां हऊं।" चाची बी घेसली जेही होई ने बोलणे लगी, "बच्चा तू सारिया गल्ला जो दम जे कियां कियां आदियां?। पुट्टए बोलेया" "चाची इक दिन न, कुनकी मेरा मुंह सुती रे दा बूजी दिता कने बोरी विच जुट्टी ने हऊं दरयोआ रुहाई दिना। तां जे हऊं दरयोआ दे दुगे पाणिणे च पुजी गया, तां मिण चाची कजो पुच्छेदी तू बन्दिण। बड़ियां भारी बकरियां कने भेडां। गद्दिण खीर कने भत बणाई रा कने कडी बी थी बणाई री। तिन्हें हऊं खोलेया, हऊं नुहाया धुहाया कने फेरी मिजो रोटी खुआई मिण नो मैं दो थानु खादे खीरी दे, बड़ा मजा आया। फेरी तिन्हें हऊं पुच्छेया जे बोल तू एधी कजो आया, कने तिजो क्या चाहिन्दा। पहले तां हऊं कुछ डरी गया, पर तिन्हें हऊं घोगइण च लेई ने बड़ा पत्याया कने बोलेया जे कह नी गलांदा जे निजो क्या चाहिन्दा। हनो, आधी मिजो होर तां कुछ नी दिमेया। मैं, भाई नो, बकरियां-भेडा ही मांगियां। बम फेरी क्या था। तिन्हें गोट कने हऊं तिसा धारा पर कुआही ते। तां भाई हुण हऊं घरे पुजेया।

गल्ल चाचिया रे हंडु-रची गई थी। तिसा जो साफ पता लगे गया, जे पुट्टए दा कोई कमूर नी हो, नलैकी ई तां सिरफ तिसा रे खसमा दो। तिमैं बोलेया" बच्चा, हऊं तां पहले ही बोलदी थी जे तू माही मुंडू तां होणे ते रेखा। गल्लतियां तां तेरे चाचे दियां हत। पैसा खोटा अपणा ता सन्यारे जो क्या दोस? बच्चा हुण तू कनै मैं जाणा, मैं ल्योणियां बकरियां? फेरी मैं कने मुनियां (पुट्टए दी बहणा) चरानियां दुई जाणियां मजे कने। चल मेरा बच्चा अस्मां म्यागा ही चली पीणा तैयार होई जायां जरूर"। पुट्टए मौका तकाया कने बोलेया, "चाची तैं बिल्कुल ठीक गलाया। अपर मिण नो तू कजो जाणा कधकी हऊं लेई घोगा, मैं जाणा तां हा इआ ओधी पर क्या कर तिन्हें मुठ कर कोल्थां री दाल मंगी थी, तिन्हों जो कुती ते उमाइगा, ताहीं जाणा होणा मेरा। इस गल्ला जो सुणी ने चाचिया जो होर बी बड़ा मच्छी लगी पैई, सह बोकी "ना बच्चा ना, तू हुण खिज्जी ने आया, हुण मिजो ई जाणे दे।"

म्यागा ई चाचिए हल्ला पाई दिता, मट पट करा, बेर होई गई। पुट्ट कने तिसरी चाची चली पए तां चाचा होरा नी मल्ले। तिनी बोलेया जे मंह बी सोगी जाणा तिस जो कुछ सक बी था पुट्टए पर। तां जे चाचा चली ई पेआ तां पुट्टए फेरी बोलेया, "अच्छा एका करा जे तुसां चली पीणा तां इक छज्ज मुगाई तिन्हें, सह जरूर सोगी नेणां" चाचिए छज्ज बी लई लेआ, बट्टी भर कोल्थ बी बन्ही ले। जादे जादे तिन्नों जणे दरयोआ पर पूज्जे। पाणिणे दे इक्की घुमणुएं गें पूजी ने पुट्टए बोलेया जे गद्दिण एधी लेयाई ने कुआहया था हऊ एही आ रस्ता आ ओधी दा। चाचियें कोल्थां री गठ कने छज्ज लेया कने छाल देई दिती दरयोआ बिचा जो। बचारी घुमणुएं च फसी गई बडियां देरा बाद सेह दूए कडे दिस्सी छज्ज अजे बी तिसा रे हल्ले ई था। तिआं जे सेह गासा जो उभकी भी तिसे छज्ज लेई ने निकलने री कोस्त कीती हुगी पर पुट्टए बोलेया, "चाचा! चाचिया जो बकरियां मिली गइयां, एह सदी बी तुसां जो बी।" चाचे ते समल्होई नी होया। इक तां जनानां रे जाणे रा दुख, दूए पुट्टए बकले री दिता ओ तिनी बी छाल मारी दिती कने दोनो ओहूर गद्दियां बाल पूजी गए

(मरी गए) पृष्ठ. घरा जो चली आया कनें अपणियां बहणीं सौगी मजे ने रहणे लगी पेया ।

शब्द

अर्थ

सौगी

साथ

खतर

खत

घरोणा

सूर्य डूबना

गास

ऊपर (आकाश से)

तोदियां

गमियां

फफड़े

बनावटी बातें

भुबल

बूल्हे की गम राख

मठे-मठे

धीरे-धीरे

बाणा

रास्ते में (बाट-रास्ता)



## चार अनमोल गलां

—बी० आर० भारद्वाज

इक बारी इक पंछियां दा डार उडदा-उडदा, अपणिया मस्नियां बिच, कदी हेठां जो, कदी उपरा जो हुंदा होया इयां ही बिना किमी लक्ष्य ते जा करदा था। भौए इन्हा रा कोई घर नी था, कोई बार नी था, इन्हां जो अन्न कट्ठा करने री या होर चीजां कट्ठियां करने री कोई चाहना नी हुंदी, पर पेट बैरी तां कन्ने लग्ग रा, इस जो किती रबन ? ए पेट इस जीवा ते क्या नी करांदा। ए जितने बी पुन और पापां री गठई बन्ददा, ए सब कुछ ए बैरी पेट ही करांदा और कदी-कदी ए पेट इस जीवा जो धोन्ने बिच नियाई ने मरने पर मजबूर करी देंदा।

ठीक ए ई हाल इनां पंछियां रा था। उड़ी रे थे, स्वतन्त्र थे ए, किमी रा डर नी था इन्हा जो जिस पाने जो अगला पंछी मुंह मोड़ी देंदा था, उमी पाने जो सारे मुड़ी जांदे थे। कोई बी इन्हां रे रस्ते जो रोकणे आला नी था, इन्हां रे रस्ते कोई कांश नी था, कोई उथल-पुथल नी थी, हम्बार था, माफ था होर निरबिघन था इन्हां रा जीवन रस्ता।

बगलां घौदें देर नी लगदी। पंछियां री नगर जमीनां पर ई रेंयां दाणियां पर पेई। लालच बुरी बला हुंदी। दाणेयां जो देखदेयां ही तिन्हां रे मंह्यां बिच पाणी भरी आया, पेटा बिच चूहे नचणे लगी पये और पंछियां रा अग्लू धरती ला जो उतरने लगी पेआ।

बैठे-बैठे पंछी बैठे गये कने अपणिया भुखा जो मटाणे वास्ते दाणेयां जो चुगणे रा प्रयत्न करने लगी पए। पर अज बी इक पंछी भुइयां तिक नी पूजी सक्या था। ए कमजोर था कने छोटा था। इस री चाल हल्की थी। इस करी ने ए अपने साथियां ते काफी पिच्छे रेई जां था। ए कमजोर पंछी बी अपणिया जानी री बाजी लगाई ने, अपने टुंडुआं जो छड़ी ने कने फंगां जो नरेई ने, नढ़ाल होई ने दाणेयां रे नेई पूजणा चाहदा ही था कि जमीनां पर पैई रा जाल बंद होई गया और सारे पंछी चीं-चीं करदे होये सकारिये रे जाला च फसी गये। ए देखी ने ए कमजोर पंछी बी अपने साथियां कने जाणे री इच्छा करने लग्या। तिसजो पता था कि कल्हे रहणे ते तिम जो किन्हां-किन्हां मुस्कलां रा सामना करने पाणा। पर हुण तां जाल बंद होई गया था। जिकारी अपणिया मफलता पर मुसकड़ांदा होया जाला जो कट्ठा करा दा था।

कमजोर पंछियें छट अपने टुंडु नरेडी लये, फंगा जो ताणी ने फड़-फड़ाणे लगी पेआ और इक पासे जो चली पेआ। अपने साथियां जो जाला च फसदेयां देखी ने भौए इस जो बी मरने री इच्छा होई थी, इस रे दिला च त्यागा री भावना पैदा होई गई थी पर हुण सेह भावना खत्म होई चुकी री थी। दूए रिया मीती जो देखी ने इस किसमा री भावना

श्रीणा कुदरती गल्ल है पर थोड़िया ही बेरा बाद जीव अपने सांसारिक धंदेयां विचा भाई ने मोह माया विच फसी जांदा होर फेरी मरना तां बड़ा मुश्किल हुंदा। बोल्दे हन जे सीणे बराबर सुख नीहँ कने मरने बराबर दुख नी है।

ए पंछी कुछ ही दूर गया था कि ए थकी ने इकी डालिया पर बैठी गया। इतने विच इकी कौए री नजर इस पर पेई गई। कौ सबी ते चलाक पंछी हुंदा। इनी ताड़ी लेआ जे ए पंछी कुछ कमजोर है। इस करी ने कौ इस पर अपटैया। पंछिये जो अपणी जान हुण बड़ी प्यारी लगणे लगी थी। तिनी उड़ी ने अपणी जान बचाणे चाही पर क्या करदा इक तां कमजोर दूए अपणेया साथियां ते बिछड़ने रा दुख तिस जो उडणे नी दिदा था। थकी ने सेह इकी डालियां पर बैठी गया। पर कौ तां पिच्छै-पिच्छै तगी रा था सेह फेरी भाई ने अपटी पेआ। पंछिये बाल कोई चारा नी था, नडाल था, बेबस था सेह। तिनी भुइयां जो छाल देई दिती था बोली सकदे जे सेह पेई गया। दूये पासे कौ कड़ा-कड़ा करी ने समझा रा था कि काहली किया इस रा स्वाद चखुं। सह फेरी अपटैया। हुण पंछी किती जांदा, क्या करदा। सेह बेबस होई ने अपणिया जानी जो बचाणे खातरतथी ही बूटेयां विच बड़ी गया। ए बूटड़े बड़े घणे थे, मते सारे थे। कौआ रा इन्हां विच बड़ना मुश्किल था। कौए कड़ा-कड़ा करी ने होर बी मने कौ अपणिया मजती जो सदी लये। तिने पंछिये जो टोलणे री काफी कामन कीती पर ए सारियां कोशसां आफल रईयां।

कौ हारी फारी ने चली गई रे थे। पंछिये जो ए बूटड़े कने बांका घर मिली गया था। सेह रोज बाहर निकली ने थोड़ी बौत चोग चुगदा कने फेरी झट पट तिन्हां बूटड़ेयां च बड़ी जांदा था।

इन्हां बूटड़ेयां रे बस्वा इक छोटा जेआ बःरड़ा था, इस बःरड़े पर बड़ी बांकी हरी-हरी घा थी कने गब्बे इक छोटा जेआ पिपला रा पपलोटु था। जिस दिन कमजोर पंछिये इन्हां बूटड़ेयां री शरण लेई थी तिम ते दूए दिन ही इक महात्मा अपणेयां चलेयां कने तिस पपलोटुये हेठ बैठी गया। पंछिये देख्या जे दिन भर चले बाहर चली जांदे कने संश्रिकियां गिच्छा लेई ने हटी ओई, रसो बणदी होर खांदिया बारियां परमात्मे रे नावां पर कुछ भोजन रखी ने सटी दें। सेह पंछी झट निकलदा, तिस भोजना जो खांदा होर तृप्त होई ने फेरी अपने घरां विच बड़ी जांदा।

भोजन पाई ने महात्मा उपदेश देणा शुरू कारा देंदा कने चले ध्यान मग्न होई ने मुणनें लगी पीदे। इस तरीके ने कई दिनां तिक ओथी उपदेस हुंदा रेआ कने चलेआं सोगी-सोगी पंछिये रे दिलां च की ग्यान बसी गया, मेह बी, प्रादमियां री बोली बोलणे लगी पेआ कने बड़ा तर बणी गया। ए कुसी दी गल्ल सच्ची होई गई कि लकड़ियां कने लोहा बी तरी जांदा। चलेयां कने पंछिया रा बी कल्याण होई गया। सच्च बोलदे जे जैसा खाये फल वैसा बणे मन, जैसा मन बणे तैसी होये बुद्धि, जैसी होये बुद्धि तेड़ा करे कर्म और जेड़ा जे करे फर्म, तेड़ा ही भोगे फल। हुण पंछी क्षतर बणी गई रा था। चलेयां कने

पंछियां रा बी कल्याण होई गया। कइयां दिनां बाद से साधू ओथी ते चली गये। हुण पंछिये रा बी ओथी दिल नी लगदा था। तिन्हां गयां ते बाद बी सेह कुछ दिन ओथी रेभा पर उदास होर बेचैन। हुण तिस जो जोर बी होई चुकी रा था इस करी ने सेह इक दिन लाचार होई ने ओथी ते उड़ी गया।

कई दिनां तिक पंछी अपणा जीवन बनीत करदा रेभा ओर इक दिन घुमंदा-घुमांदा लालचा विच आई ने ऐ पंछी बी इक शिकारिये रे जाला विच फंसी गया। शिकारी तिस जो अपणे घरा जो लेई गया। घरे जाई ने तिनी अपणिया जनाता जो बोल्या जे अज्ज इक्को ई पंछी मिलेया इस करि ने इस दी ही सज्जी बणाई लेभा।

मौत सामणे देखी ने पंछिये रा दिल कम्बो उठेया। क्योंकि सेह तां आदमिये री बोली जाणदा था, ममजदा था कने गलांदा था। तिनी इक विध सोची होर शिकारिये जो बोलणे लगया “कि हे शिकारी! मेरे टके भर मामा जो खाई ने तेरा क्या बणना? तू ए कितने कर दिन खाणा? जे तू भिजो छड़ी देयो तां तिजो हऊं चार ऐमियां अनमोन गल्लां दस्म सेह जे सारियां उमरा तेरे कम्मा ओणियां, तू तिन्हां ते नाम पाणा, घन कभाणा। तेरे ही नी बल्कि तेरेयां बच्चेयां वास्ते बी कम्मा ओणियां, इन्हां जाना रियां गल्लां जो सुणी ने शिकारी बड़ा रहान होया। ए पंछी होर ए जाना रियां गल्लां? शिकारिये रे टबरा रे होज ठिकाणे आई गये। तिन्हे पंछी फेरी पिजरे विच बन्द करी दिता कने तिस जो शिकारी बोलणे लगया कि हे जानी पंछी भिजो तेरी गल्ल मंजूर है तू कम्मा ओणे आलियां चार गल्लां मुणा फेरी हऊं तिजो छड़ी देगा। पंछी बोलणे लगया :-

(1) होई बीती रिया गल्ला पर क्या पच्छताणा?

यानी:-सेह जे घटना होई चुकी हो, सेह जे गल्ल बीती चुकी हो तिसा ते सबक तां लेणा चाइदा, पर तिसा पर कदी बी पच्छताणा नी चाइदा।

ए बोली ने पंछी चुप होई गया। शिकारिये जो सुणने री उत्सुकता बधना लगी। तिनी पंछिये जो बोलेया जे हे जानी पंछी तू छोड़ चारे होर तिन्ना गल्लां जो बी दस्म ताकि हऊं तिजो छड़ी देऊं। ए सुणी ने पंछी अग्रे बोलणे लगया :-

(2) सेह जे गल्ल समझां विच नी आओ तिसा पर क्या विश्वास करना ?

(विश्वास नी करना चाइदा)।

हे मेरे प्यारे भाई! सेह गल्ल बात जे समझा विच नी बैठो, तिस पर कदी बी विश्वास देखेयां करदा, नई तां जता लागे।

(3) हत्थे आई री चीज कदी बी छड़णी नी चाइवी।

हे संसारी मनुष्य ! जो जीज परमात्मा तिजो देई देयो तिसा पर ही सतोक्क करी ने तिसा जो ही स्वीकार करेयां । एहा देखेयां करदा जे थोड़िया जो हत्था ते गुआंदा कने भली हत्ये श्रीणे ते रैदी (हत्ये नी श्रीदी) श्रीर दुई पासेयां ते जांदा ।

पंछी फेरी चुप होई गया । जिकारी प्रार्थना करने लगेया जे हे जानी पंछी तू चुप मत हुंदा, बोल्दा जा । तेरियां गल्लां ते मिजो बड़ा आनन्द श्रीआ दा । इस करि ने तू जट पट चौधिया गल्ला जो बी गला ।

पंछी बोलणे लगया कि हे मेरे प्यारे शिकारी देख ! मैं अपने वचनानुसार तिजो तिन्न गल्लां सुणई दितियां । पर चौथी गल्ल बहुत ही अनमोल गल्ल है, तिसा बिचा ते जान चुड़ी-चुड़ी ने पौआ दा । सेह गल्ल इतनी पवित्र है कि इस लोहे रे पिजरे अन्दरा ते या किमी रे बंधना रे अधीन होई ने सेह गल्ल नी सुणई जाई सकदी । इस करी ने पहले तू मिजो आजाइ करी दे तां तिजो हऊं चौधिया गल्लां जो सुणांहां । इसा गला जो सुणी ने तू अमर होई जाणा । सुणने वालेयां तेरेयां बाल बच्चेयां सबी अमर होई जाणा, मरने-जमणे रे अगडे ते छुट्टी जाणा । इस करी ने जे तू सुणने री इच्छा रखदा तां मिजों पहले छडी दे तां हऊं सुणांहा ।

ए सुणी ने शिकारिये पिजरे रा दुराजा खोली दित्ता । पंछी पिजरे अन्दरा ते निकलेया कने जाई ने नेडे ही डकी डालियां पर बैठी गया । शिकारिये फेरी ब्रिती कीती कि हे जानी पंछी तू अपने वचना जो पूरा कर होर चौधिया गल्ला जो सुणा ।

ए सुणी ने पंछिये बोल्या, हे शिकारी ! तू मुख है, अजानी है । ऐसे मूर्खा गें जान सुणाणे रा मिजो कोई अधिकार नी आ ओर ता ही तिजो सुणी ने कोई फल मिलणा । इस करी ने हऊं हुण जांदा ।

शिकारिये फेरी प्रार्थना कीनी कि हे धोखा देने आले जानी पंछी ! तू ए दस्ती जा जे हऊं मुख किया है जिम रे कारण मिजो ऐसा जान सुणाणे रा अधिकार नी है । पंछिये बोल्या:- तिजो मैं तीजी गल्ल दस्मी थी कि हत्यां आई री वस्तु कदी छडणी नी चाहंदी, पर तैं तिसा पर कोई विचार नी कीता, कोई अमल नी कीता श्रीर तेरा कीता है, जे पंछी मारो श्रीर अपनेया बच्चेयां रा पेट भरो । अज्ज तिजो परमात्मे सिर्फ हऊं इक पंछी दिता था । पर तैं हऊं बी छडी दिता । हुण तू दस्स जे अपना श्रीर अपने बच्चेयां रा पेट कम कने भरना । इस रा ए मतलब होया कि तू सिर्फ जान गुणना चाहंदा परतिस जाना पर विचार करने री तू विच लाग नी है । हे मनुष्य ! हऊं ए जाणदा था कि जे तैं जान प्राप्त करी लेआ या इस पर अमल करी लेआ तां तू हऊं नी छडणा यानी मेरा माम खाई ने तू अपना श्रीर अपनेयां बच्चेयां रा पेट भरी लेआ श्रीर मेरी जान जाणी । पर मेरे गुरूए दस्मी रा कि अमली साधू या सच्चा साधू ओ हुंदा सह जे अपने प्राणा री बाजी लगाई ने, अपने प्राणा रा मोह त्यागी ने दुये रा भला करो । मैं अपने प्राणा री बाजी लगाई ने तिजो जान देणा गुरू कीता था । जे तू विच सकल हुंदी तां तू सारी उमर मिजो कैद करी ने जान मुणदा रहन्दा, पर तू विच तां सेह सोचने री लोये नी है इस करी ने तू जान सुणने रा अधिकारी नी है ।

हुण मिजो बी कुछ दिन जीणे रा मौका परमात्मे देई दिता, हाऊ इस मौके जो अपण हृत्पां ते नी छडी सकदा । मैं उस परमात्मे रा धनवाद करदा तिनी जे मेरी उमर बघाई ने राम-राम बोलणे रा मिजो मौका दिता । ए बोली ने पंछी राम-राम करदा होया उड़ी गया कनें शिकारी अपणियां मूर्खता पर सोचदा रई गया ।

---

शब्द	अर्थ
फंग	पंख
तापी ने	फैला कर
झपटैया	उड़ान कर पकड़ा
भंडयां	नीचे (भूमि पर)
छाल	छलांग
भिल्ला	भिक्षा
कोसन	कोशिश

## अक्लबंद नूंह

—बालक राम भारद्वाज

इकी दिनां री गल्ल ई जे इकी गावां च इक आदमी रहंदा था, खरा सिर कड़ पैस आला था। लोक तिम जो साह जी बोलदे थे। पैसा तिस बाल इतना था जे सेह भइसा पड़ेसा रे सारे गरीब गुरबयां रियां जरूरतां जो पूरा करदा था, भाँए म्हीने रा साढ़े बारह रूपये ब्याज ही नैदा था। बोलणे-चालणे च बड़ा मिट्टा कुसी बाहर के ने बी गलाणा होए तां बी बच्चा, कुत्तु कनें याऊ करी ने बोलदा था। कदी कदाई धरमा रा कम्म बी करी दिदा था। पर सिर कड़णे वास्ते ही हुंदा था। ज़मींदार बी बड़ा था पर खेतरा रे कम्मा जो माझी ही रखी रा था। क्या करदा बचारा, अणू जो तां लैणे देणें ते ही बैहल नी आँदी थी। चिट्टा कुर्ता कनें चिट्टी मलमला री धोती लगाई ने होर मल्ले जो लाल प्युले करी ने राम-राम बोलदा होया तां जे कुसी सामियां गे पैसियां मंगणें जांदा ता बस एहा लगदा था जणता प्रोहत ब्याह पढ़ने चली रा हो। पूजा पाठ इतना था जे रोज पैया भ्याणा-संझा घंटी बजाणी, धूप धुखाणा, आरती गाणी कनें मंख बजाणा तिस दा नना नीम था। एह गल्ल जुदी ई जे आरती गादे-गादे बी तिसरा दिन स्थाबां कताबां च फसी रहंदा था।

इक दिन साह जी भ्यागा ही अर्पणिया पूजा पर बैठी रा था कनें तिम री नूंह बाहर मूहण सोल देणे लगी री थी। दिन सिरों गई रा था कि इक साधू-महात्मे आई ने अन्ख जगाई दिती। तिनी बोलेया "धरम सहाई" नूहण अर्पणे लम्मे घूडा विचा तेही बोली दिता, "एयी नी आ भाई"। साधुण बोलेया, "खादे क्या?" नूहण बोलेया, "बाही साही"। साधुण बोलेया, "कल्ला जो क्या?" नूहण बोलेया "तू साही"। एह सुणी ने साधू चली गया।

साह जी तां धूप धुखाई ने माला जपां रे थे, पर इद्रियां अर्पणा ही कम्म करने लगी रियां थियां साधुए, रियां गल्लां री कुछ भिणक तिसरे कल्लां तिकर बी पूजी गई थी। सह सुणी ने ही बजाहगी गया था। भाँए गल्लां ता तिस जो सणहोई गईयां थियां, पर तिसरे पल्ले कुछ बी नी पैया था जे क्या साधुए पुछेया क्या नूहण गलाया। तिनी झटपट पूजा मुकाई कनें राम-राम करदा होया अरग देणे चली पैया। तिस जो इक इक पल कटणा आखा होई गई रा था। तिसरे दिला च एह ई धोल मधोल लगी रा था जे नूहण कनें कुस दी क्या गल्ल होई। इक ता तिसरी नूह, दूए जूझान कनें तीए कोई अरद एही ऊट पटांग गल्ल करी जाओ-एह ही बीज घुण बणी ने तिसरे दिला जो खाणे लगी री थी। जियां कियां तिनी अरग दिता कनें हटी ने अणदेखेयां-ई जलनिया च अरोई ने, गलसीड़ा फुलाई ने नूहण जो हक्का पाणें लगी पैया, "लाड़िए-ओ लाड़ी"। नूह सह जे हुण अन्वर कैतकी लगी री थी, अर्पणे घूडा जो होर लम्मा करदी

होई झट चारें दुराजे ते निकली आई कनें सुणदी होई बोली, "हां जी, क्या बोला दे तुसे ?"

साहू जी जरा झकड़ी ने बोलेया, "तू कनें गल्ला कुण करा दा था ।" नूंह जरा हल्की होई ने बोली, "जी एधी इक साधू जेहा आई रा था" । तिस गिया गल्ला मुणी ने तां सोहरे जो तवार नी होया पर ससें हामी मरी कनें बोली, "हां एधी इक डंडा जेहा गला रा था कुछ की" । जबरे जो कुछ घरेठ जेहा आया । सेह कुछ सान्न हाई ने बोलेया, "ता सेह क्या था गला दा ?" नूंहने बोलेया सेह भिच्छा मंगा था । साहू कुछ आद करदे होऐ बोलेया, भिच्छा ? न तिनी तां कुछ (आद करदे होऐ) होऐ ई बोलेया था स्ववनी जे "धरम हो सहाई" कुछ एहा जेहा बोलेया था ।

नूंह : भिच्छा हां तिनी बोलेया था "धरम सहाई"

सेठ : ता क्या मतलब होया इम दा ?

नूंह : दान पुन करी ने तुसे कुछ धरम कमाई लेआ तां जे लोड भीड़ पोणे पर, घोखे भारी घोणे पर कमाई रा धरम तुसां रा सहाई बणे ।

गल्ल कुछ गम्भीर बणी गई । जबरें री धार्मिक कृति जागी उठी तिनी जरा पोले जेहे मुंहने पुच्छेया,

सेठ : फेरी तें क्या बोलेया ?

नूंह : एधी नी भाई ।

सेठ : इस रा क्या मतलब ?

नूंह : एधी धरमा रे नौआं पर कोई कुछ नी दिदा ।

सेठ : (मत्थे पर त्रयोदां पांदा होया) तिनी फेरी ता नी कुछ बोलेया ना ?

नूंह : तिनी बोलेया, "खांदे क्या" ?

सेठ : इसा रा क्या मतलब ?

नूंह : जे तुसे धरम नी करदे, दान नी देंदे तां तुमे इतने मीर कियां बणे । तुसा रा घर दाइए साही कियां भरोई गया ?

सेठ : तें क्या जवाब दिता ?

नूंह : बाही-बाही ।

सेठ : इधी रा क्या मतलब ।

नूंह : इस रा मतलब होया जे मसे पिछले जन्मां च कीते रे करमा री कमाई खांदें । सह जे मसें पहले धरम कीती रा, तिसरे सहारे अज्ज खरा खांदे कनें खरा खांदे ।

सेठ : फेरी तिनी क्या बोलेया ?

नूंह : कला जो क्या ?

सेठ : इसा गल्ला दा क्या मतलब होया ?

नूंह : इसा गल्ला रा मतलब होया जे पिछले जन्मा च तुसे खरी कमाई कीती थी, बाके करम कीते थे, दान-पुन कीता था, तिस रा फल तां अज्ज भुगता रे,

खा-पीया करदे । पर हुण तुमें दान-पुन करना छडी दिता, तां तुसे कला जो  
(अगले जन्मा च) क्या खागे ।

सेठ : बच्चा फेरी तें क्या गलाया ?

नूह : मैं बोलेया जे, "तू साही" ।

सेठ : इसा गल्ला रा क्या मतलब होया ?

नूह : जो इसा गल्ला रा मतलब होया जे जिया जे सेह साधु अज्ज दर-दर सला  
दा, सबी दे दुराजे अग्रे अपने ठूठें जो अग्रे करा दा तियां ही अगले जन्मा  
च तिस साही असां जो बी सोनी पाई ने मंगणा पोणा ।

जबरा इना गल्लां ते बड़ा प्रभावित होया तिनी अपणियां जनानां जो कणें नूहां  
जो बोलेया जे पेड़ुआं हेठां ते मूही-साही ने जेड़े थोड़े बहुत दाणे कट्टे होण-तिन्हां जो  
भिक्ष भ्याग्रां जो देई देआ करा ।

धरमा री कुछ रीत तां घरा अन्दर चली पैई थी पर जरी बी नूहा रे दिता जो  
सान्ती नी मिली कडयां कर दिना परन्त तिमें पेड़ुआं हैठा ते दाणे सूहें कण पीह कनें तिन्हां  
री रोटी बनाई के इक दिन अपने मोहरे रे मूहां अग्रे रखी ती । पहले ता मोहरा रोटियां  
देखी ने कुछ रहान जहां होई गया पर फेरी बी सह खाणे लगी पेया । इक दो ब्राह  
ही खादे होणे, कि तिस ते हई नी रई होया, तिनी बोलेया, "एह आटा कुनी घराटिए  
पीहती रा"? तुमां ते गलाई ने होया था तिस जो जे ए अन्न रा कुअन्न कुस खाणा ".....  
इतने च समें गल बढी दिती, तिमें बोलेया, नां एहू ता, लाइए, अज्ज आपू पीहती ।  
जबरे बोलेयां कांह घराटी मरी गई रे थे जे कम्म नी कमाणे आओ ता कमाणे ई काजो  
जलेया । कुनी बोलेया था इसा जो आटा पीहणे जो? कुस खाणी हुण एह रोटी? "

नूह कुछ डरी गई पर फेरी की दिल बट्टी ने गलाई ई दिता । जी मैं एहू आटा  
तिन्हां दाणेयां रा पीहती रा, मे जे पेड़ुआं हेठा ते कटे कीती थे " । "तां कांह एडा? कांह कीती ?  
जबरे बोलेया । नूह, जवाब दिता, "ध्याड़ी तिसी साधुए बोलेया था ना जे इम जन्मा रा  
कीती रा दान-पुन अगले जन्मा च मिलदा कनें तांही तुमे बोलेया था जे पेड़ुआं हेठा ते दाणेयां  
सूहीं ने मंगेतेआं जो देई देआ करा । ता जेडा जे असे हुण देंगे तेडा ही अगले जन्मा ने  
असां जो मिलणा । तां हुण गल्ल पक्की होई जे असां जो अगले जन्मा च  
एडे आटे री रोटी खाणा पोणी, अज्ज तुमां ते इस आटे रिया रोटिया दे दो ब्राह नी  
खाई होए तां अग्रे कियां निरभा एडे आटे रिया रोटिया ने । जे तुमे हुण ही एडी रोटी  
खाणे रा सभाव पाई लेंगे तां तुमां जो फेरी मुसकल नी हुणी इस कनी ने हुण तिन्हां दाणेया  
रे आटे री रोटी बनाई ता जे तुमां जो फेरी मुसकल नी हों" ।

मोहरा मुणी ने बड़ा सरमिदा होया कनें बोलेया जे अज्जा ते परन्त भिक्ष भख्याकसां  
जो बांका छडी रा, फडाकी रा नाज देआ करा । इस तरीके ने तिस घरा अन्दर धरमा  
रा बामा होया ।

अर्थ	अर्थ	अर्थ	अर्थ
प्युले	पीले	भ्यागा-संभ्रां	सुबह-शाम
धुखाणा	जलाणा	बाही साही	बामी
अरग	जल चढ़ाना	जबरा	बूढ़ा
पीहणा	पीसना		



## सुतेला पुत्त

—रूप शर्मा निर्वोच

एक भोएँ च इक् रमाकान्त नां दा बाह्यण रहंदा था । सैह बड़ा इ धर्मात्मा था । तिसा इक् पुत्र था तिहंदा ना था चंचल । किछ सालां परन्त चंचले दी मां मरी गई । चंचल छोटा इ था । रमां कान्ते दूआ ब्याह कराई लिया । दूई जनानां बड़े तिबे सभावे दी थी । तिसा दे किछ सालां परन्त तिन चार न्याणे होई गये । सैह अपणे न्याणियां जो तां कणका दी रोटी दिन्दी थी कने चंचले जो बूरे दी रोटी पकाई देणी । थोड़ियां दिनां परन्त रमा कान्त बि मरी गया कने तिम ते परन्त मैह चंचले पर होर जल्म लगी पई ढाणा । तिनां सै इंगरियां चारना भेजी देणा कने तिम जो बूरे दी रोटी भेजी देणी ।

इक दिनां ऐकलू पकाए कने अपणियां न्याणियां जो खुआई दिते । तिसा दिया कुड़िया इक् ऐकलू लुकाई चंचले जो देई दिन्ता । चंचले सैह ऐकलू जमीनां च दब्बी दिता । थोड़ियां दिनां परन्त मैह जमी पिया । किछ दिनां परन्त तिसा ऐकली ऐकलू लगी पये । चंचले रोज ऐकली पर चढ़ी नै ऐकलू खाणे कने बूरे दी रोटी गाई जो खुआई देणी ।

इक दिन चंचल ऐकली पर चढ़ी करी ऐकलू था खा दा तित्थ इक् राक्षणी बुढ़ी आई बोलणां लगी बच्चा मिजो बि ऐकलू खुआई दे । तिनीं इन्कार कीता । तां जे बुढ़िए बड़ा इ जोर पाइया तां चंचले उपरे ते इक् ऐकलू मटी दिना लगी बोलणा बस्ता जे तू देणे तों थल्ले आई करी देह । सैह भनि गिल कन थल्ले आई करी देणा लग्गा । बुढ़िए झट सैह चुकिया कने झोले च पाई लिया अगों जाई करी बुढ़िया झोली रखी दिस्ती कने गोहटियां लगी पई चुकणां । चंचल झोले बिच ते रड़ाया कने बोलणा लग्गा आई मिजों कहडू लिया कने बिच पत्थर भरी दिया । तिनां लोका सैह कहडू लिया कने बिच पत्थर भरी दिते । तां जे बुढ़ी घरे पुजी तां बिच पत्थर निकली सैह बड़ी दुखी होई ।

कईयां दिनां परन्त सैह बुढ़ी फिरी आई कने चंचले ते ऐकलू मंगे । सैह बोलणां लग्गा चल खसम खाणी कफे कुटणी तिहाड़ी बि मिजो झोल च पाई नै लेई गियो थी । बुढ़ी लगी बोलणां न भोए बच्चा सैह मरी रंड कुण थी मै नि ऐ सैह । चंचले दे दिने च दया आई गई सैह बुढ़िया जो ऐकलू लगा देणा कने बुढ़िया झट चुकया कने झोले च पाई लिया । लगी बोलणा जे बच्चा हण निकल कियां निकलदा हण । हण तां लूण लाई नै कने तली नै खागी तिज्जो । बुढ़ी तिजो घरे जो लई गई ।

घरे जाई नै बुढ़ी अपनी धीया जो लगी बोलणा बच्चा तू कड़ाइयां च तेल गर्म कर कने इहदे टुकड़े टुकड़े करी नै तली सट । तां जे बुढ़ी चली गई तां तिसा दी थी तिसा

जो पृच्छणा लगी कि भई नेरे बाल लम्मे कियां होइयो । चंचल बोलिया तिज्जो खरे लगा दे । तां तितां बोलिया हां । तिन्नी बोलिया मेरिया मेंऊ ऊखलीया च पाई नैं कुटियां । तिनां कुड़िया बोलिया मेरियां बि कुटी नैं लम्मियां करी दे । तिनीं कुड़ियां दा सिर उखलिया च पाइया कनै झट पट ऊपरे ते मारियां कुड़ी मरी गई । तिन्नी सिंह बहड्डी कनै तली सटी अपु उसा कुड़िया दे कपड़े लाई लए । तां जो बुड़ी आई ता बोलणां लग्गी बच्चा तली सट्टिया तां सिंह बोलणां लग्गा हां । बुड़ी खाणा लग्गी कनै बोले बड़ा भारी सुआद रो लग्गा दा । लाई पी नैं सै चंचले जो बोले बच्चा मेरें मिरै जू तां दिख । तिनी बोलिया उसा रिड़िया परे जो चल ओयु दिखदा ऐ चली नैं । बुड़ी चली पई । तिनी रिड़िया पर बठाई बुड़ी कनै थक्का दीई दित्ता । बुड़ी थल्ले पई कनै मरी गई । चंचल मजे नैं घरे जो आई गया ।

शब्द

तिखे  
न्याणे  
सटी दित्ता  
रड़ाया  
खांगी  
धीया  
बहुी  
रिड़िया

अर्थ

तेज  
बच्चे  
फैव दिया  
चिल्लाया  
खाऊंगी  
लड़की  
काटी  
ऊंचाई

## अपणां अपणां भाग

—रूप तर्मा निर्वोच

इकी राजे दियां छे राणियां थीयां । तिनी इक बरी इकी जंगने च राक्षशा दी सोहणी कुड़ी दिखी कर्ने तिसा नै व्याह करणे दी चाह प्रकट कीती । राक्षस बड़े खुशी होये कर्ने तिसा तिसा कुड़िया दा व्याह राजे नै करी दित्ता । ता जे सहे व्याह कराई नै राजे दै घरे पुज्जी ता तिसां जो मास खाणे दा ढव था । तिसां राजे दे घोड़े कर्ने होर माल खाणा कर्ने लहु राणियां दै मूहें लाई देणा । इक दिन राजे पुछिया तां बोलणां लगी सैह राक्षणी राणी भई तुहाड़ियां छे राणियां खादियां जे झूठ ऐ ता दिखी लिया तिसां दै मूहें खून लगिया । तां जे राजे दिखिया तां सचमुच ड खून था लगिया । राजे जो बड़ा क्रोध आइया कर्ने तिन्नी छेओ राणियां मुक्के खूण च तुआरी दितियां । तिसां सारियां दै न्याणे होणे थे । सह बयेग राजे जो गनाई रियां पर राक्षणीयां दा जादू तेजथा ।

ता जे सहे छे राणियां खूण च तुआरी दितियां ता तिसां दै बारी-बारी न्याणे टांग तिसां सै न्याणे बढे कर्ने बण्डी करी खाई लग । छोटी राणियां दै न्याणा (मुन्डु) होइया ता तिसां तिस जो बढणे नै इन्कार करी दित्ता । तां सैह बाकी दियां राणियां बोलणां लगियां तू जेहड़े सारे न्याणे खादियां तिसां देह । तिसां राणियां सैह लुकाइयो थे सैह झट कहहु कर्ने देई दित्ते ।

सैह मुन्डु हुंदा हुंदा बड़ा होई गया । तिस जो गुआलूण बाहर कहडणां कर्ने तिनी फिरता तुरता कर्ने संझा जो फिरी तुआरी देणां । इक दिन राजा तिस पास आइया तां तिनीं तिस मुन्डुण जो पुछियां तू कुम दा मुन्डु ऐ तां तिनीं बोलिया राजे दा । राजा हेरान हांठया कर्ने राक्षणी राणी घबराई गई सैह बोलणां लगी एह नि होई सकदा जे एह राजे दा मुन्डु ऐ तां मेरियां प्योकियां दे बागे बिचा इक नार लिया । सैह मुन्डु चला गया । तां जे सैह गांठ पुज्जा तां इक साधू था बैठिया तिस पर जाड़ बूटे थे जमियो । तिनी मुन्डुण सहे पुट्टे कर्ने तिस दी मेवा कीती । तिनी साधूण बोलिया बच्चा भंग क्या भंगदा ऐ । तिनी सारी गल मुणई दित्ता । साधूण बोलिया लै मै तिज्जो तोता बणाई दिदां हां तू दोड़ी नै जा कर्ने नार मुहें च पाई करी लई आ । सैह गया कर्ने लई आइया । तिस दै पिल्ले राक्षस दोड़े ता झट साधूण नार तिस ते लई नै लत्तां धले लुकाई लिया कर्ने तिस जो मक्की बणाई दित्ता तां जे राक्षस दिखी नै चले गये ता सैह नार लई नै महलां देणा गया । राक्षणी राणी मोचणजा लगी एह बच्ची नै किहां आई गया तिसां बोलिया जा अछा जे तू राजे दा मुन्डु ऐ तां मेरियां प्योकियां दिमां मेरे पिजरे लिया सह चला गया ।

फिरी सह तिस साधूण बल जाई रिया कर्ने सारी गल सुणाई दित्ती । साधूण बोलिया तू जां बा इ राक्षणीयां दी माऊ जो बोलियां नानी नानी मै आई गया बस तिसां सब अपु

दसी देणां ऐ । सैह चला गया । तिनीं तियां इ कीना । तिस दी नानी खुज होई कनै तिस जो बोलणा लगी बच्चा एह पिन्जरे हन एह मेरा एह तेरिया माऊ दा कनै सबनां दे । दसी दिते । कनै एह चक्की ऐ इसा जो पुट्टा फेरन तां घसां सब मरी जावे । तगं जे तिहदी नानी पाणिएं जो गई तां तिनीं सैह चक्की पुट्टी फेरी दित्ती । सैह सारा इ टबर मरी गया । तिनीं पिजरा चुकिया कनै घाई गया ।

तां जे सैह पिजरे लैई करी महलां गया तां सैह बड़ी हेरान होई भई एह कियां लई घाइया । राजा बड़ा खुशी होइया राक्षणी राणी तिहजो खाणा दौड़ी । जियां इ सैह दौड़ना लगी तां तिनीं मुन्डुए राजे साहमणें तिम पिन्जरे दी इक लत मरोड़ी दित्ती । सैह इकी लता दै भार दौड़ी तिनीं सैह बि मरोड़ी दित्ती कनै होले-होले सारी मरोड़ी दित्ती । राजा दिखदा रिया एह सब क्या ऐ । तिनीं मुन्डुए सारी गल मुणाई दित्ती । राजे मुन्डु गलै लाई लिया कनै जट राणियां खूए चे ते बाहर कढाई लैइयां सबनां जो लई करी घरे जो चली पिया ।

#### शब्द

मुक्के  
बधेरा  
लुकाइयो  
होले होले  
जट  
पुट्टी  
टबर

#### अर्थ

सूखे  
काफी  
छिपाए हुए  
धीरे धीरे  
जल्दी  
उल्टी  
परिवार

## सच्ची साधना

—रूप शर्मा निर्दोष—

इक राजा था तिस दिशां सन राणियां थीयां । कई जनन करणे दे परन्त बि राजे  
दे घरे कोई बच्चा नि होइया । राजा मोचदा था जे इक मुन्हु बि होई जांदा तां मेरा  
खानदान तां रहंदा । राजा रात-दिन इसी फिकरे बिच सुकदा रहंदा था । जिम बेला  
राजे दी सोच गहरी होई गई तां राजा कमजोर हुंदा गया । राजे दी कमजोरी दिल्ली  
करी राणियां बि बड़ी दुखी होई गइयां । तिन्हां मोचिया जे राजा एयां इ दुखी गिया तां  
हो न हो इक दिन भ्रमां जो छुड़ी करी न चला जाणे । तिन्हां राणियां इक दिन अपु  
चै गलोई फैसला कीता जे झूठ मूठ इ राजे दा दिन रखणे जो एह गल फनाई दिनी  
जाए जे छोटियां राणियें दे न्याणा होणा ऐ । होई सकदा जे राजे दा दिन पकड़ोई जाए ।  
तिन्हां एह गल फनाई दिनी मुणी नै राजा बड़ा खुशी होइया । राजे दे चेहरे दा  
रंग दिन प्रति दिन बदलोणां लगी पिया ।

ठीक नौ महिनीयां ने परन्त तिन्हां राणियां खबर फनाई जे राणियां दे मुन्हु होइया ।  
राजे दी खुशिया दा कोई ठकाणां नि गिया । तिन्हीं पण्डित सदिशा कनै तिस जो  
मुन्हुए दे ग्रह दिखणे जो बोलिया जिम बेला पण्डित अन्दर गया तां राणियां पण्डित  
सदिशा कनै तिस जो मारी गल समझाई करी बोलिया जे तू राजे जो झूठ मूठ बोली  
दे जे 18 साल ताई तै मुन्हुए दा मुह नी दिखणां जे राजे जो मुन्हु कइया ऐ ।  
पण्डित बि मनी गया कनै राणियां तिस जो मता मारा नाम दिना कनै बोलिया जे एह  
राज कुमी जो पता नि चलणां चाहिदा ।

दिन गुजरदे गए । हुन्दे हुन्दे अठारा साल बीती गए तां राजे पण्डिते जो गदी करी  
बोलिया जे मुन्हुए दी कइमाई करी आ । पण्डित कइमाई करी आइया कनै आई नै  
राणियां जो पुछिया जे हुण क्या करनां । राणियां बोलिया तुमां कोई फिकर मत करा  
कने राजे जो बोलिया जे जिस बेला ताई मुन्हु ब्याह कराई नि आगा तुमां सेहरा नि  
दिखणां ऐ ।

मुन्हुए दे ब्याए दा दिन आई गया । राणियां इक आटे दा छैल बत बणाई करी  
पालकियां च बठाई दिता कनै पण्डिते जो बोलिया जे लोकां जो गलाई देणां कोई जनेती  
जा आदमी लाडे दे सेहरे नि दिखगा । जनेत चली पई कनै इकमी राती इकी जंगले  
बिच पड़ा पाई दिता । तिस जंगले बिच इकमी जग्गा नागां दी सभा थी होआ करदी ।  
तित्थु नाग राजे दा लइका नागणु राज बि था बैठिया । जिस बेला जिनी पालकिया  
बिच आटे दा बत दिखिया तां अपणे पिता जो बोलणा लगा "पिता जी किनै दुखी हन  
एह लोक बिना बच्चे ने जे इन्हां आटे हा लाड़ा बणाया । पिता जी जे तुमां

इजाजत देण तां में थोड़ियां दिनां ताई इन्हांदा पुत्र बणि जांदा भ्रां कनै घुमी फिरी बि भ्रांगा । तिस दै पिता ने इजाजत देई दित्ती । नागणु राजे अट पट तिस बुते दे कपड़े पहनें पालकियां च बैठि दिया । जिस बेला कहारां दिखिया तां बड़े खुशी होई गये ।

व्याह होइया कने राज कुमार व्याह कराई नै राज कुमारी व्याही नै लैई आइया । पिछे राणियां प्रण था कितिया जे राज कुमार व्याह कराई ने आई जांगा तां भना कोठे परा फुल बरसांगियां कनै भेद खुली जांगा तां सबनां भ्रसों छाल मारी करी मरी जांगा ऐ । जिस बेला तिनां बाजा गाजा बजदा कने पालकियां भौन्दिया दिखियां तां सह बड़ी खुशी होइयां । तिन्हां फुल बरसाए कने बड़ी खुशियां मनाइयां ।

जिस बेला राज कुमार आइया तां तिनी भ्राई द आपणे पिता जो बोलिया जे भरे ताई बखरा महल पुआई दिमा कनै कोई तित्थु न भोगे । राजे एह गल मनी लैई कने बखरा महल पुआई दिता । तित्थु कड़ा पहरा लाई दिता जे इत्थु कोई न भोगे ।

दिन बीतदे गये । जिस बेला नागणु राजे जो गियो मने दिन होई गये तां तिस दे पिता जो याद आई कनै तिनीं दो गोलिएं सदियां तिनां जो बोलिया राज कुमारे जो ऐसे तरीके नै जेना कराणां जे कुमी जो पता नि लवै । पहनें इक गोली राज कुमारे दिमा महलां गई तां दरबानां जो बोलणां लगी जे बच्चा मै राणी दिखणी कदेई हुंदी । दरबाना बोलिया राजे दा सस्त हुक्कम ऐ अन्दर कोई नि जाहंगा । तां जे तिनां गोलिया बड़ी अड़ी कीती तां इक दरबान बोलणां लगा जरा जाणें दे इनां क्या करी देणा राणियां जो । सैह अन्दर गई तां राणियां जो बोलणां लगी जे आपणे राजे ते पुछिया जे तुमां दी जात क्या ऐ ? सैह गलाई नै आई गई । संभा जो राजा सकार खेती करी आया तां राणी पुछणां लगी तुमां दी जात क्या ऐ ? राजे बोलिया फिरी कदी दमने कनै बाहर आई दरबाना जो पुछिया जे अन्दर कुण था आइया । तिनां बोलिया जे इक बड़्ठा थी बोर्न मै राणी दिखणी । राज कुमार गुम्मे च आई करी तिन्हां जो बड़ा मारिया ।

थोड़ियां दिनां परन्त दूई गोली फिरी आई तिन्हां बि दरबाना जो पुछिया जे मै राणि दिखणी । दरबाना बोलिया जे चल नठ राणियां दिखने दी बच्ची तिहाड़ी बि पता नि क्या गलाई गइयो साजो राजे ते मार पुआई दित्ती । गोली बोलणां लगी न बच्चा मै नि ऐ सैह । सैह पता नि कुण थी । इकमी दरबान जो तरस आइया कनै तिन्हीं अन्दर भेजी दित्ती, अन्दर जाई करी सैह राणियां जो बोलणां लगी जे भला आपणे राजे ते जूठ तां भगियां साणे जो कदी तिनीं जूठ बि दित्ती । राणी बड़ा हैरान होई तिन्हां बोलिया जूठ तां मिजो कदी बि नि दित्ती । अज संभा जो आहंगे तां जूठ भंगणी ऐ ।

संभा जो राज कुमार आइया तां सैह पई गई पिछे जे मिजो जूठ दिमा तुमां भरे कदेए पति हन । राज कुमार सोचनां लगा एह गोलियां जरूर भरे पिता नै भेजियां होणिया हन मिजो जाणां चाहिया । सैह सोचनां लगा जे जूठ कियां बियां भरे अन्दर तां जहर ऐ । तिनें राज कुमारियां जो बोलिया चल कल तिज्जो प्योकियां दै छुड़ी भ्रीमां तित्थु

जूठ दिगा । पर खरा एह ह ऐ जे तू जूठ मत मंगै । राज कुमार दा बि तित्यु दिल था लगी गया तिसा दा दिल बि जाणें जो नि था करा दा पर सहे मजबूर था । राणी जठ मंगणे जो मजबूर थी करा दी ।

दूऐ दिन प्योकियां दे बली पण । राणी पालकिया च कनै राजा धोड़े पर । राज कुमार दा दिल बि बड़ा दुआस था । सैह बार-बार राणियां ते पुछें भाई जूठ मत मंगै पर सैह नि मन्ने । जादे-जादे सैह इकसी दरयाए पर जाई रेए । तित्यु राज कुमार बोलणा लम्मा में न्होई लैदा आं । सैह न्होणां लगी पिया । राज कुमार फिरी पुछिया—अज बि जूठ मत मंगै । पर राणी नि मन्ती । राज कुमार इक चुभी मारी कनै बड़ा भारी नाग बणी नै पाणिये पर तरिया रती क मुहमा कनै आखी ने आसन होई गया । राणियां दिखिया तां सोबिया नाग मेरे पतिये खाई लिया ।

कहारां पालकी चुकी कनै तिसा जो प्योकियां दे छड़ी आए । तित्यु जाई करी राज कुमारी पतिये दे बियोगे च पागल होई गई । सैह चुरसने पर बैठी करी आदियां जादियां लोकां जो पुछणा लगदी जे तुसां मेरा पति बि दिखिया मने हसी करी चला गया । में हुण जूठ नि मंगदी ।

इक दिन सैह बैठियो कनै इक गुआला आइया सैह तिसा ने पुछणां लम्मा तुसां मेरिया गाई ता नि दिखियां तां सहे राज कुमारी बोलणां लम्मी तै मेरा पति ना नि दिखिया । गुआला बोलणां लम्मा जे भिजो तेरा पति मिलगा तां में दमहगा तिजो मेरियां गाई मिलगियां तां तू दमी दियां । तिन्हां अपणे पति दियां सारियां पछाणा तिहजो दसी दिस्तियां ।

जांदा-जांदा सैह गुआल इकी बण बिच गया तां तिम जो रान पई गई । सैह इकसी बड़ी पर चढ़ी गया । तां जो अभी रान होई तां तिसा बड़ी थल्ले ली बली । ताहली इक आदमी झाड़ू मारनां लम्मा । इकसी पाणी छिड़किया इकसी गलीचे बछाए कनै फिरी तित्यु बड़ी बड़ी मठियाय्यां रकोई गइयां । फिरी क्या होइया जे किछ नाग आए बचाह सैह नाग ये कनै बड़ी थल्ले आई नै आदमी कणी गये । तिनां तित्यु बैठी करी मठियाइयां खादियां कनै इकसी जनाना नृत्य किता । बड़े नाग राजे दे खबै पास बैठियो नागे पर नजर गई तां सहे गुआला बड़ा हैरान होइया । सहे सोचना लगा । एह तां सहे ह राज कुमार ऐ जेहड़ा तिसा राज कुमारीया दा पति ऐ । तां जे अयाग होणां लगी तां सहे सब छपन होई गये ।

सैह गुआला उठिया कनै जाई करी राज कुमारीया नै सारी गल बसी । सैह राज कुमारी बि जाई करी तिसा बड़ी पर बैठी गई । तां जे अर्धो रात होई तां सहे कार्यक्रम होइया तां जे तिसा दी नजर अपणे पतिये पर पई तां तिसा दियां आहसी छम-छम बरसी पियां । सैह बिलकुल अपणे पतिये ते सिधि उपर थी बैठियो । जिसा दिमां आहसी दे अयरू तिसा दे पतिये दे हत्ये पर पये । तां जे तिन्हां ऊपर दिखिया तां राज कुमारी पछाणी लई । तिनीं तिसा जो परां चलणे दा इशारा कीता । सैह बड़ी परा

उतरी कनै थहलै जाई रई । सैह राज कुमार बि तित्थु पुजी पिया । राज कुमारियां दिख सुण किछ नि कीती कनै राज कुमारे जो जपफी पाई दिसी कनै इ बिलखी-बिलखी नै रोई पैई बोलणा लग्यो तुमां मिजो छड़ी करी कंह चले आए मै जूठ मंगी मेते बढी गलती होई । तां राज कुमारे सैह समझाई बोलिया रोई नै किछ नि बणना हुण तिजो पता लग्या मै तिजो जूठ कंह नि था दिया दा । मै नाग हां । मेरे अन्दर जहर । राज कुमारी बोलणां लग्यो—तां मिजो बि नाग बणाई दिया मै तुहाड़े बगैर जिदी नि रई सकदी कंह तां तुमां मेरे नै चली पोआ । हण मै कोई अड़ी नि करह्यो ।

“एह नि होई सकदा राज कुमारी पर मै तिज्जो इक तरकीब दसी सकदा” राज कुमारे तिसा जो समझाया ।

‘सैह क्या ?’ राज कुमारी कथांसियां आहखी निस बखीं दिखिया ।

“सैह एह भई जो किछ प्रबन्ध तै अज साड़ी इसा सभा दा दिगिया कल तूं नारा एह कर कनै इस ते बि बधी नै कर । फिरी मेरे पिता नै खुश होई पुछणा जे एह कुहनीं कितीया कनै तिज्जो दो बचन देणें । जेहड़ा तै मंगणां हुंवा मंगी लियां ।” राज कुमारी खुशी होई कनै अछा गलाई ने धरे जो चली गई ।

दूएँ दिन सारा प्रबन्ध राज कुमारियां बड़े अच्छे तरीके नै कीता । बड़े-बड़े अच्छे गलीचे बछाए । बड़े-बड़े खाणे आले व्यंजन वणाए । एह सब करी नै राज कुमारी बड़ी पर चढ़ी गई । नाग राज एह सब दिखी बड़ा खुशी होइया कनै तिनीं बोलिया जिनी बि एह प्रबन्ध कितीया सैह साहमणे औए । राज कुमारी उतरी कनै माहमणे जाई रई । नाग राज बोलणां लग्यो असै बड़े खुशी हन बेटी मंग क्या मंगदी ऐ । राज कुमारी बोलणां लग्यो महाराज तुमां क्या दीई सकदे ? जो किछ मै मंगणां तुमां नि देणां । नाग राज बोलणां लग्यो नही तू दुनियां दी कोई चीज मंग असां दिगे । राज कुमारीया जट राज कुमारे पर हथ रखी दित्ता कनै बोलिया मिजो एह चाहिदा । नाग राज बोललाई गिया बोलणा लग्या एह तां मेरे कलेजे दा टुकड़ा ऐ तूं किछ होर मंग । तां राज कुमारी बोलणां लग्यो महाराज एह मेरे सिरा दे ताज हन कनै तिनां सारी कहाणी सुणाई दित्ती । नाग राज जो मजबूर होणां पिया । तिन्हां बोलिया—बेटी असै तेरी सच्ची साधना दिखी करी बहुत खुश हन तैह तूं मूहए परांह कर । नाग राजें राज कुमारे दे गले च मुच्च मारिया कनै सारा जहर कडी करी बोलिया तैह बेटी अजे ते इस कनै साड़ा रखता खत्म । तिन्हां दूई नाग राजे जो प्रणाम कीता कनै खुशी-खुशी अपने रस्ते चले गये । सदा बासते इक दूए दे बणी करी ।

शब्द

जतन

तिहाड़ी

ताहली

अथरू

तिस बखी

अर्थ

यत्न

उस दिन

उसी समय

आंशू

उस की ओर



## गोकरण होर धुन्दकारा

—देवराज शर्मा

किसी जगा किसी जमाने च इक ब्राह्मण कने ब्राह्मणी रहयां थे । तिहनां गे होर तां सब कुछ था पर संतान नी थी । इस करी के स्यो अप्पू तां उदास रहयां ई थे पर लोक ताहने मीहणे लगाई के तिहनां रीआ उदासिया जो होर बचां थे । लोग तिहनां जो ओत्तर बोलां थे । ब्राह्मण तां चलो परवाह भी नी करदा था पर ब्राह्मणी बड़ी जलहं थी जे लोग घमां जो ओत्तर बोलाएं । उमर बी हल्ला तक तिहनां री खास नी थी हुई री । इस करी के ब्राह्मणिए ब्राह्मणा जो बोल्या, "तुह भोएं कुछ कर, मेरे पुत्र हूणे रा इंतजाम कर—कोई बूटी त्याघो, किसी साधु ने जाह-पर घरा जो ताहीं घायां तां जे मेरे पुत्र हूणे रा इंतजाम करी के ओहगा ।"

ब्राह्मणा बचारे जो मुश्किल फसी गई । तिने दो-चार रोटियां गठी बहन्नी होर चली पया किसी किनारे । जांदा जांदा सँ डकी बाई रे किनारे बैठया—बड़ी रमणीक जगा थी । तिने तिथी रोटियां रा टुकड़ खादया, पाणी पिलया कने बाई रे किनारे बैठी गया । तिथी तिसरी जरा कर हल लगी गई । तां जे सँ मुत्ती रा उठया, तिने अपणा समान चक्कया होर घगो चलणे लगा । हल्ला तिने दो कदम बी नी थे पट्टी रे कि इक साधु ओंदा मुसूया । सँ फेरी हटी गया कने साधु रेयां पैरें पई गया जे इहां इहां तिसरे कोई ओलाद नी ई, लोक तिस्रो तंग करां ए । साधु ने तिने ओलादी रे खातिर फल देणे री प्रार्थना किती । साधुए बोल्या जे तिहनां रीया किस्मती च पुत्र नी आ । जे फल देई के होई गया, तिस स्यो बड़े तंग करने । ब्राह्मणे बोल्या जे कुछ बी हो, मैं फल देई देयो । साधुए ब्राह्मणा जो फल देईता कने ब्राह्मण फला जो लई के खुशी-2 घरा जो आई गया ।

तिने घरें आई के फल ब्राह्मणीया ले देई ता कने तिसा जो सारी गल्ल बात बी सुनाई दिती मैं जे साधुए दस्ती री थी । ब्राह्मणीए पहले तां फल खाने लाया पर फेरी तिसा जो ख्याल आया जे बच्चा रहणे ने 10 महीनेयां तक तिमो पेटा च चक्की रखो, फेरी तिसरा गुह-मुत चक्कणे पोणा—सँ कुण फसो मियापे च । तिथी तिसारी इक बहण बी आई री थी तिसारे ताजा ताजा ई गर्भे ठहरी रा था । तिसा कने ब्राह्मणीए सारी गल्ल बात किती । तिसे सलाह दिती, "बहणी तुह एहड़ा करजे इस फला जो तू अपणीयां गाई जो खुभाई दे । मेरे बच्चा हूणा, तिस हउ तेरे ले पुज्जाई; देहगी—मेरे घगो ई बचेरे ऐ । तुह पेटा गुहड़ बहल्लणे शुरू करी देणे, घ्याड़े जे मेरे बच्चा हूगा, तिस्रो हऊं तेरे ले चुपचाप पुज्जाई देहगी । तुह गुदड़ा खोहली के सारे दस्मी देखां जे भई तेरे बच्चा हुई गई रा ।" ब्राह्मणीया जो एह गल्ल पसंद आई गई । तिसे तेहड़ा ई कित्या फल गाई जो खुभाई ता कने तिन्नां महीनयां बाद पेटा थोड़े थोड़े गुहड़ बहल्लणे शुरू करी ते ।

उत्पका तांजे तिसा रीआ बहणी रे मुल्ल हूआ, तिसे चुप चाप अपणे मालका ले तिसा ला लो भजुभाई ता । ब्राह्मणीए बोली ता जे तिसारे मुन्डु हुई गया । मंगल गाए गए, बघाईघां मिलीमां । लोके तिहनां जो ओत्तर बोलणा बन्द करील्या । मुन्डु बड़ा हुणे

लम्बा पर तिसरीआ हरकतां एहड़ियां बी जे सारा भई सै दिन ब्राह्मण ब्राह्मणया जौ इकी मिठां रा बी बैठणे रा टैम नी देंदा था—सारा दिन नेरा ई नेरा करदा रह्यां था । इस करी के तिसरा नामों तिहने धुन्दकारा रखी दित्या ।

थोड़ेयां दिनां ते बाद गाई रे भी डक बच्चा जम्म्या, तिसरा मुंह आदमीआं रा था होर भारी गाई रा । तिसरा नामों गोकरण रख्या गया ।

धुन्दकारा जिहां जिहा बड़ा हूँदा गया, तिसरी या हरकतां खराब हुंदियां गईआ । सै शराबी, कबाबी, होर रण्डीबाज बणी गया । तिसरीआं हरकतां तां ब्राह्मण ते नी सही हो तां तिने तिस्रो रोकणे री कोसस किती पर धुन्दकारे सै बी पिहणा शुरू करीता । ब्राह्मण बेचारा इहनां गल्लां जो सहन नी करी सकक्या होर तिने गमा च प्राण ई छुट्टी दित्ते । ब्राह्मणी बी थोड़ेयां दिनां बाद अगले रस्ते पई गई । हुण धुन्दकारे रे खूहल हुई गई तिने पंज सत रंडा रखी लयां होर ऐशां करने लग्या । पर आखर ब्राह्मण रा कमाई रा धन कितने कर दिन चलणा था । सै छोड़ ई स्वतः हुई गया । हुण तिसरा गुजारा चलणा मुश्किल हुई गया होर तिने चोरी करना शुरू करीती । हुण तिसरा गुजारा चोरिया रे माला कने चलणे लग्या ।

पर तां जे सै दिन भर फक्ती ई हुन्दा गया तां तिसरीणं जनाने मोच्या जे इक तां इस मुए ले हुण खाणे जो कुछ नी रहया दुज्जे इस किमी दिन अमे चोरिया रे मुकद्दमें च फसाई रखणियां । स्यां असल बिच थी तां कंजरीआं । तिहने, तिसरे छुटकारा पाणे री गल्ल सोचणी शुरू करीती । इक दिन तिहने मारिएं जणिएं स्कीम बनाई जे राती इस्सो भारी दित्या जाओ । तांजे तिस्रो निन्दर भाई गई तां स्यो सब जणियां कठी हुई होर तिहने तिस्रो सबनी किनारियां ते मंजे पर दबाई दित्या । पर फेरी बी संह जोरा ओला था । सै नी मरया । तां इकी तिसरे मुहां च बली रा म्याल ई तुही ता होर तिस्रो मारीत्या । फेरी कमरे अन्दर ई खड़ा खुणी के तिहने तिस्रो दबाई दित्या होर अप्पू नहठी गईआं ।

हुण सै प्रेत जुणी च पई गया होर सुपने च रोज गोकरणा जो नजर आओणे लग्या । गोकरणे तिसने पुच्छ्या जे तुंह कांह मेरे ले आओआं—पहले तां तु मेरे ने गलांदा बी नी था । तिने बोल्या जे हज बेगता मरी राम, तुंह मेरा भाई आ । तुंह मेरा कर्म धर्म कर होर मिजो भागवत करी के सुणा । तां मेरा कल्याण हुणा होर मांह प्रेत जुन्नी ते छुटी जाणा । गोकरणे तिसरा कर्म धर्म बी कित्या होर तिस्रो भागवत बी सुणाया । सै प्रेत जुन्नी ते छुटी गया होर बैकुण्ठा जो चली गया । इहां गोकरणे धुन्दकारे री गति किती ।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
गट्टी बहल नी बाई	गांठ से बान्धी बावड़ी	मयाल	जलती हुई लकड़ी
सुझया	दिवाई दिया	खुणी के	खोद कर
जिहां जिहा	जैसे जैसे	नठी गईयां	चली गई
बनीरा	जलता हुआ		

## नटराजा रा खेह्ल

किसी जमाने की गल्ल ई—इक बड़ा विद्वान राजा राज करा था । तिम ले कई किस्मा के लोग आभोग्रां थे—सै सभनी रा बड़ा आदर सत्कार करा था कने हरेकी रे गुण जो जाणने की कोसम करा था । इक दिन इक नटराज अपणीया नटणियां सीगीं तिमरे राजा च आया । राजे तिम ले अपणा खेह्ल दम्पणे की फरमाइश कित्ती । नटराज खेह्ल दससणे जो तां तैयार हुई गया पर तिन राजे ले इक शर्त रखी दित्ती जे भई खेह्ल दसदे दसदे जो तिसो कोई घाटा बाधा हुई जाओ तां तिमरीआ नटणीआ जो, मै जे बड़ी ई खुबसूरत औरत थी, कोई आंच नी ओणे पओ कने तिमारी पूरी जम्मेदारी राजे ले रही—एहनी हो जे राजा अप्पू ई तिसा रे धर्मा जो छोण करने की कोसम करा । राजे तिसो इस बारे च पूरी तमल्लली दित्ती होर अपणा खेह्ल दसणे जो बोल्या ।

नट् जो नटराजे अपणा खेह्ल दम्पणा शुरू करी दित्या । मै डग डग डीरू बजाणे लग्या । थोड़ीया देरा ते बाद मै डीरू बजांदा बजांदा-थोड़ा-थोड़ा धरती ते उठणे लग्या होर धीरे-धीरे आस्माना च गायब हुई गया । सब हैरान हुई गए । कुछ देरा बाद पहलें खूना कने मंडी रा इक बाजू पया, फेरी दुज्जा, फेरी जहूणा होर बाद च सारा धड़ ई । तिसो देवी के नटणी रोणे चिल्लाणे लगी—तिसे तिमरा शरीर कट्टा कित्या होर राजे जो बोल्या जे चन्पणा की चिता जला कने मै बी डम मोगी सती हुई जाणा । राजे जो बड़ा अफसोस हुआ पर तिन नटणिया रे बोला मुताबिक चिता चणाई ती । नटणी नटा सीगीं सती हुई गई । राजे तिमारा रस्मा रे मुताबिक दाह संस्कार कराईता ।

पर चिता जली रिश्ता जो हल्ली थोड़ी ई देर हुई थी कि नट हत्या डीरू लई के राजे रे हाजिर हुई गया । राजा होर मारी जनता अचम्भे च पई गए । नटराजे ते अपणीआ नटिया जो मंगे पर राजे तिसो सारी गल्ल बान सुणाई ती जे नटी तां जली गईरी पर नट कित्थी मन्नो । नटे बोल्या जे राजा तु बेईमान आ । मेरी नटणी बाकी थी होर सै तै अपणे महलें छुवाई लई । राजा बोले जे सै महलां की तलाशी लई सकाहुए । नट सारीआ जनता सीगीं महले गया होर नटणी तिन राजे रेयां महलां ते कडी ती । राजा होर जनता सब बड़े हैरान थे जे ऐ नट केहूरी विद्या जाणा आ । राजे तिसो खूब धन दिया । कन्ने इस इच्छा प्रकट कित्ती जे सै तिसा विद्या जो जाणना चाहू । नटराजे जो दस्या जे हउंतां इसा तुसां जो तेंमा जो बिदस्सी नी सककदा काह जे मेरे गुरू रीआ तरफा ते मिजो इसरी इजाजत नी ई पर जे तुसे जाणना ही चाहें तां हिमानय रे पहाड़ां च फलाणीया जगा मेरा गुरु रहूया । तिसते जाई के तुसे इसा विद्या रा ज्ञान हासिल कर सकाए ।

राजे दिला च पक्की ठाणी लई जे एह बिद्या जां मन्त्र जरूर सिखणा । तिने इस करी के जे जंगलां च जाणे पौणा, तिने अपने नाई जो सोगी लया होर नटा रे गुरू ला जो चली पया । जादे-जादे स्यो नटा रे गुरू ले जाई पुज्जे । राजे प्रणाम कित्या होर अपने श्रीगे रा मकसद दस्त्या । गुरुए राजे जो सै मन्त्र सिखालने रा वायदा कित्या ।

राती तांजे नाई सई जां था तां गुरु राजे जो मन्त्र सिखालां था । नाई असल बिच मीणे रा बहाना करां था होर जाहणी जो ई घुराहुए पई जां था कने रह्या था जागदा । सै बी राजे सोगी मन्त्रा जो, तिहां जे गुरु दस्तदा जां था, पूरा कठस्य करदा जां था । राजे सोगी-सोगी ई तिने बी पूरा मन्त्र सिखी लया पर इसरा नां ई राजे जो पता था होर नां ई गुरू जो । जिस बगत गुरुए राजे जो पूरा मन्त्र सिखालीत्या तां राजे गुरु जो गुरदछणा, दिस्ती होर नाई जो सोगी लई के वापिस अपनीआं राजधानियां जो चली पया ।

रस्ने च नाई रे दिला च बेईमानी पैदा हुई गई जे इतना मन्त्र मिस्री के बी जे सै नाई रा नाई री रही जाओ तां सै नाईए रे घरा जम्मा ई कहजो आ । तिने राजे जो सलाह दिस्ती जे महाराज, तुम मंत्र तां लया पर दूसरी परीछा तां कित्ती ई नी—हुई सकाह, जे कोई कमी रही गई हो तां हल्ली बी वापिस हटी के गुरू ते पूरी कित्या जाई मक्काई—फेरी राजधानियां ते वापिस श्रीणा मुस्किल आ । राजे रीया बी एह गल्ल समझा पई गई । राजे हथियार तां हमेशा ई सोगी रखां थे । राजे इक तोता इकी डाला पर बंठी रा देख्या । बन्दूका कने तिस्रो मारया, अपनी आत्मा अपने शरीरा ते कहडी होर तोते रे शरीरा च प्रवेश करीती । बस एही नाई जो मौका था । तिने छट मंत्र पढ़या, अपनी आत्मा कड़ी होर राजे रे शरीरा च दाखिल कराई ती । राजा, तोते रे रूपा च फमी हुण पच्छताणे लया जे भई नाई घोखा करी गया पर हुण सै करी क्या सकां था । तिमले इक चारा था जे भई नाई रे शरीरा च बड़ी जाओ पर तिमरे बणाए तिने तोता बणी के रहणा ई ठीक समझया । राजा बणी के नाइए तिस तोते जो मारजे जां पकड़ने री कोमस कित्ती पर तोते रे रूपा च राजा सब कुछ समझी गया होर छट उड़ी के इकी तोतेयां रे डारा च बड़ी गया ।

नाई वापिस राजधानिया च पुज्जी गया । भाई के तिने दस्तिया जे नाई मरी गईरा कने राज करना शुरू करीत्या । कन्ने ई तिने एह डिंडारा पिटवाईत्या जे तोते फसला जो बर्बाद कराए—इस करी के सारे राजा च इहना जो मारया जाओ—हर आदमी सै जे ज्यूदा तोता ल्याहोंगा तिस्रो पंच रुपइये इनाम मिलणा हार से जे मारी के तोता ल्याहोंगा, तिस्रो हर तोते रे तिन रुपइये मिलणे । लोग ज्यूदे होर मुईरे तोते धड़ाधड़ ल्याई के राजे से पेज करने लगे ।

तोते रे छीहड़े च राजे जो बी पता लगी गया जे तिने बेईमानी हुण तोते मरुआणे शुरू करीतरे । इस करी के सै इकी सहकारा रे घरा चली गया । सहकारा जो तिने बोल्यो जे तुह किसी बी लालचा च मित्रो किसी रे हया दिख्या बेदा कने

हुं जो तुंह चाँहगा, सँ कम्म करहगा । सहकारे सोच्या जे एह कोई समझदार तोता था । इस करीके तिनै तिस्सो अपने घरा अन्दर रखी लया । तोता सहकारा री फसला च इमदाद करने लग्या । इकी फगला जो भुआणे ने बाद तोते सहकारा ने बीज भुआया होर घा री राख कराई के खेता च सट्टाई दिनी । सहकार मोचो बी जे एह तोता कराया क्या कराहं । पर फेरी बी तिनै तेहड़ा ई करी दित्या । थोड़यां दिनां बाद मानमगेवरा ने राजहंस आए, तिहने राख बदली, दाणे खाई लै कने बदन च मोती उत्थी मट्टी दिते । हुण तोते सहकारा जो तिसा राखा जो धोणे जो बोल्या । सहकारे राख धोई तां तिसा च मोती मिल्णे लगे । सहकारा ने मोतियां रे ढेर लगी गए । हुण तां सहकार तोते री मगंद नी खाओ ।

नाई राजा बी उत्थका हुण राजा ने प्रमादा च अपणिया थादिया रा इन्तजाम करने लगया तिनै इकी राजे री लइकी अप्पू जो बगी लई । तोने जो बी दमा गल्लां रा पना लगी गया । तिनै सहकारा जो समझाया जे तं मित्रो फलाणे राजे जो एह बोली के जे एह कीमती होर समझदार तोता था, बेची दे होर तिसो दस्मणा जे इम तोते देउआ बी काफी अच्छी तरह तें पढाई देणी । मै राजा स्यों ई था, मै जे नाटए राजे रा मोहरा बणने वाला था कने देउआ स्यों ई थी, मै जे राणी बणनी थी ।

साहकारे तोते ने गलाणे रे मुताबिक तिस्सो तिस राजे जो बेची दिच्या । हुण तोता देउआ जो पढाणे लग्या । देउआ क्या तां राजा क्या तोते ने बड़े खुश हुए । तोता देउआ जो कई किस्मा रे ज्ञान जां मंत्र पढांदा रह्या ।

उत्थका देउआ रा व्याह बी आया करां था, तोने तिसा जो एक अच्छी औरत, एक अच्छी बहू, एक अच्छी मां आदि बणने वारे च बी बड़ा कुछ ज्ञान करवाया । तिहां तिहां जे व्याह रे दिन नेडे आदे गए, तोते देउआ पर अपना ज्यादा ते ज्यादा प्रभाव जमाणा शुरू करील्या । देउआ तोते रीआ बुद्धिमनियां होर जाना ते इतनी प्रभावित हुई जे हुण मै तोते री सलाह लै बिना इक कदम बी ना चलो । तोते जो बी पुण विमुक्तम हुई गया जे हुण मै तिसा पर पूरी तरह ते हावी था ।

व्याह रे दिन नजदीक आई गए । इक दिन व्याह रा बी आई गया । नाई राजा बड़ीआ धमा धामा ने बगन लई के देउआ जो व्याहने जो पुजो गया । बराती रे बड़े आदर सत्कार हुए । नाई री तां हालत ई बदली गई री थी काहू जे मै राजा बणी चुकी रा था । व्याह वाले दिन तोते देउआ जो कक्षा च ई कुछ गल्लां समझाईयां होर तिसा जो तिहना पर अमल करने जो बोल्या । देउए तिहनां पर अमल करने रा बायदा कित्या ।

व्याह रम्मा रूआजां रे मुताबिक पूरा हुणे लग्या । बाकी सब कमकार होर लगचार हुई गए । जिस बगल लगना रा टैम आया तां देउए जिहां जे तोते

समझाई रा था, बोल्या, “लग्न लगाणे ते पहले मेरी एक शर्त ई । राजा लग्न तांही लगाई सकांह जे स पहले तिसा शर्ता जो पूरा करो । शर्त एही जे मेरे ले इक बकरा आ पहले इम बकरे जो मारना, फेरी इस्सो ज्यूदा करना । जे तां राजा एह कम्म करी सको तां माह इसने लग्न लगाणे नहीं तां नी । ” सारे बराती होर बाकी दुनिया हैरान हुई गई जे एहड़ा किहां हुई सकांह । पर राजे बोल्या जे मिजो एह शर्त मंजूर ई । तिने बकरा मंगुआई लया । राजे पहले तिस बकरे जो गला घुट्टी के मारया होर फेरी मन्त्रां रे जरिए अपना शरीर छड़ी के तिसरे शरीरा च बड़ी गया । तांता मौका देव्या ई करा था, तिने शट अपने प्राण कडे होर अपने पुराणे राजे रे शरीरा च घुसी गया । नाई सब कुछ समझी गया होर बकरे रे शरीरा च पई भोगा मारो होर पच्छताओ । पर हुण क्या हुई सकां था—तिमरी अपनी करनी ।

चलदी बार राजे सै बकरा की दाजा च लई लया तिसरो महलां रे बाहर बहारी ता होर हुकम किल्या जे हर औदा जांदा आदमी तिस बकरे दो जुते री मारो । जुने रीआं चोटां ने ई बकरे रे पानी नाई रे प्राण निकली गए । फेरी राजे देउआ कने होरमी लोगां जो मारी कहाणी दस्मो । इहां राजे नाई ते बदला लया होर फेरी सुखा कने राज करने लग्या ।

#### शब्द

#### अर्थ

कोमल	कोशिल
मंडी रा-	लनपथ
मन्त्री	माने
जम्मया	पैदा हुआ
सौगी सौगी	साथ साथ
सगंद	कम्म
नेट्टे	निकट
बसुआस	विश्वास
ज्यूदा	जीवित

## लालची मन्त्री होर नाई

—देवराज शर्मा

किसी जमाने री गल्ल ई, इकी गांधीआं च इक घमार रह्यां था । तिमरे बाल-बच्चा वी कोई नी था । पर किस्मत वी बेचारे री एहड़ी थी जे नै चहे कितने ही भांडे-बर्तन बणांदा पर तिमो तिहनां जो बेची के मंज्रा गुजारे जोगी ई पैसे बणा थे ।

आखिर तिने एक दिन सोच्या जे चलो इम शहरा च ई थायद तिमो बरकत नो हुंदी हुंगी, इम करी के किमी दुज्जे शहरा च जाई के ई बर्तन बेचांह । तिने बर्तनां री पंड बहन्नी होर दुह दिना री रोटी गटो लई के चली पया । रस्ते च इक जंगल आंधीआ था । तिम जंगला अग लगो री थी । मारे जीव जन्तु जंगला ते बाहरा जो नटया करां थे पर आबादीआ च वी तिहनां जो लोगां ते डर लगां था । जंगला ते थोड़ी दूर इकी बाई रे किनारे घमारे भांडे तुआरे कने आराम करने बैठी गया । आराम करी के तिने फेरी भांडेयां री पंड चक्की होर रस्ते चली पया । जांदा जांदा ता जे सै कुछ दूर जाही रहया तां तिमो आवाज आई जे तुह मिजो उत्थी ई छुड़ी आंधो तित्या जे नै मिजो चक्कया था नही तां मांह, तुह खाई लैणा । घमार अगे देखो-पिछे देखो पर तिमो कोई पता नी चलो जे एह आवाज कुत्या रे आया करां ई । सै थोड़ी देर खहड़ी के फेरी चली पया पर अगे जाई के तिमो फेरी सै ई आवाज आई । तिने भी अगे-पिछे देख्या पर फेरी कोई पता नी चल्या होर सै चली पया । थोड़ी देराते बाद तिसो फेरी सै ई आवाज सुहणी कने बोल्या जे हुण तरबाच ई होर जे हुण वी सै अगे चलदा रह्या तां मांह, खाई देणा । घमार बड़ा हैरान-परेशान हुआ जे गल्ल क्या ई कने तिमरी बदकिस्मती तिसरा पिच्छा ई नी छड डया करदी । तिने भांडेयां री पंड सिरा पर ते तुआरी होर सिरा पर हत्ब रखी के बैठी गया जे गल्ल क्या ई । इतनियां देरा जो इकी घडे बिचा ते काला नाथ निकल्या होर घमारा सामणे लड़ी गया । घमार बड़ा भारी डर्या पर नागे तिसो जे डरो नी कने हऊं तिज्जो कुछ नी बोलदा कांह जे तिने तिमो जंगला रीआ अगी ते बचाईरा । नागे तिमो दस्त्या जे हऊं बासुकी नागा रा पुतर आ । हऊं बिना बुलाए ई मात लोका रीआ सैरा जो निकली आया था । इत्थी जंगला च अगी च फसी गया । तित्या जे निकल्या तां बस्तिया च लोकां मिजो मारी देणा था । तेरे च मिजो गरण मिली । इस करी के तुह मेरी जान बचाणे वाला आ होर तेरा एहसान हऊं कदी वी नी भूली सकदा । पर तुह हुण एहड़ा कर जे मिजो तित्या ते जे बाई नेडे ते तैं चक्कया था, तिसते अगे इक तलाओ आ, तित्थी छडडी आंधो । तेरी बड़ी मेहरबानी ई ।' घमारे सोच्या जे एह तां मौत ई । चार पैसे कमाणे रे लालचा रा दुज्जे शहरा जो चल्या था पर किस्मत इनी आ, इम करी के वापस चलां होर इसो उत्थी छुड़ी आंधोह ।

तिने फेरी बर्तना रा बोझा चक्कया, नाग घड़े च भरया होर तिस तलाओझा से पुजार्द ता तित्थी जे नागे बोल्या । नाग बड़ा खुश हुआ । तिने घमारा जो बोल्या, "तैं मेरी जान बचाई री । इस करी के चल तिज्जो हऊं अपणे कबीले कने मलांहा तुंह हखीं मिट्टी लयां । तित्थी जे हऊं बोल्हया, तित्थी हखीं खोहल्यां । तिज्जो बड़े बड़े नाग कने सपं नजर आओणे, तु डरदा दिख्यो । फेरी मेरे पिते बामुकी नागा भानस गंध लयादे ओणा-तिमते वी तु दिख्यो डरदा । तिसकने मांहमपूँ गल-बात करनी । मेरी गल्ल बात करने ते बाद तिम तुह पर बड़े खुश हुणा होर तिज्जो तिस दो बार वचन मंगणे जो बोलणा । पहलिए बारिए तां तुह बोल्यां जे महाराज दी कृपा ई कने मिजो कुछ नी चाहीदा पर तांजे दुज्जी बार फेरी बोलणा, तां तु पक्का वचन लया होर तिसने तिसरीओ चारपाइया ने बहजी रीओ कुत्तिया जो मंगी लयां । तिसा कुत्तिया तेरे सांरे दुख दरिद दूर करी देण । फेरी हऊं तिज्जो कने कुत्तिया जो दत्थी ई पुजार्द देहगा ।

घमार तां सोचो जे मेरी जान इहां ई छुटी जांदी तां खरी गल्ल थी पर नाग तां तिसो अपनी मोत नजर आओझां थी । तिसरा गलाण मै नी मोड़ी सकदा था । तिने हखीं बन्द किती, नागा रीओ पिट्टी पर बैठया होर तिस सौगी पताल लोका च उतरी गया । तित्थी सै सपं ई सपं देखो । सारे सपं तिस नागा ने आई के मिर झुकाओ । आखीर बिच फण फलाई के इक बड़ा भारी नाग आया । तिहो देखी के घमारा जो लगाणे वाला नाग बी खड़ा हुई गया होर हत्थां जोड़ी के बिगती करने लग्या-‘महाराज हऊं मात लोका च मया था-तित्थी अगी च फसी गया पर इने घमारे मेरी जान बचाई । इसरी जान बख्शी दिती जाओ कने इसो इनाम दित्या जाओ । एह नी मिल्या हुंदा तां महाराज मै मंगी रं हुणा था ।

अपणे पुतरा री गल्ल-बात मुणी के बामुकी नाग बड़ा खुश हुआ कने घमारा जो बोलणे लग्या जे तु जो वर मंगणा, मै मंग होर मां ई पूरा करना । घमारे बोल्या जे महाराज मिजो तुमां रे दरसन हुई गे, एही सब कुछ आ कने इहां मिजो किसी चीजा री जरूरत नी । बामुकी फेरी खुश हुई के बोल्या जे कुछ न कुछ मंग । तां घमारे बोल्या जे महाराज पहले वचन देयो जे मेरिया मंगी रीओ चीजा जो देणे ते मुकरहणे नी । बामुकिए सोच्या जे मुआ धन दोलत मंगहगा, सै मै सब कुछ देई देणा । इस करी के तिने वचन देईता । घमारे, तिहां जे दस्तीरा था, नागा ते कुत्ती मंगी ली । नागा रे होश गुम हुई गे कांह जे कुत्ती तिसरी राणी पदमनी थी । पर वचन तां सै देई चुकी रा था । इस करी के तिने कुत्ती घमार रे हुआले करी दिती । घमारा जो तां कुत्तिया रे बारे च कुछ भी मालूम नी था-इस करी के तिने सोच्या जे फायदे रे बजाए होर इक जानवर पालने पोणा । अपणा तां गुजारा नी हुंदा होर हुण सै वी पालने पोणी पर सपां जो देखी के सै तित्था ते फटाफट निकलना चाहो । तिने कुत्ती पकड़ी होर नागा रीओ पिट्टी पर बैठी के तलाओझा ते बाहर पुच्छी गया । नागे तिसो बोल्या जे सै कुत्तिया जो संहानी के रखे होर जे कदी किसी मुसीबना च फसो तां तिसो याद करी लो ।



घमारे कुत्तीया रे गला रस्सी पाई अपणे वर्तना रा बोझा चक्क्या होर घरा जो चली पया । घरे रूखी-मुखी रोटी बणाई—इक अप्पू खाहदी होर इक कुत्तिया जो खुद्याई दित्ती । हुंजे दिन सबेरे ई सै कुत्तिया जो दस्सी के शहरा च भांडे बेचणे चली गया । पर अज्ज तिस्रो दुगणा मुनाफा हुमा । सै खुशी हुई के घरे आया । आगे पुज्जी के तिने क्या देख्या जे भई दो थाल सजी रे—तिहनां च कई किम्मां रे व्यंजन सजी रे । तिने इक थाल कुत्तिया जो देईता कने इक अप्पू खाईला । एही प्रोग्राम कइयां दिनां तक चलदा रेया ।

इक दिन घमारे तां जे भांडे बेची के आया तां अपणियां झोंपड़िया रीमा जग तिगने इक स्वर्ग महल बणी रा देख्या । झोंपड़िया रा कोई नाश्रों नशाण नी मिल्या । मै बड़ी देर देखदा रह्या पर तांजे तिसो होर कुछ नी नजर आया तां सै मिथा महला अन्दर बही गया । कुछ कमरे टप्पणे ने बाद तिसो अपनी झोंपड़ी सुधी । एको किनारे खा कुत्ती तिहांई बज्जी री थी होर पहले साही ई खाणे रे थाल सजी रे थे । तिने होर खाणा खाहदया होर फेरी मैहसई गया । एह मिलमिला की कई दिन चलदा रह्या । घमारा रीमा समझा कोई गल्ल नी आओ । कुछ दिन तां मै मोचदा रइया जे शायद नाग आई के तिसो खाणा छड़ी जांदा हुंगा पर इक दिन तिने इमा गल्ला री तमल्लो ई करनी चाही । तिने कुत्तिया जो बोल्या जे मै भांडे बेचणे शहरा जो चल्या पर असल विच सै तित्थी ई महला अंदर छपी रा रह्या । कुछ देरा बाद तिने क्या देख्या जे भई कुत्ती खंडनिया ते छट्टी, तिने अपना कुत्तिया रा छौहड़ा बदल्या होर मुन्दर नार बन्नी के स्वर्णी महला च खाणा बनावे लमी गी । खाणा बणाई के तिने दुह थालियां च पाया होर झोंपड़िया च ल्याई के रखी दित्या । इननिया देग जो घमार अट अन्दर बइयां । तिने तिसा रा कुत्तिया वाला छौहड़ा छुपाई लया । हुण पदमनिया जो नारा रे रूपा च तिसरे साहमणे ओणा पया । तिने निमो फेरी दम्मी ता जे इहां सै पदमणी ई होर अज्जा ते बाद मै तिसरी जनाना ई । घमार बड़ा खुशी हुमा । पदमनिया रे बोलणे ते तिने झोंपड़ी चकी ती होर हुण यों स्वर्णी महला च रहणे नगे । घमार अपना कम की करदा रह्या होर ऐस बी ।

पुराणे जमाने च राजेयां रे राज हुमां थे । इक दिन तिसा रियास्ती रे राजे रां वजीर कने नाई घमारा रे महलां रिए कित्थी गुजरे । महला जो देखी के तिहना रे होश ई गुम हुई गए । हल्लो स्यो महला जो ई देख्या करा थे कि तिहनां री नजर चबारे पर पई । तित्थी तिहनें बड़ी ई मुन्दर नार देखी तिसा रा मुंह जे सूरज साही चमक्या करां था होर सिरा रे बाल स्यूने साही । तिहने तांजे पता कित्या तां पता चल्या जे एह महल घमारा रा आ कने मै जनाना बी घमारा री ई । नाईए वजीरा जो सलाह दित्ती जे राजे जो इस महला होर जनाना रे बारे च दम्या जाओ । जे एह राजे री राणी बणी जाओ होर एह महल राजे रा हुई जाओ तां तिस असां जो बड़ी भारी धन-दौलत देणी । वजीरा रीमा बी एह गल्ल समझा आईगी । तिने बी बोल्या जे एह गल्ल ठीक ई । स्यो दोनो जणे राजे ले गए कने तिसो सारी गल्ल बात दस्सी । तिहने बोल्या जे घमारा जो मारने रा इन्तजाम हुई जाओ तां मै सब कुछ राजे रा हुई जाणा । राजा पहले तां इसा गल्ला जो मओ ई नी पर तां जे तिन्हे

तिसो मजबूर ई करीता तां राजा बी मन्नी गया । नाइए सलाह दिसी जे घमारा त सुआया मण पक्के मोती मंगुआए जाओ होर मोती तिसते ल्याई नी हूण कने फेरी तिसो फांसी देई देणी ।

राजे घमार सदाया होर तिमो बोल्या जे सै सुआया मण मोती नाई के खजाने च देयो नही ता तिसो फांसी दित्या जाणी । घमारे बोल्या जे सै इसा गल्ला रा भगले कल जबाब देहंगा । सै घरे आया होर झिखिया मंजोलिया पई गया जे मरने री बारी आई गई । जान नमाणी बड़ी प्यारी हुआ ई । पदमणिए तिसते तिसरे देरी रा कारण पुच्छ्या । तिने सब कुछ तिसा जो दस्ती दित्या । तिसे बोल्या जे कल सै राजे ले जाओ होर बोली जे भिजो इस कम्मा रे खातर तिन खच्चरा धना री भरी दिसी जाओ कने कला करने जो तिना महीनयां री मोहलत दिसी जाओ ।

घमार दुज्जे दिन राजे ले गया होर तिमले तेहड़ा ई बोल्या तेहड़ा रे पदमणिए समझाई रा था । राजे तिसो तिन खच्चरा धनां रीआं देहती होर मोती कठे करने जो तिना महीनयां री मोहलत देईती । पदमणिए धनां रीआं खच्चरां अपने महला रीआं कुषिया सट्टी दित्तियां कने खच्चरा चुगणे जंगला खा जो छट्टी दित्तियां । तिहां जे दिन बितते गए, नाई कने वजीर खुश हूण लगे जे घमारा री मोत ओणे लगी कने भसां रे घर दोलती कने भरी जाण । तिनां महीनयां जो तांजे दो कर दिन रहे तां घमारा रे बी प्राण खुशक हूण लगे होर सै पदमणिया जो बोलेण लया जे सै मोतियां रा इंतजाम करी नहीं तां तिमरी मोत आईगी । तांजे सै बड़ा ई घबराई गया तां पदमणिए तिसो बोल्या जे सै हकीं मिट्टी के खड़ा हुई जाओ, तिसा कित्थे ते मोती सट्टाण पर तां जे सुआया मण हुई जाओ, सै बस करी देयो । तिने तिहांई कित्तिया । पदमणी बिजली बणी ढेर मोतियां री वर्षा करने लगी । पर घमार बम नी करो । फेरी तिसे इक मोती तिसरे सिरा पर सट्टया । तां तिने बस कित्ती होर हकीं खोहूती । पदमणी अपने असली रूपा च आई गई । घमारे जाई के जंगला ते खच्चरा लपटियां होर तिन खच्चरा मोतियां री भरी के राजे ले मोहलती रे आखरी दिन पेश करी तियां ।

वजीर कने नाई बड़े निराश हुए । हुण तिहूने राजे जो घमारा ते शेरनियां रा सुआया मण दुब मंगुआणे री सलाहे दिसी कांह जे भई सै शेरनियां खाई लैणा । राजे घमारा जो सदाई के एक फरमाइश पाई ती । घमारे सोच्या जे पहले तां गेड़ा ते बची गया था पर हुण बचणा मुश्किल आ । पर पदमणिया रीआ गलाहीते तिने सै गल्ल बी मन्नी ली होर तिन खच्चरां फेरी धनां रीआं लई लइयां कने इकी महीने री मोहलत मंगी ।

पदमणिए घमारा जो पंज रंग बरंगे धागे दिते होर समझाया जे इहनां जो लई के सैह जंगला च चली जाओ । पंजां शेरनियां दोड़ियां खादियां तिसले पुज्जणा । तुह तिहनां ते दूध मंगणा । तिहना पुच्छणा जे भई तुह अप्पू दुहणा कि अम ई दुही देइए । तुह बोलणा जे तुम ई दुही के देई देओआ । घमारे तेहड़ा ई कित्या होर शेरनिया रा दुध बी खच्चरा पर लई के मोहलती वाले दिन राजे ले पुच्चाईता ।

वजीर कने नाई फेरी बड़े निगण हुए । पर तिहूनें दिल नी छुड़या । हुण तिहू न एक एहड़ी स्कीम बणाई निमारे मुताबिक जे घमार कदी बी ज्यूंदा नी रह्यो सकदा था । तिहूने राजे जो मल्ला दित्ती जे घमार कगामानी आदमी आ । इसी मुर्गा च भेजया जाओ तांजे एह नुसां रे बुजुर्गों रा मुखसांद त्प्याई के देयो । इमते तूमां रेयो बुजुर्गों की खुश हुई जाणा । राजे जो एह गल्ल बड़ी पसंद आई । निने फट घमारा जो बलाया होर बोल्या जे कन बारह बजे मल्ला रेयां लोणां डक डक लकड़ी न्याई के चिना चिनी होर तिज्जो मांह् अपने बाप-दादे रा मुखसांद न्याओणे मुर्गा च भेजणा । तूहं त्यार रहा । इहां तां घमारा जो पदमणिया ने मल्लाह लैणे रा मौका मिली जा था पर अज तां राजे रा हुक्म था । घमारा जो पिम्सू पई गए जे हुण तां मौत आई ई गई । मै गेंदा रड़ांदा घरे पुज्जया । पदमणिण निमने मारी गल्ल बात पुच्छी होर बोल्या जे एह तां गल्ल ई कोई नी बबराने री कोई जरूरत नी । तिमरे जिमा जगा ने, तित्थी जे चिना चनीणी थी, अपने मल्ला च रातों रात चूहे कठे करी के एक सुरंग निकल-बाई नी । घमारा जो बोल्या जे भई जिस बगन चिना जो अग लगणी, इस बगन तूं सुरंगा रीण मल्ला जो निकली आयां ।

दुज्जे दिन ठीक बारह बजे घमारा जो चिना च चिनी के अग लगुआई दित्ती गई । घमार सुरंगा हीण निकली के अपने मल्ला पुज्जी गया । इस कमा रे खातर घमारे छेयां महीनयां री मोहनन मंगी री थी जे तिम छेयां महीनयां ने बाद मुर्गने बापिय ओणा । तांजे चिना री राख बणी गई तां वजीरा कने नाटण, रीआ खुशिया रा ठिकाणा नी रहया जे हुण स्यो अपनीआ तरकीबा च कामयाब हुई गए । पर अपना इनाम हासिल करने जो हल्वी तिहनां जो छे महीने इन्तजार करने पौणा था ।

उत्थका पदमणिण घमारा जो छुपाई के अन्दर रखी रख्या । तिमरे नखून कने बालु रखवाने शुरू करी दित्ते । छेयां महीनयां बाद तिमरे नांह कने बाल लम्बे-लम्बेहुई गए । तिमरी अन्दर रही के गल्ल ई बदली गई । पदमणी एक तां ममझी गई री थी जे एह मारी शरारत वजीरा कने नाई री ई हई । जिस दिन छे महीने पूरे हुए, तिमरे घमारा जो राजे ले जाणे जो त्यार कित्या होर समझाया—'राजे ले तूह बोल्यां जे भई तेरे बाप, दादा, पड़दादा, लकड़दादा बगैरा सब मुर्गा च कठे ए कने बड़े सुखा कने रहया करण । जिस बगन में उत्थी तूमां रा मुखसांद नाई के उत्थी पुज्जया तां स्यो बड़े खुश हुए । छेयां महीनयां तक महाराज में मौजां ई मौजां कितियां । पर महाराज तिहूना जो हुण चीजा री बड़ी तंगी ई । एक तां तिहना ले उत्थी नाई कोई नीआ । मेरे नांह बाल देखी के ई तूने अन्दाजा लगाई सकां ए जे छेयां महीनयां च मेरा ई एह हाल हुई गया तां तिहनां रा क्या हाल हुंगा । दुज्जे तिहनां ले इकी काबल वजीरा री बी तंगी ई । तिहना ले कई पेचीदे मुकद्दमे फैसला करने जो पईरे । इस करी के महाराज भिजो चलदे-चलदे जो तिहूने हुक्म कित्या था जे महाराज भई छेयां महीनयां रे खातरे तूमें अपने नाई होर वजीरा जो मटब्बरेयां जो मुर्गा च भेजी देयो ।'

६

१

एह गल्ल बात ममझी के घमार राजे ले चली गया । राजा तिसो देखी के बड़ा ई खुश हुआ जे तिसरेयां बुजुर्गों रा मुखसांद तिसले पुज्जी आया । राजे घमारा रा

बड़ा आदर सत्कार कित्ता होर इक भारी मभा बुलाई के सारीआ जनता रे साथ मणे तिसरे मुर्गा रा कने अपणे बुजुर्गा रा हाल पुच्छ्या । घमारे तिहां जे सै पदमणिण सम-भाई रा था, सारा हाल मुणार्इता होर एह बी बोलीता जे नाई कने वजीर सटब्बरे तिहने छेयां महीनयां जो बड़ी जल्दी बुलाई रे । राजे उसी वगत नाई जो कने वजीरा जो समेत बाल-बच्चे दुज्जे दिन मुर्गा च जाणे जो त्यार हूणे रा हुकम मुणार्इता । वजीर कने नाई धाड़ा मारो होर बोलो जे घन-दौलत तां दूर रही, इत्थी कुलां रा इ नाश हूणे लगया । पर पुराणे राजे अपणीआ जिदा रे बी पुरे हुमां । नाई कने वजीरे राजे री बहुथेरी मिणतां कित्ती जे सै होर नाई कने वजीर भेजी देयो । पर राजा नी मन्नया ।

राजे दुज्जे दिन सारीआ रियास्ती रीआ जनता जो इक-इक लकड़ी ल्याओणे रा होर शमसाना पर हाजिर रहणे रा हुकम दिया । दुज्जे दिन सारीआ लकड़ीआ री चिता चिणी गई । तिसा पर वजीर कने नाई समेत जनानें होर बच्चेयां बठावते कने भ्रग लगार्इ ती । स्यो सिधे मुर्गा पुज्जी गए । घमार तां छेयां महीनयां बाद हटी आया था पर तिह ना कदी बी नी हटणा था ।

नाइए होर वजीर रा छियापा खत्म करी के घमार कने पदमणी मुला कने रहणे लगे होर केरी तिहनां जो किहनिएं बी तंग नी कित्या ।

शब्द	अर्थ
घमार	कुम्हार
बन्नी	बान्धी
तुम्हारे	उतारे
मांह	मैन
कांह जे	क्योंकि
तलाओआ ते	तालाब से
सदाई के	बुला कर
पुज्जाईता	पहुंचा दिया
कित्या	किया

## पम्मा नड्डा

—रूप शर्मा

बिनासपुरा रा इतिहास बड़ा मोल्वा कने बीरता कने भरी रा। चन्देरी ने आई कने चन्देल्यां मुरम्यां इमा पहाड़ी रियास्ता जो हरा भरा किता। इक समे एड़ा बी आया तंजं कहलूरा रा बन्ना सिग्मोरा ते नदीणा तक फैली रा था। इम जो बाई पहाड़ी रियास्तां री मरदारी हासल थी। मुगल बादशाह ते अजेज सरकार इस जो बड़े अदबा कने मन्नां थी। पर हमरे इतिहासा रा असली पता रियास्ता अन्दर रखड़िया ते बाद अठ दिनां तक गुग्गे रे दिनां च गाए जादे अड़े देहें। इन्हां अड़ेयां च धलूरा रे सूरम्यां राजेयां, गणेयां, बज्जीरा ते भादर सिपाहियां रा मोल्वा बरतांत किनी रा। ए अड़े बीर रमा कने भरी रे। आवा हऊं तुमां जो पम्मे नड्डे रा वरतान्त अड़े रे आधारा ते दम्मां हा:—

पम्मा नड्डा गेहड़वी रा रैहणे वाला था। सै बड़ा मूरमा था। तिम समे धलूरा च राजा अजमेर चन्दा रा राज था। राजे पम्मे री ल्याकत देखी कने तिम जो बिनासपुरा री बज्जीरी दिती। राजा अजमेर चन्द बड़ा भादर राजा था। तिम रे समे बिनासपुरा रात दूणी दिन चौगनी उन्नतिया पर था। बिनासपुरा री प्रसिद्धिया जो दिक्खी कने हन्डूरी राजा हिम्मत सिंह बड़ा जन्दा-फकदा रैआ था। हन्डूरा (नालागढ़) रे लोक बी राजे री देखा-देखी धलूरा कने स्वार खां थे। हन्डूरी राजे री राणी बड़ी सज्ज बूझा री श्रीरत थी। तिम बड़ी चतिरियाइया कने पम्मे जो घर बुलाई कने तिम जो कल करईता। ए सारी कथा गीता रे रूपा च ईआं गाई जांदी :-

### बलासपुर सहर

ईआं पम्मा बज्जीर बणी गेआ। लोक खुग हुईणे। पर हन्डूरा रे लोक इस ते खुग नी थे। नित्थी रोज धलूरा विरह गल बानां हुन्दी थी। तिनहां मलोणां रा गढ़ चिणना मुरू करी ता। तंजे धलूरा ए खबर पुज्जी तां राजे पम्मे जो फौजा कने हन्डूरा जो राह पाणे खानर भेज्या। पम्मा मनूरड़िया जाई पुज्या। नित्थी फौजे डेरा लाया तां दुण धलूरा रे सूरम्यां हन्डूरा जो लुटणा शुरू करी ता। हन्डूरा रे लोक अपणे राजे अग्ये खड़े हुई कने आपणी बरबादिया बारे अरदास करने लग्ये। हन्डूरी राजा हिम्मत सिंह बड़ा दुखी होया। तिम जो किच्छ मनो मुझ्या करा था। सारेयां जो चुप दिक्खी कने हन्डूरी राणी बमोनी बोलणे लग्ये :-

### सई बिरिया

बमोलिया राणिया री गल्ल सुणी कने राजे तिसा री बात मन्नी लई। राणिए पम्मे जो चिट्ठी लिक्खी कने आपणे दूता रे हत्या भेजी ती। जिस समे दूत चिट्ठी नई कने पम्मे पास पुज्या तिस समय पम्मा निक्क, नांगलू ते अमरू संघबाला कने हार पासा खेत्या

करां था। दूने चिट्ठी पम्मे जो देई दित्ती। पम्मे सै पढ़ी कने लापरवाहिया कने खीसे च पाई लई। दूत नराम हुई कने हन्डूर पुज्या। तिने सारी बारदात राणिआ जो सुनाई ती। राणिए इक होर चिट्ठी भेजी:-

लिखे परवाने राणिए बसोलिए  
पम्मा हो हन्डूर सदाया।  
लिखे परवाने राणिए बसोलिए  
राय तेरिया गोदा देणा।

राणिए हुण चिट्ठिया च लिख्या भई पम्मे रिधा गोदा च मांह अपणा पुतर देई देणा। ईयां पम्मे हन्डुरा रा बजोर बी बणीं जाणा। पम्मा तालबा च आई गेम्मा:-

खुलियें तनियें पेर पताणे,  
पम्मा बड़ी हन्डूर जान्दा।  
असें आए भाइयो देई तेरे पावणे,  
बेहड़े या अन्दरोल करायां।

पम्मा चिट्ठिया जो पाई कने खूज हुई गेम्मा। सै राणी बमोनिया गे पुज्या। राणिए पम्मे जो देखी कने बोल्या "अन्दरोल तां राजपूतां ते करीदा। ब्राह्मणा ते नी करी दा। तू ब्राह्मण हा। केरी तू मांहगे कांह आया तिजो ता राजे गे जाणां चाईदा था।" इस तरह राणिए निमरा बड़ा अपमान कित्ता। पम्मा बड़ा दुखी हुईम्मा। "पर हुण गलती हुई गई री थी। जे हुण पिच्छे जांह ता धनूषियां सारी देणां। खरा ए ई कि हऊं हन्डुरी राजे ने दो बातां करी लऊं।" ईयां मोचदा पम्मा राजे रे दरबारा च खड़ा हुई गेम्मा। राजे मखोल किला-"पम्मा पता नीं बम्बा किला देणे आई गया।" पम्मे रा मुह लाल हुई गेम्मा। हऊं तां ब्राह्मण ए। किला लैणां तां तित्थी जाई कने धनूरा रे सूरमियां कने दो हत्य करी ल्या।" राजे दिक्की ल्या भई पम्मा डरने आला नी। तिने आपणे परोहता जो इशारा कित्या। परोहता हत्था च केसर कटोरी लई कने खड़ा हुई गेम्मा:-

हत्था ता लइयां भाईयो केसर कटोरी,  
बुकल लइयां तलवारां।

पम्मे केसर कटोरी देखी तां सै खूज हुई गेम्मा। पर हन्डुरीए परोहते केसर कटोरी दूर सट्टी कने छट तलवारा कने पम्मे रा कल करी ता:-

डिन परियां भाईयो केसर कटोरो,  
उच्छल परियां तलवारां।  
अखर बेहड़ेयां पम्मा नइडा मारया,  
वर बिच बबोलना मारो।

इस तरह पम्मे कने तिस सीगी भाई रे दूता रा कत्त हुई गेभा । ए खबर पुजदेयां  
पुजदेयां मनरुजड़ी पुजीगी : —

अमरु बोले सुण निक्कुया,  
निक्कु बोले सुण अमरुभा,  
हुण क्या मसर कमाणा ?  
घलेरे रा वजीर मारया,  
राजे रे भुजरे किहां जाणा ?  
कलहां नचिभां जीओ अन्वर कहलूरे  
रोहला लोक सवाया ।

खबरा कहलूर पुज्जी गी । राजे जो बोली कने कहलैभां री फीज मंगाई ली ।  
फीज लई कने घलूरी फीज हन्दुरा पर छाई गई । उमा लड़ाईया च हिम्मत ते हीरा भाई  
की लड़ने गए । हन्दूरी फीजां रे भरदार अनूप सिंह हिम्मत जो गोली मारी दिस्ती :—

लवीभां लड़ाईयां जी सुरमे सपाहिऐ, गोलिए अम्बर छाया ।  
अनूप सिंह उठवाई गोलियां मारवा हिम्मत रे तना लाई

हीरे जो तंजे पता लग्या तां मी . . . . . ।

भाईयां रे बबले भाई लंबे  
पूजेया मियां हीरा जाई  
पकड़ लगाम अनूप सिंह सटया,  
धार जही गरड़ाई  
इको तां मारे बाटा घाटा,  
इको रोपड़ सरहन्व जाई ।  
कांसिए दा जीओ लायक बेटड़ा,  
छन जणन्दी तेरी माई,  
देववासी तेरे कबीसरे जीओ,  
रखया हुण झेडा सुणाई ।

नोट:- पम्मा नड्डा राजा अजमेर चन्दा रा वजीर था । अजमेर चन्द सन् 1692 ते  
1728 सन तक कहलूरा रा राजा था ।

शब्द

अर्थ

बन्ना  
खार खां थे  
चिणना  
खीसे  
नरास

सीमा  
ईर्ष्या करते थे  
बनाना  
जेब  
निराश

## बन्दरा री चलाकी

—काशी राम

बड़ी पुराणी गल्ल ही एकी राजे रे सात पुत्र थ्ये । राजे रे पुत्र पढ़ाई-लिखाई कने जवान होई गए । राजे रा बच्चार था भई सातों लड़के एकी घरा ही भिम्माणे । केमी होरी राजा मंज एक राजा था तैसरे भी सत धीयां थी । तैस राजे रा विचार येह था भई सातों मठियां एकी घरा भिहाणी । राजे आपणे मठियां री बरी डोरी करने रे कठे आपणे भाट परोहन कने नाई सादे । जां ब्राह्मणा कने नाई धाई गए ता राजे बोलेया भई उम्र खादी सामन भाटी कने हुण जाणा मेरे टिकेयां खबारी करना । ब्राह्मणे ता नाइये खर्चा पाया ता खबारी करने चली पए । एक राज छाडेया, दजा छाडेया त्रिजे राजा मंज जाई कने पता चलेया भई उत्था रे राजे री सात धीयां ही कने राजा तिन्हां एकी ही घरा देणा चाहं । ब्राह्मणे ता नाइए जाई कने आपणे राजे री सारी गलबात राजे कने मुणाई दिती । जेस राजे री सात देइयां थी तिनै बड़ी खरी मनाई भई मठियां मणमी कने कनेय कटणे । राजे आपणे नाई ब्राह्मण कने होर कहारी-बगारी सादी कने सातां टिकेयां जो टिके भेजी ते । कड़माई पक्की होई गई । भाट-परोहते वान दच्छणा लई कने टीप-टीपडे मलाई गणी-गटी पत्री बाची, लग्न जोग पक्के करी दिते । सौहरी होई गए होरी रे होर साख बन्ध बणी गए ।

आउन्दा आउन्दा लम्बा रा घ्याड़ा भी पुजी गया । राजे रेयां राज कुमारों व्याह री पूरी तैयारी करी कने जनित्रा री तैयारी करी दिती । इन्हा भाउयां मंज सभनी ले हुल्के भाउए बोल्या भई पिच्छे भी राज पाट कल्लहे नी छडी जाणे । पिच्छे हाउं ही इत्थी रहो जाहां, कने राजे भी जनेती जाणा । चोर-चोरटू कोए पिच्छे लुट मचाई देषा ता भी बड़ी घरमा री गल्ल ही ।

जनित्र चली पई । छः भाउ बेहणा (व्याहणा) चली पए पर सातुआं रुकी गया । जनित्री जो एकी जगहा रात पई गई । सारेआं तिथी डेरा देई दित्ता । करणकार क्या हुये जे एक नाग धाई गया । नाग बोलेआ-भई राजा मिजो वचन दे । बासुकि नागें वचन लई लेए । बाद किच राजे पुच्छेया भई बासुकि नाग । तू वचनां रे बदले क्या मांगणां चाहं । बासुकि नागें बोलेया भई एजे सातुई खाली पालकी चलीरी एसा री लाड़ी मिजो देई दैयां । राजा वचन देई बैठी रा था । जनित्र दूजे घ्याड़े उस राजा मंज पुज्जी, लग्न वेदी, मक लावा, सतरवात होए । त्रिए दिन बरात वापसी पर तिथी हो पुजी गई । सातुए बेहण नागे लई लई कने छः बेहणी छः भाउ सौगी-सौगी छपणेआं डोलेआं मंज राजे रे बेहड़ेआं पुज्जी गए । सातुआं भाउ बचारा पालकी री निहाल मंज था पर ध्यागदे-ध्यागदे हाथा पात्र आया ।

एकी घ्याड़े तेसरीणं एकी भाभिणं तेस जो ठोकर मारी भई तू एहड़ा सूरमा हुंगा ता आमांरिआ बेहणी जो विआमांवा । राजे रे पुत्रा रे मना ठेस लगी तिनै घोड़ा



पीढ़ेआ कने चली पया। घोड़े रा भित्र एक बान्दर भी था से भी सौगी चला गया। रस्ते मंझ एक दरिया भी आआं था। घोड़े पाणी पित्तेश्रा ता दरयाव आचा होई गया। बान्दरे भी पाणी पित्तेश्रा ता दरयाव सारा ही मुक्का करी दित्ता। बामुकी नाग पयालपुरी मंझ तेसा मठिया (देइआ) रिया गोदा मंझ ढर्फली करी सुतिरा था। बान्दरे देई चक्की कने बाहर कड़ी दित्ती; आपु चुपचाप तेसरी जांघा दबाणे लगी गया जांघा जिकदे-जिकदे तेसजो निन्द्र आई गई। बान्दरा जो पता था भई नागा ते बचणा कठण हा। से तेष्पी कनारे बैठी कने बाण बाटदा लगी गया।

जां नाग जागेआ ता तिने कुछ होर हे देखेया। बान्दर डाला हेठ बाणा बाटदा लगी रा था। बासकि नागे पुच्छेया—भाइया बान्दरा ये क्या लगी रा नू करदा। बान्दरे बोलेआ—भई अज बड़ा भारी हिल्लण हुगा कने घर-टापरू मब कुछ रुढ़ी जाणगे। मैं रस्सी बणाई कने आपु जो इते डाला सौगी बन्ही देणा। बामुकि नागें भी बोलेआ भई मिजो भी कुछ लाज दस। बान्दरे बोलेया भई—एक गल्ल होई मक्कां ही भई तिजो भी इते डाला कने बान्ही कने बचाई सकां हा। बान्दरे से डाला कने बान्ही दित्ता कने आपु कुछ ढंग मलाई करी खिसकी कने आपणे राजे रे राजा मंझ मजे मंझ बमदे होये।

#### शब्द

#### अर्थ

भिआणे	शादी करने
घीयां	बेटियां
मठियां	लड़कियां
रबारी	विवाह प्रस्ताव
मणसी कने	दान करके
पत्नी बाची	जन्म कुण्डली देखी
जनित्रा री	बारात की
हल्के	छोटे
जनेती	बाराती
नाग	सांप
त्रिए	तीसरे
घोड़ा पीढ़ेया	तैयारी की
सौगी	साथ
ढर्फली करी	आराम से
जिकदे-जिकदे	दबाने-दबाते
हिल्लण	भूकम्प
टापरू	छोटे घर
रुढ़ी जाणे	गिर जाना

## दो ठग

—काशी राम

एकी गरीबों दो भाई रहें थे तिन्हा मंझा ले एक भाई मैहर चारी (लम्बरदारी) करा था। एक दिन तिन्हें दुज्जे भाइए जो बोलेआ—भाजवा आज मां जाणा मैहरचारिआ जो कने मां एक मैह भी खरीदी कन्ने लियाणी। से आदमी बड़ा सीधा साधा था। तिन्ने 500 रुपये मंझ एक मैह खरीदी लई। बाटा तेंसजो पंज ठग मिली गए। तिन्हें मनां मंझ सोचेआ भई मैह तां बड़ी बांकी ही। ये कोसी न कोसी तरीके जरूरी खरीदणी या लैणी। सेधो ठग तां थे ही। सेधो पांजो हेआ एकी एकी मोड़ा पर खड़ी गए। एकीं ठगे पुच्छेआ भई कितने रुपयेंआ खरीदी। से सीधा माहणू, या तिन्ने बोल्या पांजे सौए। तिन्ने बोल्या—मोया ऐसा रा फूहट हा चिट्टा, ये ता ही चार सौ रुपयें री। तिन्ने बोलेआ सच ही हा। दुज्जे बोल्या—ऐसा री ठगं (टांगें) भी भरी हीं। ये तिनां सौआं री ही। नीजे बोल्या भाई! एसां रा ता माथा भी बोला हा ऐसा रातां दो सौ रुपये ही देणा था। चौथें बोल्या—एसा रे खुर भी चिट्टे ही हेये सौ रुपये री ही। पांजुए बोल्या—भोए भरा भिजो एसा कोई दसैं रुपयें भी देन्दा ता मां तां भी नी लिआणी थी। तिन्ने पुच्छेआ—भई काहां! तिन्हे बोल्या भई मैह ही चोरी कने फुहट खादी रा गालिए तिस्सा जे एह दुहणी से एसा पैहल घस्से नमरी देणी।

तिन्ने बोल्या—जाह हो जान्दिए बनाई तू मां मंझे कां घाई। जे मेरी म्हात्मी मूहंस दुहन्दी भरी जाओ ता म्हाल कजो खरीदणी। सेह स्वर्ण कुत्थी फुकणा जिसते कान भी छिजी जाओ। फेरी बालू कुत्थी पाणा जे नाक ही नी रहो तां। तिथी ते तिन्ने सोचेआ भई ऐसा जो छड़ी ही देहां। ओ तिन्ने मैह तिथी ही छड़ी बिस्ती। घरा पुज्जा ता तेंसरे भैहड़ें (भाइए) पुच्छेआ भई ल्यांदी नी मैह। तां तिन्ने सारा हाल चाल मुनाई दिता। सारी वित-कथा सुणी कने मैहरा जो बड़ा दुख होया। तिन्ने बोल्या—भाउआ सेधो ता ठग थे। अच्छा काईनी जे मेरे घस्से चड़े ता हाउं तिन्हा री सम्हाल लेंउं।

दुज्जे घ्याड़े तिन्ने थोड़ी लई। घोड़िया जो घरा दो लाल खवाए। जान्दा जान्दा बड़ी दूर पुज्जी गया। राती जो ठगां रे मुलखा जाई रहेआ। रात बीती गई जे म्याग होवा तां घोड़िया ओ दो छट्टी मारीं तेंसैं लिह करी ती। जिहा मंझ दो लाल निकली गए। ठगें बोल्या जाह हो जान्दिए गल्ले ए ता लाल हागां ही, ए खरीदी ही लैणी। सौदा हुन्दा दुह्रें हजारें होई गया। घोड़ी थी बड़ी भार जब्बर कने जमाने भी सस्ते हूणें। घोड़ी लाल हागणें रे लालचा री खरीदी लई। ठगें तिहां जे तिन्हीं दस्ती रा था तिहां हे तेमा सोठिया री मारी पर से कुत्थी गल्ल बणनी थी। लाल हागणें री गल्ल बूठी हे थी। मैहर होरी हटी प्राया। कन्ने से चन्दरा भी था तेस जो पता था भई ठगां भी तेंस बाला जो आवण। तिथी ते तिन्ने पुवाओ घड़ी ता भई तिन्हा आउन्वेआं जो मसाला तयार रसिए।

तिन्हे दो खरगोम आन्दे तिन्हा मज्जां ले एकी जो आपणी लाड़ी बाल छुड़ी त्या कने एकी जो सोगी कहिरिया सई गया। लाड़ी जो बोली गया भई घरा जां मिजों पुच्छणा कोए आउंघे ता दस्मी देणा भई बैठो। फेरी तुध एम खरबोमा जो गलाणा भई जा तेमजो बोल भई घरा कोय प्रीहणे आइरे कने सेम्री तुम्माओं मादेआ करां हे। बारह एक बजे जो हाऊं भी आया फेरी बाकि गलबात मां आपुं करनी। तैसे तेहड़ा ही कित्ता। सै सेहड़ तैसे मयहणे पुजणे पर तिहां ही मिली ता कने तेमजो दस्मी ता भई कोए नावाकम प्रीहणे आइरे -घरा तक आई जा। सैहड़ ता मजे कने केतकी डुडीया बड़ेआ कने सैह बारह एक बजे हे दुज्जे सैहड़ लई कने पुज्जी गया। ठगां जो पैहनी गलां तां भल्ली गई। ठगिया रा ध्यान आई म्या। गुड़ा रे लालचें माक्कीं मरी ही। तिन्हें सोचेआ भई आमें बाहर ठडिया मंज रहां हे। घरा प्रीरतां जाणें रा पक्का पता नी रहन्दा कधी आउणा कधी जाणा। ता आमा भई सैहड़ खरीदी लेणे, चार ठभे चाहे करई भी देणें पघो।

तिन्हें बोल्या भई सैहड़ा सैहड़ बेची दे। सैहरें बोल्या भई सैहड़ ता मेरा बड़ा भारी कम्मा रा हां कने मारे कम्म कार एमरे हे सम्हाल रखी रे। आमे भई कह्ले माहणू हे ता आमां रा कम्म एमरे ही जिम्म चली रा। ठगें बोलेआ तिज्जो चार पैस आमां खरे खटाई जाणें कने तू सारियां अडियां छुहो दे कने एमजो बेची दे। सैहर कोए हुण जाची गया भई ठग पक्कं गाहक हे। तिन्हे बोलेया भई बेचणा ता नी था पर तुम्मे भी घट मित्र नी होए जे तुम्मां खरीदणा आ तां एकी हजार रुपये ले घट ता मुल लेणा ही नी।—

सारा मुल्ल तुल होई कन्ने सैहड़ ठगां रे पल्ले पाइता। सैहरें आपणा पल्ला पूरा कित्ता से ओ घरादेआं आद करो। एक जगाहा बाटा ठगें सैहड़ रस्मी ने मिल्ला ओ बोल ता भई घरा बोलणा भई रोटी वणाई छुहो कने थोड़ी देरा मंज आमें भी पुज्जी गए। सैहड़ ता केतकी द्वारेआं रे जेकड़ेहला मंज बड़ेआ कने ठग सांझा आपणे घरा पुज्जी गए। जो घरा पुज्जेआ भई खाणा कांह नी बणेआ ता तिन्हीं जबाब मिल्ला भई तम्हारा घरा ओणे री खबर पा थी नी फेरी खाणा किहां दणदा। ऐसा गल्ला पर हे तिहे बोल्या भई आमें ता सैहड़ समझाई कने घरा भेजी रा था। घरा खबर लगी भई सैहड़ घरा पुज्जी रा ही नी था।

ढंगा जां सिरा री बाही री पैरां मंज निकली गई। तिन्हें सोचेआ भई सैहर बड़ा ही खराब हा कने हुण आमां जिन्दा हे नी छुहणा। तिन्हां जो घरा पुजेआं तिने होर जगत घड़ी तीरी थी। तिने घरा आपणी जनाना समझाई दिती री थी भई जां जे सेओ ठग घरा पुज्जे ता तुध माहकने लड़ना पई जाणा तिन्हे आपणी लाड़ी रे गला एक खुन्ना री भरी री पोटली बान्ही ती। जां सेओ आए ता तमें चैं चैं लाई ती। सैहरें बोल्या भई रोटी कर सैहरिए घरा मित्र पुज्जे आई। हुण से होर भी ताल करदी लेंगी भई रोटी राटी मेरे ते नी बणदी। एस्सा गल्ला पर लम्बरदार सैहरिया पर गर्म होइ गया। दो चार बुरे-भले शब्द भी बोली ते। हुण तिने नेमा जो जां गाली दिती ता तैमें भी के जाहणी कने दो-चार गासां मोटी मोटी तेस्सा

जो काढ़ी ती । ऐसा गल्ला पर मैहें तलवार कड़ी भो जरा कर खुन्ना रोसा भरी रिझा पोटलीया पर रेतका मारी ता । हुण क्या था खून हे खून होई गया । ठगे बुधेभ्रा भई एमरी गई । मैरें मैहगिया तर हुण चिट्टी चादर ठवाई दित्ती । भो दो तलवारां लई कने मन्त्र बोलणा लागी गया । एमें बाढी एमें जिन्दी कित्ती । थोड़िया देरा बाद चादर ता कठी ती कने मैहरी होरी जिन्दी होई कने दुडकी ढाडकी हरन बात होई गई । जां जिन्दी होई गई ता लगी पुच्छणा भई रोटी क्या बणाणी । से खूब समझाई री थी हुण तेसें अट पट रोटी बणाई कने आपणे मैहरा भो बोलेभ्रा भई प्रीहणेभ्रा जो भुख लगी री हुंगी कने इन्हां जो रोटी खवाई देभो ।

ठगे सोच्या भई तलवारा मने ता सच ही कोई जादू जन्तर हा कने एह जरूर नीणी कने आसां री म्हात्मी भी कधी-कधी एहड़ा ही नखरा ठठरा करा ही ।

तिन्हें बोल्या भई आसां ए तलवारां जरूर खरीदणी थी पर तू देन्दा तां । मैहर बोल्या ए ता मेरा गलाया ही मनदी जे तुम्में लई जाभो ता मेरा ता कोय जीण ही नी रहैभ्रा । ठगे बोलेभ्रा भई कुछ ही आसां तलवारां जरूर लई जाणी । चाहे तू खरा मन्न चाहे बुग तिन्हें मुल्ल तुल्ल कित्ता भो दूहं हजारें सोदा तय होई गया ।

तलवारां खरीदी ठग मोधे घरा पुज्जी पण । घरा जान्देहें बड़े भाउएं आपणी लाड़ी जो बड़े रोसा कने बोल्या भई छोड़ चारें खाणा थपाई दे नहें ता एसा तलवारी कने हुण बड़ी मटघा । लाड़ी बचारी भोन भाहें बोलणा लगी फेरी निज्जो बड़ा मुखन होणा पापिया । तिन्ने रच कर जवाब मुणेंभ्रा कने तिन्ने आपणी लाड़ी बाडी ती । हुण मे मन्त्र पढ़दा लगी गया । ऐकी हाथा एक तलवार लई ऐकी दुज्जीभो भुण भुण लाई ती—एमें बाढी, एमें जिन्दी कित्ता । पर हलो से कुत्था लें हुणी थी जिन्दी भना मुहरे भी कधी जिउन्दे होण । तिन्ने गलाया भई अजें ता ये जिन्दी होया नी करदी पर पता नी क्या गल ही दुज्जे जो गल्लायो भई तू आपणी लाड़ी जो बाढ़ी करी देख । दुज्जे बाढी तेमजो भी गेह गल बीती । त्रिजें भी सेहे कम्म कित्ता चौथे भी कने पांजुण भी । जो पाजां रे घरा रा घराकड़ा होई अगेभ्रा ता हुण ऐभो बड़े सोचा बचारा मझ पई गए होर पूरा पता चली पया भई तिन्ही जो ठगी दिता रा । आपणी आपणी म्हात्मी री दम तेरहा कने कर्म धर्म करी के तेस मैहरा रे गराबां जो सेभो चली पए । तिन्हें पूरा सोच करी कने हुण तेग जो जिन्दा न छड़णे री सोची लई री थी ।

मैहरा जो पता था भई हुण किछ पवाभो करना जरूरी है भ्रा । तिने क्या कित्ता भई आपणी लाड़ी समझाई भई जे ऐभो ठग आभोषा तिन्ही दग्गी देणा भई मैहर होरी मरी गईरा कने कुणिया दा वी छड़ी रा जे तबार नी हा ता आपुं देखी सकां हे बास सिंधी लेभो एक अग्गे जे होएभ्रा भ्रा बास लग्या सिधण तिन्हां हे मैहर ठगा रा नाक कटी ता ।

तिने बोल्या ऊहू-खू—बड़ी भारी बास ही । तिने नाका पर हाथ थैया भो आपुं पिच्छे हटी गया । दुज्जे भी सोचेभ्रा भई बास सिंधी हे लउं तिने भी तेहड़ा बोल्या

ऊहूँ-खूँ-बड़ी भारी बाम ही । सरमा रे सारे तिनो भी तेहड़ा ही कित्ता । जीजें सोचेआ

भई मैहर मरी ता गई रा हुण एमजो केहड़ी का बाम पटरी जलो सिघी हे लघी । जीजे री भी सेमो हालन होई । चौथा गया चौथे भी तेहड़ा ही बोल्या ऊहूँ खूँ-बड़ी भारी बाम ही । पाजुए भी तिहां हे कित्ती ऊहूँ-खूँ-बड़ी भारी बाम ही । जां भाजुए बोल्या भई मेरा नाक बड़ो ता सारे बचारे बाहर निकली गए । तां सभनी आपणी बित-कथा सारेमां जो दस्सी ती कने आपणियां ठगिया रे फल्ला पर बचारने लसे भई ठगी नी कित्ती हुन्दी ता जरूर हे नकटे भी नी हुन्दे कने घरा जो भी नी डबोन्दे ।

शब्द	अर्थ
मैहर	भैस
कुत्थी	कहां
प्रीहणा	मेहमान
जाची गया	जान गया
हभे	पैसे
तुध	तूने
बाढी	कत्तल की
मुदरे	मरे हुए
जिउन्दे	जीवित
थैया	रखा
सिघी	मृघना
तेहड़ा	वैसा
वसूलेआ	प्राप्त किया
खुह खणदे जो खातर	दूमरां को बुराई करने से अपनी बुराई

मैहरा रे भाउ ले पांचव सी रक्थ्या ठगी रा था तिनो तिन्हां ले पांचव हजार वसूलेआ कने होर बड़ा भारी दिव दित्ता । खुह खणदे जो खाता मिल्हां हा । कधी कोमी जो बुरा नी सोचणा । बुरा करने वाले रा बुरा हे हूमां हा ।

## इक पैसे कने ब्याह

—कान्हीराम पठारिया

बड़ी पुगणी गल्ल ही । एक बूढ़ी थी । तेसा रा एक लड़का था । लड़के रा ब्याह भी होइरा था । एक घ्याड़े मन रे सन्ना मंझ पता नी क्या ज्ञान बसेआ तिनै आपणी अम्मा ते एक -ठब्बा मंगिआ । तेमरी अम्मे पुच्छेआ भई बच्चा तुघ ठब्बा कुत्पी पाणा । मट्टे बोल्या अम्मा एगल्ल कजो दसणी कने कजो पुच्छणी पर हाउं ठब्बा जो बरबाद नी गवांचा । अम्मे बोलेआ बच्चा ठब्बा ता नी हा पर तूं गरज दस्सी देओ ता चाहे केत्थीते भी लिआई कने देणा ठब्बा जरूर भिनी जांचा । आखर कार मट्टे जो दसणा पया । मट्टे बोल्या अम्मा हा ता गल्ल हामण री ही पर हुण हाऊं दस्सी हे देहां भई मां आपणे ब्याहा रा कुछ ढंग पलंग करना तिधि री तई हाऊं ठब्बा मांणा हा । मट्टे री मावे केती ना केती ता पैसा उवाड़ेआ ओ मट्टेआं देईता । मावा री ममता बुरी हुई मावां जो आपणे मट्टे रे ब्याहा रा ता बड़ा हे चाव हुआं हा ।

मट्टे जो जो पैसा मिना ता पैसा जेबा पाया ता केसी मुलखा बला ओ चलदा होया । एकी जगह जाई कने मट्टे एकी ठब्बेरा कुजु खरीदो ।

केत्थी बड़ी दूर जाईके एक बजार आया । लड़का तेथी तिनै बजारा उतर गया । तेत्थी एक हलवाई हलुआ बनाया करं था । हलवाईएँ मट्टे जो बनवाया एक कुजु खरीदा होर हलवाईएँ मट्टे जो हलुआ दित्ता अमट्टा बड़ा भारी खुण होया । मट्टा हलुआ कुजु मंझ भरी कने खान्दा खान्दा अग्गे चले गया अग्गे तेस जो एक घोवी मिना । घोबिएँ बोल्या तेरा नी क्या हा । तिनै बोल्या मेरा नी हा झकझाजा । घोबिएँ बोल्या खां क्या हा । तिनै बोल्या चलेजा अग्गे एक पीपल ओणा तेत्थी एहड़ी चीज मिलणी । घोबिएँ बोल्या मां कपड़े कम बाल छडने । मट्टे बोल्या कपड़े माह बाल हे छड़ी दे । मट्टे घोवी जो टपदे देक्या कने कपड़े पाए ता चलदा होया । बाटा एक घोड़े स्वार मिनैआ । मट्टा कुजु ले हलुआ असे भी खाणा लगीरा था । घोड़े चरणे बाले बोल्या भई मट्टेआ तू क्या खाहा । मट्टे बोल्या तिज्जो ये चीज अग्गे अग्गे आप्पु मिली जाणी । अग्गे एक पीपला रा डाल ओणा तेत्थी तुधू रुकी जाणा । तिनै बोल्या भई मां घोड़ा कोम बाल छडता । मट्टे बोल्या घोड़ा तू माह बाल छड़ी जा । घोड़े चारने बाले तेमरा नी पुच्छेआ । मट्टे नौ दस्सा मूल दित्ता । घोड़े जो चारने वाला तिया ते चली गया । मट्टे घोड़ा पाया ता चलदा होया । बाटा तेम जो एक बूढ़ी ता एक मट्टी चलदे मिलने ।

मट्टा आपणे कुजु मंझा ते हलुआ खाणा लगीरा था । बुडियें पुच्छेआ भई तू क्या लगी रा खाणा । मट्टे बोल्या बल्ले ये से चीज ही । बुडियें बोल्या थोड़ी जेह मंजो भी दे । मट्टे बोल्या हाउं नी देन्दा कने जा ओ अग्गे एक पीपल आओणा तेत्थी तुसां जो खुद

मिली जाणी । तेसँ बोल्या ता ए मट्टी केत्थी छाडणी । मट्टे बोलेआ एसा एत्थी हे रहणा दे । बुड्डिए पुच्छेआ एसा भई तेरा नौ क्या हां । मट्टे बोल्या मेरा नौ हा घरज्वाई । बुड्डो चली गई । मट्टा घोड़े पर बैठा कने मट्टी भी बटाजी ता चलदा बणेआ । धोबी आया तिन कपड़े सम्हाले ता हईनी हुण तेमजो बड़ा भारी दुख होया । धोबी कचहरियां चने गया तिन आपण कपड़ेआं गुम होणे री रपोट करी ती । तिन्हें बोल्या भई कपड़ेआं बल्ले था कुण धोविए बोल्या एक मट्टा था तिन आपणा नौ जखझाजां दसेआ । ठाणे दारें बोलेआ भई जखझाजां, ता हवा जो बोलां हे । अब क्या करें । धोबी रा झगड़ा खतम होया । फेरी तवां जो घोड़े चारने वाला पुज्जी गया भई घोड़ा चोरी चल्ली गया कने एक मट्टा था तिन आपणा नौ मूलदत्ता दसेआ था तिन हे नित्ता हुंगा । हुण ठाणे दारें बोल्या भई जां तिन नौ हे मूलदत्ता दसेआ ता क्या पता लाईए । तेसरा भी झगड़ा तिहां हे मुक्की गया । पीछे ले बुड्डो आई भई मेरी एक मट्टी थी तेसा जो एक मट्टा आपणा नौ घरज्वाई दसेआं करां था सेह लई गया । ठाणे दारें बोल्या भई जे नौ घरज्वाई दसदा था ता तेस आपणे ज्वाईं जो घरा जाइके हे टोल । बुड्डो घरा आई । सब मजे मंज्र बमंदे होय मट्टे व्याह करी लया । एहड़ा समझ-कार मट्टा था एकी दब्बे कने हे लाड़ी लई आया ।

शब्द

दब्बा

कुत्थी

गरज

केती न केती

कुज्जू

नौ

कासे बाल

छाडणी

टोल

पर्य

पैसा

कहीं

जरूरत

कहीं न कहीं

मिट्टी का बर्तन

नाम

किसके पास

छोड़नी

बूढ़

**P&SHPS—2468-A. C. L./76—6-1-77—1,000 Books.**



## सोमसो (त्रैमासिक पत्रिका)

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी के तत्वावधान में पंचतीय संस्कृति-कला एवं भाषा के विभिन्न पक्षों को उजागर, सुरक्षित तथा पोषित करने के उद्देश्य से एक त्रैमासिक पत्रिका 'सोमसो' का प्रकाशन जनवरी, 1975 से हो रहा है। पत्रिका का वार्षिक चक्र मात्र 12 रुपये है तथा यह प्रदेश के कालेजों व स्कूलों के पुस्तकालयों के लिए शिक्षा निदेशक, हि० प्र० द्वारा स्वीकृत है।

पत्रिका के अब तक के अंक भी अकादमी कार्यालय में प्राप्य हैं। संस्कृति, भाषा एवं कला के अध्ययताओं के लिये यह पत्रिका नए कीर्तिमान स्थापित करती है।

कृपया निम्न पते पर सम्पर्क स्थापित करें—

सचिव,  
हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा  
अकादमी, परीमहल,  
शिमला-171009

## हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी, परी महल शिमला-६ के प्रकाशन

### 1. पहाड़ी लोक रामायण

(प्रदेश के विभिन्न जनपदों में प्रचलित राम-कथा के रूपों का संकलन तथा आरगभित विवेचन) । 12-00

### 2. ऋतम्भरा

(प्रदेश के संस्कृत कवियों की कविताओं का हिन्दी अर्थ सहित संकलन) । 6-00

### 3. माला रे मणके

(हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध पहाड़ी कवियों की कविताओं का संकलन) । 6-00

### 4. छनाट

(संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार महाकवि भास के छः नाटकों का पहाड़ी भाषा में रूपान्तर) । 12-00

### 5. श्यामला

(प्रदेश के प्रसिद्ध हिन्दी कवियों की कविताओं का संकलन) (प्रेस में)

### 6. कथा सरवरी भाग-1

(हिमाचल प्रदेश के शिमला, सोलन, मिरमौर तथा कुल्लू जनपदों की लोक-कथाओं का संकलन) । 2-50

### 7. कथा सरवरी भाग-2

(हिमाचल प्रदेश के चम्बा, कांगड़ा, ऊना, मण्डी, हमीरपुर तथा बिलासपुर जनपदों की लोक कथाओं का संकलन) । 2-50

### 8. इन्दुकाव्यम्

(भूतपूर्व सिरमौर रियासत का संस्कृत भाषा में इतिहास) 15-00

### 9. उर्दू काव्य संकलन

(प्रदेश के उर्दू कवियों की कविताओं का संकलन) (प्रेस में)

नोट.—हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी के सभी प्रकाशन प्रदेश के पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत होते हैं ।